समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

दिसम्बर २००४ ♦ वर्ष ५४ ♦ अंक १२ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

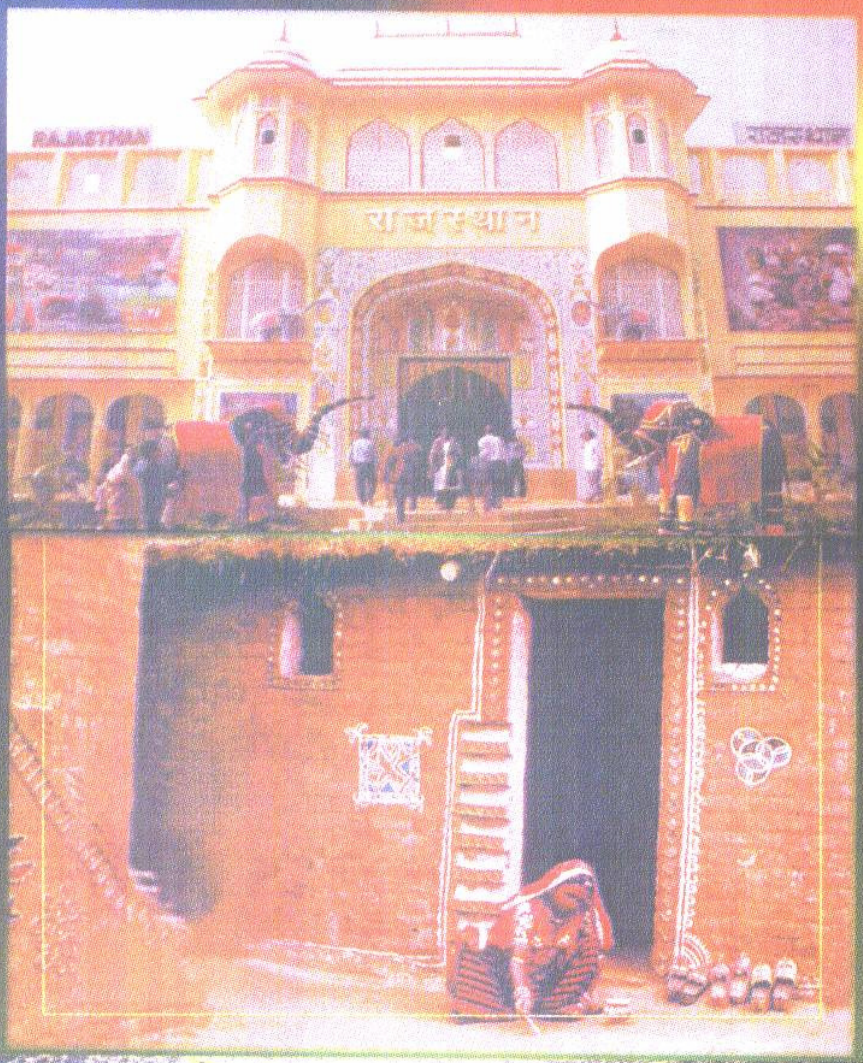

७०वां स्थापना दिवस समारोह २००४

विशेषांक सम्पादक : सीताराम शर्मा

S R RUNGTA GROUP

Insync with Nature...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer
(A Pioneer House for Minerals)

- ***IRON ORE*** *– BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *– BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *– LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA – 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 – 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

CENTRAL MINES OFFICE

BARAJAMDA – 833221, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06596- 262221/262321, Fax: 91-6596-262101;GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

BARBIL – 758035, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 276891; Telefax: 91-6767-276891

७०वां स्थापना दिवस विशेषांक २००४ में

अनुक्रमणिका	३
अतिथियों का परिचय	५
जनवाणी	६
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	७-८
सम्पादकीय / *श्री सीताराम शर्मा*	९
राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका द्वारा प्रतिवेदन	११-१६
दीपावली : ज्योति पर्व / *तारादत्त निर्विरोध*	८
सम्मेलन संस्थापक के विचार कोष से	९
चित्र दीर्घा	१७
बंगला भाषा साहित्य पुरस्कार / सूचना	१८
बदलते परिप्रेक्ष्य में मारवाड़ी समाज की भूमिका / *श्री दीपचंद नाहटा*	२०-२१
वैचारिक क्रांति का बिगुल फूंके / श्री रामअवतार पोद्दार	२१
राजस्थानी भाषा के विषय में विवेक की बात / *श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट*	२४-२७
अखिल भारतीय राजस्थानी समारोह / *प्रांतीय अध्यक्षीय चुनाव* / सूचना	२८
इतिहास के झरोखे से / *श्री बंशीलाल बाहेती*	२९-३३
धार्मिक क्रियाकलापों में धन वैभव / *श्री सत्यनारायण सिंघानिया*	३४
पूर्वी भारत में राजस्थानी भाषा / *डा. मनोहर लाल गोयल*	३५-३६
आत्मचिंतन / *डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल*	३६
जाहि विधि राखे राम... / *श्री जुगलकिशोर जैथलिया*	३७
कविता - मृग-तृष्णा / *श्री राधेश्याम शर्मा*, सुन्दरसी वधू चाहिए / *दयानंद स्वरूप*	३८
हमारी नई संस्कृति / *श्री बालकृष्ण गोयनका*	३९
कविता / नया साल आया / *श्री जयकुमार रूसवा*	४०
स्थापना दिवस नहीं संकल्प दिवस मनाये / *श्री ओमप्रकाश खंडेलवाल*	४१
भारत के तीन महान विभूतियों ने कहा...	४४-४५
सम्मेलन के राष्ट्रीय पदाधिकारी	४७-४८
सम्मेलन के विगत अधिवेशन और पदाधिकारी	४९
प्रांतीय अध्यक्ष एवं मंत्रिगण	५१
सिलचर में मारवाड़ियों पर हुए हमले का पुरजोर प्रतिवाद	५२-५३

युग पथ चरण

पूर्वोत्तर, बिहार, मध्य प्रदेश, उत्कल प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का प्रांतीय प्रतिवेदन के साथ साथ राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक की रिपोर्ट एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं युवा मंच आदि की महत्वपूर्ण रिपोर्टें

५४-६६

समाज विकास

दिसम्बर, २००४

वर्ष ५४ ● अंक १२

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ROADWINGS INTERNATIONAL PVT. LTD.

WE PROVIDE LOGISTICS SERVICES AND HIGH PRODUCTIVITY EQUIPMENTS TO PORTS AND CONCOR

HEAD OFFICE
8, CAMAC STREET
KOLKATA - 700 017
TEL. 2282-5784, 2282-5849
FAX : 033-22828760
e-mail : roadwings@vsnl.com

ZONAL OFFICE
"NIRMA PLAZA"
MAROL MAKWANA ROAD
ANDHERI (E), MUMBAI - 400 059
TEL. 28507899, 9821075128
FAX :022-28507928
e-mail : roadwingsint @vsnl.net

ROADWINGS INTERNATIONAL is a professionally managed multi-crore growing concern with vast experience in handling and transportation, having branches and agencies in important cities of India.

COURTESY : BHANI RAM SUREKA, MOB. 9830020915

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

FOODS FATS & FERTILISERS LIMITED
7TH FLOOR, FOUNTAIN PLAZA,
PANTHEON ROAD, EGMORE,
CHENNAI - 600 008.
PHONE No. : 28252705 / 28262449 / 28233091
FAX No. 044 - 28263365 / 28263022
EMAIL : chn@fff.co.in / srg@fff.co.in

OUR PRESTIGIOUS PRODUCTS

BRAND NAME	PRODUCTS
3F	GENERAL PURPOSE VANASPATI
SUPRA	IMPORTED BAKERY SHORTENING
SURABHI	BAKERY SHORTENING
BAKERSPET	BAKERY SHORTENING
BAKERS DELITE	BAKERY SHORTENING FOR PUFFS AND KHARIS
BISCREME	BAKERY SHORTENING FOR BISCUITS AND CREAM
MELLO	MARGARINE FOR CAKES AND DANISH PASTRY
GOLDEN SPREAD	MARGARINE FOR PUFFS AND KHARIS
MELLO CREME	MARGARINE FOR LAYERING AND ICING
TRIM	GENERAL PURPOSE BAKERY SHORTENING
TANOUI	REFINED RICE BRAN OIL
3F	REFINED SUNFLOWER OIL
PALM DELITE	IMPORTED RBD PALMOLEIN
PALM PYARI	REFINED PALM OIL

FACTORY
TADEPALLIGUDEM (A.P)

BRANCHES
HYDERABAD
MUMBAI
BARODA
KOLKATA
CHENNAI

DEPOTS
CALICUT
COCHIN
BANGALORE
BELLARY
VIJAYAWADA
GUNTUR
RAJAHMUNDRY
VIZAG
SHOLAPUR
BARODA
BHUBANESWAR

INTERNATIONAL OFFICES
SINGAPORE
GHANA

EDIBLE OIL SHORE TERMINALS
KAKINADA
NAGAPATTINAM

PRODUCTS - MANUFACTURED
STEARIC ACID
FATTY ACID
REFINED WAX
SPECIALITY FATS FROM MANGO, SAL AND SHEANUT
GLYCERINE
PITCH OIL

PRODUCTS - EXPORTED
MANGO PULP
RICE
GROUNDNUT
SUGAR
MAIZE
SPECIALITY FATS

श्री संतोष बागड़ोदिया

प्रधान वक्ता

सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री संतोषजी बागड़ोदिया स्व. महावीर प्रसाद एवं स्व. इंद्रावती बागड़ोदिया के सुपुत्र हैं। इनका जन्म कलकत्ता में ही हुआ। स्नातक की शिक्षा भी इन्होंने यहीं सेंट जेवियर्स कॉलेज से प्राप्त की।

अपने आरम्भिक काल से ही ये इंडियन नेशनल कांग्रेस से संयुक्त रहे। बचपन से ही इनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, कलाकारी, विज्ञान आदि के क्षेत्र में गहरी रूचि रही। इन्होंने उच्च माध्यमिक विद्यालय के संचालन के साथ-साथ अनेकों विधवा विवाह करवाये एवं गरीबों के कल्याण के लिए अनेक कार्यों को सहयोग प्रदान किया। वास्तुकला, चित्रकला के साथ-साथ पर्यटन, वन्य प्राणियों में इनकी गहन अभिरूचि देखने को मिलती है। ये गोल्फ के शौकीन हैं एवं पुस्तक प्रेमी हैं।

इन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रीक, अफ्रीका, यूरोप, मिडल ईस्ट, जापान, सिंगापुर, फिलिपिन्स, हांगकांग, कनाडा आदि देशों का भ्रमण किया हैं।

श्री बागड़ोदिया १९७५ से सक्रिय राजनीति में आये। लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों के समय ये सिक्किम, असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, त्रिपुरा, पंजाब, दिल्ली आदि में पर्यवेक्षक रहे।

१९८६ में राज्यसभा में निर्वाचित हुए, १९९२ में आल इंडिया कांग्रेस कमिटी के सदस्य बने, १९९६-९७ में इसके संयुक्त सचिव, १९९८ में पुनः राज्यसभा में निर्वाचित हुए, १९९८-९९ में उद्योग समिति के सदस्य बनें, २००० से २००४ तक कमेटी ऑन एनर्जी के सदस्य एवं कांग्रेस संसदीय पार्टी के कोषाध्यक्ष तथा ऊर्जा उपसमिति के कन्वेनर रहे। २००२ से २००४ तक कमिटि ऑन पब्लिक अकाउन्ट्स के सदस्य थे। जून २००४ में ये तीसरी बार राज्यसभा में निर्वाचित हुए। वर्तमान में श्री बागड़ोदिया जी पार्लियामेंटरी स्टैंडिंग कमिटी के चेयरमैन हैं।

महामहिम श्री बनवारीलाल जोशी

उद्घाटनकर्ता

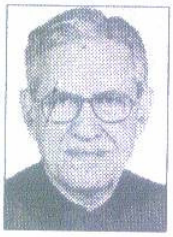

राजस्थान की माटी में जन्में श्री बनवारीलाल जोशी ने कलकत्ता के स्काटिश चर्च कालेज, लॉ कालेज में अध्ययनोपरांत १९५७ में राजस्थान में आरक्षी सेवा के रूप में अपने कैरियर की शुरूआत की। ये भारत सरकार के प्रतिनिधि नियुक्त हुए और इंटेलिजेंस ब्यूरो में इंटरपोल, जालसाजी, मादक पदार्थ सेवन, औद्योगिक सुरक्षा, संयुक्त राष्ट्र शोधन कार्य तथा युवा अपराध विषयों पर काम किये। भारतीय पुलिस जर्नल के सम्पादक के रूप में इन्होंने जर्नल के दो विशेषांक प्रकाशित किए, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. जवाहरलाल नेहरू की जीवनी पर एवं पुलिस शताब्दी पर। दोनों ही विशेषांकों ने प्रचुर प्रशंसा प्राप्त की।

श्री जोशी ने प्रधानमंत्री कार्यालय में लालबहादुर शास्त्री एवं श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ वरिष्ठ स्टाफ अधिकारी के रूप में चार वर्षों तक अपनी सेवाएं दी। इनके कार्यों की प्रधानमंत्री द्वारा काफी प्रशंसा की गयी।

श्री जोशी ने विदेश मंत्रालय में ओ.एस.डी. के पद पर मंत्रालय के मुख्यालय में, प्रथम सचिव के रूप में लंदन और इस्लामाबाद स्थित भारतीय उच्चायुक्त में तथा बतौर प्रधान न्यायालय प्रमुख वाशिंगटन डी.सी. स्थित भारतीय दूतावास में कार्य किया। कैलिफोर्निया स्थित गैर सरकारी संगठन 'फाउन्डेशन फॉर एक्सीलेंस इन्क' जो कि भारत में मेधावी और जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान कर सम्मानित करने का कार्य करता है- में भी ये कार्यकारी निदेशक रहे। श्री जोशी २००० से २००४ तक राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के सदस्य रहे, जहां इन्होंने मानवाधिकार के मुद्दों को एक नया आयाम और सार्थक विस्तार दिया।

श्री जोशी ९ जून २००४ को दिल्ली के उप राज्यपाल के पद पर आसीन हुए।

इन्होंने भारत एवं विदेशों के सुदूर क्षेत्रों का परिभ्रमण किया है। सामाजिक कार्यों में गहरी अभिरूचि के कारण ये विभिन्न समाजसेवी समूहों एवं संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

श्री रवि पोद्दार

मुख्य अतिथि

सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री रवि पोद्दार कलकत्ता के पूर्व मेयर स्वनामधन्य स्व. आनन्दीलाल पोद्दार के सुपुत्र हैं। श्री पोद्दार ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से वाणिज्य स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

उद्योग व्यवसाय में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त श्री पोद्दार का सामाजिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण अवदान रहा है। ये आनन्दीलाल पोद्दार चेरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी चेयरमैन, श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति के अध्यक्ष कलकत्ता पिंजड़ापोल सोसाइटी के समिति सदस्य, अभिनव भारती के ट्रस्टी होने के साथ-साथ अनेकों सभा-संस्थाओं, क्लबों के प्रशासन व सलाहकार समिति से संयुक्त हैं।

५५ वर्षीय श्री पोद्दार कलकत्ता में पोर्तुगल के मानद् वाणिज्य दूत हैं। ये कन्फेडरेशन आफ इंडियन इंडस्ट्री के पूर्वी क्षेत्र के डेपुटी चेयरमैन एवं वेस्ट बंगाल स्टेट काउन्सिल ऑफ स्पोर्ट्स तथा कोलकाता अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल कमेटी के सदस्य भी हैं।

अतीत में इन्होंने अनेकों चेम्बरों ट्रेड एसोसियेशन एवं सरकारी संस्थानों आदि को अध्यक्ष, चेयरमैन, सदस्य आदि के रूप में अपनी सेवाएं अर्पित की है।

जनवाणी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है।

- सम्पादक

समाज विकास सितम्बर अंक मिला। इसमें शिक्षा, साहित्य, समाज-संस्कृति, इतिहास, आधुनिक बोध से जुड़ी सूचनाएं इसके गौरव को उन्नत बनाती हैं। नवीन सोच की सचेतना इसमें द्रष्टव्य है। वस्तुत: समाज के विकास का यह एक भावात्मक स्तंभ है। आपकी साहित्य साधना स्तुत्य है तो आपकी निष्ठा अनुकरणीय है।

- डा. उदयवीर शर्मा
बिसाऊ

मैं 'समाज विकास' पत्रिका की नियमित पाठिका हूं और मुझे लगता है कि यह मारवाड़ी समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक गतिविधियों का एक दर्पण है। देश भर में फैले मारवाड़ी समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों व सड़ी-गली परम्पराओं पर आज हमें आत्मालोचन करने का एक अवसर देकर पुनर्विचार करने को बाध्य करता है, जो कि सामाजिक सुधार व समाज परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है। मैं इस पत्रिका की सामग्री से अभिभूत हूं और प्रशंसक हूं।

- डा. तारा लक्ष्मण गहलोत
जोधपुर (राजस्थान)

समाज विकास के अंक बराबर मिल रहे हैं। सारी सामग्री सराहनीय एवं अनुकरणीय है। समाज सुधार के किये जा रहे प्रयासों की भी जानकारी बराबर मिल रही है। युवा पीढ़ी का पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण हमारे लिए चिन्ता एवं चिन्तन का विषय बन गया है इसके लिए भी पत्रिका समय-समय पर आगाह कर रही है। आपकी निष्ठा, मेहनत, कर्मठता एवं समर्पित भाव के कारण समाज विकास अपने लक्ष्य सिद्धि की ओर अबाध गति से अग्रसर हो रहा है। राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए प्रवासी राजस्थानी बन्धुओं द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय है।

- लक्ष्मणदान कविया
नागौर, राजस्थान

हमारे देश में बहुत सी संस्थाएं समाज का सुधार करना चाहती हैं। लाखों रुपया खर्च भी करती हैं। समय-समय पर सम्मेलन भी करती है, मगर नीचे लिखी किसी भी समस्या का समाधान क्यों नहीं हो रहा है?

इन समस्याओं का समाधान मेरे विचार से इस प्रकार है-

१. समाज के कर्णधार समाज का सुधार दूसरों के घरों से करना चाहते हैं और अपने घरों से करें तो अच्छा हो।

२. समाज का सुधार त्याग और बलिदान से होता है मगर हमारे देश में इसका अभाव चारों तरफ नजर आता है।

३. सभी संस्थाओं के कर्णधार अपनी प्रतिष्ठा बैठाने में लगे हुए हैं। समाज से हमदर्दी हो तो बहुत ही अच्छा रहे।

- परशुराम तोदी 'पारस'

पत्रिका में सामग्री और अधिक आनी चाहिए इसे और अधिक प्रेरक बनाया जाना चाहिए। हर प्रान्त से कम से कम २ विज्ञापन समाज विकास में प्रकाशन हेतु आना चाहिए ताकि पत्रिका को और अधिक आर्थिक मजबूती प्रदान की जा सके। समाज के अविवाहित युवा-युवतियों का विवाह सम्बन्धित प्रचार के लिए एक पेज की व्यवस्था होनी चाहिए।

- अशोक काजरिया
उपमंत्री
दुर्गापुर मारवाड़ी सम्मेलन

अक्टूबर अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाशित लेख सोद्देश्यपूर्ण एवं उपयोगी लगे। पत्रिका निरन्तर उन्नति की दिशा में अग्रसर है। आशा है अतिशीघ्र यह मारवाड़ी समाज हेतु अत्यन्त उपयोगी पत्रिका सिद्ध होगी।

- अनिल परसरामपुरिया
महामंत्री, कानपुर शाखा
उत्तर प्रदेश

कई महीनों से देख रहा हूं आप समाज विकास में प्राचीन संस्मरण प्रकाशित कर रहे हैं। समाज से संबंधित एक विशिष्ट घटना के संस्मरण भी आप प्रकाशित करें। दहेज दिखावा के विरुद्ध सन् १९८५-८६ में (श्री हरिशंकरजी सिंहानिया के सभापतित्व काल में) 'सामाजिक संचेतना समिति' के नाम से पुन: इस रूढ़ी के विरुद्ध आवाज उठाई। समाज के तत्कालीन वरिष्ठ लोगों के नाम अपीलें, अखबारों में प्रकाशित की गई। कई बैठकों के पश्चात एक सरल एवं सहज आचार संहिता अखिल भारतीय समिति की बैठक में प्रस्तुत किया गया। श्री हरिशंकरजी जैसे कोट्याधीश इस प्रस्ताव के विरुद्ध नहीं गये। उपस्थित सभी सज्जन हर्षित हुए एवं इसे पारित करने में अपनी सम्मति प्रदान की। अब मारवाड़ी सम्मेलन के माध्यम से दहेज-दिखावा के विरुद्ध आंदोलन करने की किसी भी व्यक्ति में शक्ति नहीं है। मारवाड़ी सम्मेलन के सामने अपरिवर्तित प्रस्ताव पारित कर समाज सेवा की तुष्टि लेने के सिवा कोई चारा नहीं है।

- मोहनलाल चोखानी, हैदराबाद

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७०वें स्थापना दिवस की सफलता की कामना करते हुए कहना चाहूंगा कि सम्मेलन की गतिविधियां मेंतेजी लाकर व्यापक प्रवासी मारवाड़ी समाज के हितों की रक्षा की जाए एवं ऐसे योजनाओं पर काम शुरू हो जो इस समाज के गौरव को राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करें।

- सूर्यकरण सारस्वा, कोलकाता

भूल सुधार

हमें खेद है कि समाज विकास के अक्टूबर '०४ के पृष्ठ पर प्रकाशित लेख के लेखक का नाम प्रूफ रीडिंग की गलती से डा. मनोहरलाल गोयनका छप गया है। पाठकगण कृपया इसे मनोहरलाल गोयल पढ़ें।

नई बात क्या कहें ? नया हमने क्या सीखा ?

✍ मोहन लाल तुलस्यान

पाली मैंने जो आग, लगा उसको युग का जादू-टोना,
फूटती नहीं, हां जला रही चुपके उर का कोना-कोना
आंखे जो कुछ हैं देख रहीं, उनका कहना भी पाप मुझे
क्या से क्या होगा समाज, यही चिन्ता, विस्मय, सन्ताप मुझे ।।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७०वें स्थापना दिवस पर लिखने को मेरे समक्ष बहुत कुछ है। सम्मेलन का इतिहास है, उपलब्धियां हैं, स्मृतियां हैं और उन स्मृतियों के प्रतीक स्वरूप कई चेहरे हैं। पर इन विषयों में मेरा मन नहीं रमता।

मैं अतीतोन्मुखी नहीं हूं। अतीत को सदा मैंने इसलिए खंगाला है कि उसमें छिपे तात्विक कणों को चुन सकूं और उसे अपने जीवन में उपयोग करके भविष्य के लिए संदेश-स्वरूप दे सकूं। अतीत की परछाइयों में खो जाना वर्तमान को विनष्ट करना है, क्योंकि समय की तेज रफ्तार में सभ्यता का रथ कभी रूका नहीं है, और न ही रूकेगा। ज्ञान-विज्ञान ने भी समय के साथ ताल से ताल मिलाकर ही प्रगति का इतिहास लिखा है।

आज हमारे पास जो कुछ है, हमारे पूर्वजों के पास नहीं था और जो हमारी भावी पीढ़ी के पास होगा उसकी हमें कल्पना तक नहीं है। समय और आवश्यकता के अनुसार प्राथमिकताएं बदलती हैं। आवश्यकता को देखते हुए आविष्कार होते हैं, कला, संस्कृति, समाज का स्वरूप-निर्धारण होता है।

सभ्यता के विकास क्रम में परिवर्तन का होना ही सभ्यता की जीवंतता की प्रतीक है। जो सभ्यता स्थिर हो गई, परिवर्तनों को समयानुरूप नहीं स्वीकारा वह मिट जाती है।

मारवाड़ी समाज राजस्थान, हरियाणा और मालवा की परिधि से निकलकर पहले पूरे देश और फिर पूरे विश्व में फैला और सभी विषम परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाकर हर जगह अपनी जड़ें जमाने में सफल रहा और लगातार पुष्पित-पल्लवित हुआ तो यह समाज के जीवट और लचीलेपन का ही सबूत रहा है। इस समाज में परिवर्तनों को आत्मसात् कर लेने की विलक्षण क्षमता रही है और अन्य समाजों से आगे बढ़ने के पीछे इसी विलक्षणता का हाथ रहा है।

शहर से गांव तक पसरे मारवाड़ी समाज ने सृजन को अपना धर्म बनाया और संचय को अपनी प्रवृत्ति। सर्व धर्म समभाव इस समाज के लोगों का स्वभाव रहा। यही कारण था कि कहीं भी इस समाज को अधिक अवरोधों का सामना नहीं करना पड़ा।

अपनी प्रगति के साथ स्थानीय लोगों की प्रगति के लिए सचेष्ट रहने की सदाशयता ने भी समाज की प्रतिष्ठा में श्रीवृद्धि की।

धार्मिक और सामाजिक भावना सदा से इस समाज के लोगों को प्रेरित करता रहा है और इसी के प्रतीक स्वरूप धार्मिक स्थानों पर धर्मशाला, सराय, मंदिर, प्याऊ एवं विभिन्न स्थानों पर विद्यालय, महाविद्यालय, अस्पताल, चिकित्सालय का निर्माण इस समाज के लोगों ने करवाये।

वैश्विक और सामयिक चिन्तनों के अनुरूप इस समाज ने भी नये चिन्तन को ग्रहण करने में उत्सुकता दिखलाई जिससे सुधारों के मामले में यह सबसे आगे रहा। व्यापारिक होते हुए भी प्रगतिशील होने के कारण इस समाज को विशिष्ट पहचान मिली। बीसवीं शताब्दी के छठे दशक तक व्यापारिक और सामाजिक संरचना के क्षेत्र में इस समाज का कोई मुकाबला नहीं था। १९३५ में सम्मेलन की स्थापना हो चुकी थी एवं पूरे देश में सुधारवादी आन्दोलनों का नेतृत्व सम्मेलन कर रहा था। कार्यकर्त्ताओं की टोली सम्मेलन के बैनरतले एक स्वच्छ, सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित, रूढ़िहीन, प्रगतिशील समाज बनाने को उद्यत थी।

ठीक ऐसे ही समय सारी दुनिया में बदलाव की आंधी आई। यह बदलाव मानसिकता के स्तर पर था एवं इसके मूल में सामूहिकता की जगह व्यक्तिगत सुखों की प्राप्ति को अहमियत देने की भावना थी।

हालांकि यह हमारी परम्परा के विपरीत था। हमारी परंपरा संयुक्त परिवार की थी जहां मिल-जुलकर जीवन जीने का चलन था। पारिवारिक विषय बड़े-बुजुर्ग के निर्देशानुसार तय होते थे।

व्यक्तिगत विकास की अवधारणा ने सदियों की परम्परा पर कुठाराघात किया। देखते ही देखते परिवार टूटने लगे। संयुक्त रूप

से रहने के कारण व्यापार-वाणिज्य हर हमारा जो आधिपत्य था वह खत्म होने लगा। सामाजिक नेतृत्व के किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाने के दुष्परिणाम स्वरूप सामाजिक अनुशासन की उपेक्षा शुरू हुई। फटाफट अमीर बने लोगों ने अपने धन का उपयोग समाज में अपनी हैसियत बढ़ाने के लिए करना शुरू किया। नई-नई कुरीतियों को मान्यता मिली। छोटे-बड़े अवसरों को धन की प्रदर्शनी के जरिए ऐसा आडम्बरपूर्ण बनाया जाने लगा कि अन्य समाजों के सम्मुख हमारी पहचान धनपिपासु व धन दिखाऊ की हो गई।

धन की प्रधानता ने हमारे समाज को कई भागों में विभक्त कर दिया। धनविहीन लोग, हमसे कटते चले गये जो कभी सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में हमारे सहायक होते थे।

शिक्षा का प्रचार-प्रसार हमारे समाज में खूब हुआ, लेकिन संस्कार की कमी ने शिक्षा की उपादेयता को महत्वहीन बना दिया।

समाज के भविष्य पर सोचते हुए मैं इसलिए उलझ जाता हूं कि हमारा वर्तमान सुदृढ़ नहीं है। हम अपनी आंखों से समाज के अधोपतन को देख रहे हैं पर कुछ करने की स्थिति में स्वयं को नहीं पा रहे। हमारा अंत:करण हमें धिक्कार रहा है। मैं बार-बार यह सोचने को विवश होता हूं कि

मलबूस (पहनावा) खुशनुमा है मगर खोखले हैं जिस्म छिलके सजे हो जैसे फलों की दुकान पर।

एक प्रश्न जो मुझे विदीर्ण कर रहा है, वह है- क्या इस परिस्थिति के रहते हम भविष्य के स्वर्णिम होने की कल्पना कर सकते हैं? निश्चित तौर पर नहीं। क्योंकि जिस समाज का युवा अनुशासित नहीं हो, अपने परिवार, समाज के प्रति अपनी जिम्मेवारी से दूर हो, वह समाज अधिक दिनों तक अपना अस्तित्व बचाए और बनाए नहीं रख सकता।

हमारा दुर्भाग्य यह है कि हमने युवाओं का साथ खो दिया है। उन्हें अपनी संस्कृति और संस्कार में रंगने की बजाए इतना स्वतंत्र कर दिया है कि वे मिश्रित संस्कृति, और सच कहें तो विकृत संस्कृति को ही अपनी संस्कृति मानकर हमारा माखौल उड़ा रहे हैं। धार्मिकता और आध्यात्मिकता के प्रति हमारा झुकाव कभी हमारी पहचान का कारण था, लेकिन आज यही हमारे सम्मान को कलंकित कर रहा है। हम धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन से अपने को आलोकित न करके कलुषित कर रहे हैं। संचयी प्रवृत्ति को त्यागकर धन लुटाकर और वह भी व्यर्थ के कामों में। हमारे समाज के लोगों ने अपने विकास को ही अवरुद्ध कर लिया है।

ऐसे में चिन्ता स्वाभाविक है। मैं समझता हूं कि मेरी तरह और लोग भी चिन्तित हैं। अक्सर लोग अपनी चिन्ता मेरे समक्ष जाहिर करते हैं। नये सामाजिक नेतृत्व के आगे न आने से स्थिति और भी दुरूह हो गई है। तथाकथित सामाजिक नेतृत्व के चलते, जिसमें धंधेबाज लोगों की भरमार है, दिगभ्रम की स्थिति भी बनी है।

चौतरफा निराशा के इस दौर में अगर आशा की कोई किरण दिख रही है तो वह सम्मेलन के मंच से ही दिख रही है। चूंकि सम्मेलन की राष्ट्रीय पहचान है एवं विभिन्न प्रदेशों, शाखाओं में सम्मेलन के माध्यम से सामाजिक कार्य हो रहे हैं इसलिए अगर एक नये समाज की संरचना का ध्येय लेकर सम्मेलन आगे बढ़े तो उसे स्वीकृति मिलेगी बशर्ते लाभ लोभ की संकीर्णता को त्यागकर व्यापक समाज के हित में काम किया जाए। युवाओं को अपने साथ लाने के लिए नवीन अवधारणाओं को अपनाने की भी जरूरत है। युवा अग्रिम पंक्ति में आए एवं प्रौढ़ मस्तिष्क उन्हें दिशा देकर आगे बढ़ने को प्रेरित करे, यही हमारे विकास का मूलमंत्र होना चाहिए। भाग्य और भगवान के भरोसे कर्मठता का त्याग करने वाले युवाओं से मेरी अपील है कि वे अपने पूर्वजों के जीवन को देखें और उनसे प्रेरणा ग्रहण करें एवं कुछ ऐसा कर दिखाएं जो आनेवाली पीढ़ी के लिए मील का पत्थर बन जाए।●

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

के ७०वें स्थापना दिवस पर

"नये अवसर एवं नयी चुनौतियां"

विषयक गोष्ठी का उद्घाटन करेंगे

दिल्ली के उपराज्यपाल महामहिम माननीय श्री **बनवारी लालजी जोशी**

प्रधान वक्ता होंगे सांसद एवं सुप्रसिद्ध उद्योगपति **श्री संतोषजी बागड़ोदिया**

कोलकाता में पुर्तगाल के सम्माननीय वाणिज्य दूत **श्री रवि पोद्दार** मुख्य अतिथि होंगे

अध्यक्षता करेंगे सम्मेलन सभापति **श्री मोहनलाल तुलस्यान**

आप **रविवार, २६ दिसम्बर २००४** को प्रात: **१० बजे कलामन्दिर, ४८, शेक्सपीयर सरणी,** कोलकाता-१७ में सादर आमंत्रित है।

कार्यक्रम का समापन हिन्दी हास्य नाटक "**दाल भात में मूसरचंद**" के मंचन से होगा।

रामअवतार पोद्दार, राज के. पुरोहित, विधायक
संयुक्त महामंत्री

हरि प्रसाद कानोड़िया
कोषाध्यक्ष

भानीराम सुरेका
राष्ट्रीय महामंत्री

सम्मेलन की ७० वर्षों की यात्रा

कितना बदल गया है समाज

✍ सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सात दशक पूर्व जब पूर्वजों ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की १९३५ में स्थापना की थी उस समय के और आज के समाज में समानता खोजे नहीं मिलती। कितना बदल गया है समाज। लेकिन सभी बदलाव क्या शुभ रहे हैं? क्या वक्त था वो- १८९० में समाज के दो पढ़े-लिखे युवक- इन्द्रचन्द दुधोड़िया एवं इन्द्रचन्द नाहटा - विलायत से पढ़कर भारत वापस आये। उन्हें समाज से बहिष्कृत किया गया एवं उन्हें वापस इंग्लैंड लौटना पड़ा। समाज के एक वर्ग में, विशेषकर युवकों में नई जागृति दिख रही थी। समाज रूढ़िवादी सनातनी दल एवं प्रगतिशील सुधारकों के बीच बंट गया था।

समाज में शिक्षा के प्रति रूचि, बाल विवाह का विरोध, बालिका शिक्षा, विधवा विवाह, पर्दा, मृत भोज आदि विषयों पर आरम्भ के तीन-चार दशकों में मत पार्थक्य खुलकर उभरा एवं सम्मेलन को उन मुद्दों पर लड़ाई लड़नी पड़ी जो आज बहुत स्वाभाविक लगते हैं। सामाजिक प्रश्नों पर समाज में इतना तीव्र मतभेद था कि आपको जानकर आश्चर्य होगा कि सम्मेलन के आरम्भिक वर्षों में विवाद से बचने के लिए जान-बुझकर सामाजिक प्रश्नों को सम्मेलन के दायरे से बाहर रखा गया था।

नागरिक अधिकारों, राजनैतिक चेतना के साथ-साथ सामाजिक सुधार के लिए सम्मेलन ने एक निरन्तर लड़ाई लड़ी। आज जब लड़कियां बराबरी में प्रत्येक क्षेत्र में उच्चतम शिक्षा प्राप्त कर रही है यह बात अजीब लगेगी कि कुछ दशक पूर्व ही सम्मेलन के कार्यकर्ताओं ने बालिकाओं को विद्यालय में भेजने के लिए गालियां एवं मार खायी थी। फैशन के इस युग में पर्दा उठाने के लिए आन्दोलन आज के युवक-युवतियों को अटपटा लगता होगा।

२१वीं शताब्दी के मारवाड़ी समाज को समाज सुधार या सम्मेलन की क्या आवश्यकता है। जमाना बदल गया है, इन्सान बदल गया है और समाज भी बदल गया है। समाज सुधार एक निरन्तर जरूरत है, हालांकि सभी बदलाव शुभ नहीं रहे हैं। घुंघट उठा है, लेकिन आंख की शर्म नहीं रही। शिक्षा बढ़ी है, लेकिन नैतिकता गिरी है। धन कमाया है, लेकिन मूल्यों को खो रहे हैं। दूसरे समाज से समरसता का पाठ पढ़ते-पढ़ते हम अपने समाज के विघटन से अनजान हैं। पुरानी कुरीतियों से उभरे हैं तो नयी कुरीतियों के शिकंजे में जकड़ गये हैं। समाज अपनी खूबियों को खोकर नई खामियों को अपना रहा है। परिवार टूट रहे हैं, सम्बंध खट्टे हो रहे हैं। हमें बाहर की ताकतों से ज्यादा भीतर से खतरा बढ़ा है। हमारी ताकत की मुट्ठी खुलकर बिखर रही है। जुबान खूब चल रही है, लेकिन कीमत घट गई है। कितना बदल गया है समाज!

नया मारवाड़ी समाज नये प्रश्नों से जूझ रहा है। नये अवसर हैं तो नयी चुनौतियां भी। समाज अपना आर्थिक प्रभुत्व धीरे-धीरे खो रहा है। संचय एवं संयम की प्रवृत्ति ने आडम्बर, फिजूलखर्ची एवं उच्छृंखलता का रूप ले लिया है। पारिवारिक अनुशासन टूटन की ओर है। समाज के सम्मुख नई बुराइयां एवं कुरीतियां मुंह बाये खड़ी हैं। समाज सुधार के एक नये एवं तीव्र आंदोलन की जरूरत है।

With Best Compliments from :

Mackertich Consultancy services (p) Limited
"Vaibhav", 5th Floor
4, Lee Road
Kolkata - 700 020
Phone No.2281-9910,2281-3574.

With best compliments of :

A WELL WISHER

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कोलकाता
(६९वें स्थापना दिवस से ७०वें स्थापना दिवस तक)
राष्ट्रीय महामंत्री का प्रतिवेदन

प्रिय साथियों,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के७०वें स्थापना दिवस पर आप सभी को अपने बीच पाकर अपार खुशी हो रही है। मैं इस अवसर पर आप सबका हार्दिक स्वागत अभिनन्दन करता हूं। मैं आभार प्रकट करता हूं दिल्ली के उप-राज्यपाल महामहिम माननीय श्री बनवारीलाल जी जोशी का जो अपने व्यस्ततम कार्यक्रमों में से समय निकालकर इस समारोह को अपनी उपस्थिति से गौरवान्वित करने की हमें स्वीकृति प्रदान की। मैं अभार प्रकट करता हूं सांसद एवं सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री संतोषजी बागड़ोदिया का एवं कोलकाता में पुर्तगाल के सम्मानीय वाणिज्य दूत श्री रवि पोद्दार का जो हमारा आमंत्रण स्वीकार कर समारोह का मान बढ़ाने हमारे बीच उपस्थित हैं। इस ७०वें पड़ाव तक पहुंचने के लिए आप सबका कदम दर

कदम स्नेह और साथ मिला वह मेरे लिए अविस्मरणीय अध्याय है और उसके लिए हम आप सबके आभारी है। सफलता असफलता को गले लगाते हुए, खट्टे मीठे अनुभूतियों का रसास्वादन करते हुए हमारे कदम आज ७०वें पड़ाव पर कुछ पल ठहरकर अपने पीछे छोड़ आए उन स्मृतियों को एक बार पुन: आपने मानस पटल पर अभिचित्रित कर आपसे रूबरू कराने की तमन्ना है। अत: मैं ६९वें स्थापना दिवस से आज ७०वें स्थापना दिवस तक सम्मेलन की एक साल की गतिविधियों, क्रिया कलापों को महामंत्री के प्रतिवेदन के रूप में सिलसिले बार रूप से आपके समक्ष संक्षिप्त रूप से रख रहा हूं-

२५-१२-२००३ : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ६९वां स्थापना दिवस समारोह २५ दिसम्बर २००३ को विद्या मंदिर में परम्परागत रीति से आयोजित किया गया। पश्चिम बंग सरकार के युवा एवं तकनीकी शिक्षामंत्री माननीय मोहम्मद सलीम ने 'बदलता समाज एवं बदलती चुनौतियां' विषयक गोष्ठी का उद्घाटन किया। सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री प्रह्लादराय अग्रवाल समारोह के मुख्य अतिथि थे एवं मुख्य वक्ता थे जोधपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति प्रो. कल्याणमल लोढ़ा। श्री जिनेन्द्र कुमार जैन समारोह के विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान ने की। इस अवसर पर सम्मेलन के पूर्व महामंत्री एवं विशिष्ट समाजसेवी श्री दीपचंदजी नाहटा का उनकी ५० वर्षों से अधिक समाज एवं सम्मेलन की सेवा के लिए अभिनन्दित किया गया। समाज विकास का विशेषांक प्रकाशित किया गया। सम्मेलन के महामंत्री श्री सीताराम शर्मा ने राजस्थानी भाषा को संविधान की ८वीं अनुसूची में शामिल करने का प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से हर्ष ध्वनि से पारित किया गया जिसे अधिवेशन में रखे जाने की बात तय हुई।

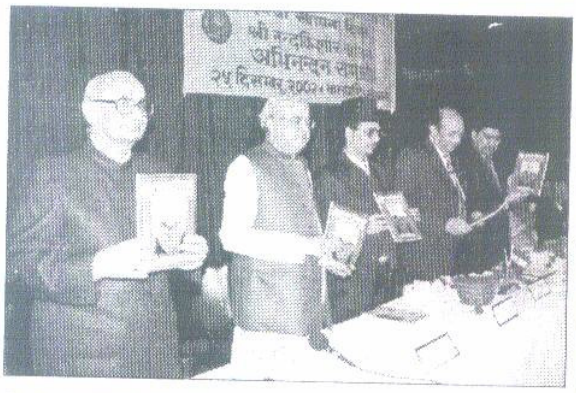

समरोह की समाप्ति हिन्दी हास्य नाटक के मंचन से हुआ।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के १९९७ से २००४ तक लगातार दो सत्रों तक महामंत्री पद को सुशोभित करने वाले श्री सीताराम शर्मा द्वारा अपने विदाई के अवसर पर सम्मेलन के मुख्यालय के कर्मीवृन्दों को भोज पर आमंत्रित किया गया। कालकाता में बेलारूस के वाणिज्य दूत श्री सीताराम शर्मा द्वारा भारत के राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से राष्ट्रपति भवन में भेंट की।

२८-१२-२००३ : मारवाड़ी सम्मेलन भवन में इस सत्र की अन्तिम कार्यकारिणी की बैठक सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में सम्पन्नहुई। बैठक में ९, १० एवं ११ जनवरी २००४ को मुंबई में आयोजित हो रहे १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन पर चर्चा एवं विचार विमर्श किया गया तथा निर्णय लिया गया।

९,१०,११-०१-२००४ : मारवाड़ी समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित ६९ वर्षीय अखिल भारतवर्षीय सम्मेलन का तीन दिवसीय १९वां राष्ट्रीय अधिवेशन महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अत्यंत आत्मीय आतिथ्य में देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन राजस्थान सरकार की माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे सिंधिया द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे जोधपुर के पूर्व नरेश महाराजा गजसिंह। विशिष्ट अतिथि थे केन्द्रीय जहाजरानी राज्यमंत्री श्री दिलीप गांधी। इनके अतिरिक्त अन्य विशिष्ट महानुभवों में प्रमुख रूप से थे सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्रीमती राजश्री बिड़ला, माननीय अब्दुल रहीम खत्री, विधायक श्री चैनसुख संचेती, विधायक श्री शंकरलाल केजड़ीवाल, श्री बलराम सुलतानिया, श्री जगदीशचंद्र मुंदड़ा, श्री रमेशचंद बंग, श्री राज.के.पुरोहित, श्री भरत गुर्जर, श्री ललित गांधी श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका, श्री गोविन्द पारेख, श्रीमती सावित्री बाफना आदि। सम्मेलन के पुनर्निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, निर्वतमान अध्यक्ष नन्दकिशोर जालान, महामंत्री सीताराम शर्मा, संयुक्त महामंत्री भानीराम सुरेका, विश्वनाथ कहनानी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रतन शाह सहित कलकत्ता से पचासों सदस्यों एवं आंध्र प्रदेश, बिहार, उत्कल, पूर्वोत्तर, झारखंड, पश्चिम बंगाल आदि

प्रांतों के अध्यक्ष / मंत्रियों ने अपनी भागीदारी निभायी।

अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने आदरणीय मुख्यमंत्री के सम्मुख अपनी तीन मांगें रखी- 'राजस्थानी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाए, प्रवासी राजस्थानी समाज के मार्गदर्शन के लिए स्वतंत्र मंत्रालय बनाया जाए तथा राजस्थान में उद्योग धंधे स्थापित करने के लिए अनुकूल वातावरण बनाया जाए।

अधिवेशन में श्री नन्दकिशोर जालान द्वारा सम्पादित हिन्दी मासिक पत्रिका 'समाज विकास' के विशेषांक का विमोचन किया गया।

समारोह के मध्य एक अत्यन्त उत्साहप्रद वातावरण में सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सीताराम शर्मा को लगातार दो सत्र के उनके कार्यकाल की सफल समाप्ति पर विदाई दी गयी। विदाई स्वरूप उन्हें मारवाड़ी साफा, शॉल एवं रजत फलक प्रदान किए गए। समारोह में सीताराम रूंगटा राजस्थानी भाषा साहित पुरस्कार के तहत ११ हजार रुपये का चेक एवं रजत फलक, श्रीफल, शॉल एवं राजस्थानी पगड़ी प्रदान कर सम्मानित किया गया जोधपुर के डॉ. वेंकट शर्मा को जिन्होंने अपनी लेखनी से

राजस्थानी भाषा की श्रीवृद्धि की है। सुप्रसिद्ध चिंतक, विचारक एवं समाज सेवी तथा भंवरमल सिंघी के अन्तरंग सहयोगी श्री गीतेश शर्मा को भंवरलाल सिंघी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके पूर्व विषय निर्वाचनी समिति की बैठक हुई जिसमें

संविधान की धाराओं में संशोधन हेतु आए हुए प्रस्तावों को अखिल भारतीय समिति द्वारा पारित करने के उपरांत अधिवेशन में मनोनीत हेतु प्रेषित किए जाने के पूर्व रखी गयी। राष्ट्रीय अधिवेशन में महामंत्री श्री सीताराम शर्मा द्वारा प्रस्तुत विगत कार्यकाल के प्रतिवेदन को सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। २००१-२००३ के आय-व्यय एवं संतुलन पत्र स्वीकृत किए गए। उपस्थित प्रांतीय अध्यक्ष या मंत्रियों ने अपने प्रांतीय गतिविधियों की चर्चा की। १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन में आठ प्रस्ताव पारित किए गए जिनमें प्रथम प्रस्ताव था- राष्ट्रीय एकता, द्वितीय संगठन, तृतीय नयी अर्थ व्यवस्था, चतुर्थ- नारी एवं युवा शक्ति, पंचम- नयी प्रतिभा, षष्ठम- राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन, सप्तम-राजस्थानी भाषा एवं अष्टम प्रस्ताव था- सामाजिक सुधार।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने प्रदत्त अधिकारों के अन्तर्गत राष्ट्रीय पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की। उपाध्यक्ष- छः- सर्वश्री जयप्रकाश मुंदड़ा (मुंबई), सीताराम शर्मा (कोलकाता), नन्दलाल सेठिया (चाईबासा), ओंकारमल अग्रवाल (गुवाहाटी), जगदीश प्रसाद अग्रवाल (उत्कल) एवं बालकृष्ण गोयनका (चेन्नई)। महामंत्री- श्री भानीराम सुरेका (कोलकाता), संयुक्त महामंत्री- दो- श्री रामअवतार पोद्दार (कोलकाता), श्री राज.के. पुरोहित (मुंबई), कोषाध्यक्ष- श्री हरिप्रसाद कानोड़िया (कोलकाता), राष्ट्रीय सलाहकार- श्री दिलीप गांधी।

२६-०१-२००४ : गणतंत्र दिवस के अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन भवन में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान द्वारा झण्डोत्तोलन किया गया। सम्मलन के पदाधिकारियों ने मूर्द्धन्य साहित्यकार एवं कवि मनीषी श्री कन्हैयालाल सेठिया को गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारत सरकार द्वारा उनकी राजस्थानी साहित्य एवं भाषा की सेवाओं के लिए पद्मश्री से अलंकृत किए जाने को विशेष हर्ष एवं गौरव का विषय बताया तथा उनके निवास स्थान पर जाकर उनका अभिनंदन किया।

०५-०३-२००४ : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का कोलकाता की सुपरिचित के नव निर्वाचित पदाधिकारियों सार्वजनिक अभिनंदन किया सामाजिक संस्थाओं द्वारा गया।

३०-०३-०४ : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का वर्षों का सपना था कि सम्मेलन का एक अपना भवन हो। उस सपने को साकार किया गया था ३० मार्च २३००३ को २५ अमहर्स्ट

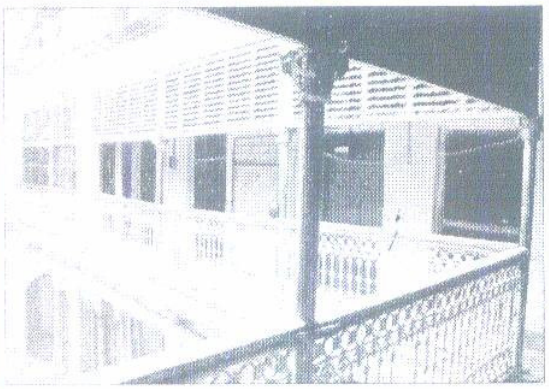

स्ट्रीट में लगभग १० कट्ठ जमीन पर निर्मित दो भवनों को खरीदकर। भवन का नाम दिया गया था- 'मारवाड़ी सम्मेलन भवन।' उसी मारवाड़ी सम्मेलन भवन की प्रथम वर्षगांठ रामनवमी के दिन गणेश लक्ष्मी एवं भगवान रामचंद्र की पूजा अर्चना कर मनायी गयी। इस अवसर पर भवन के पुनर्निमाण कार्य शीघ्र से शीघ्र व सुन्दर से सुन्दर ढंग से योजनानुसार आरंभ हो इसके लिए विचार-विमर्श किया गया।

११-०४-२००४ : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में पश्चिम बंगाल के सेवानिवृत्त पुलिस महानिदेशक श्री दिनेश वाजपेयी का नागरिक अभिनंदन समरोह किया गया। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान समारोह के प्रधान वक्ता थे।

१६-०४-२००४ : उज्जैन में सिंहस्थ कुम्भ मेला २००४ के अवसर पर एक छोटी सी सेवा के रूप में यात्रियों को सम्मेलन द्वारा चाय, पानी एवं नींबू की शिकंजी पिलाने की व्यवस्था की गयी। इस अवसर पर सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम जी सुरेका एवं संयुक्त महामंत्री श्री रामअवतार जी पोद्दार ने भाग लिया।

१८-०४-२००४ : उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष रूप में पुनर्निर्वाचित श्री सोमप्रकाश गोयनका को बधाई दी गयी।

२१-०५-२००४ : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा 'नयी सरकार, नयी उम्मीदें' विषयक एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी को कोलकाता महानगर से प्रकाशित चार हिन्दी समाचार पत्रों के सम्पादकों ने सम्बोधि किया। सन्मार्ग के सम्पादक श्री रामवतार गुप्ता ने नवगठित सरकार से उम्मीद की कि यह रोजगारोन्मुखी उद्योगों की स्थापना करेगी। जनमत्ता के स्थानीय सम्पादक श्री शैलेन्द्र ने कहा कि अब बहुदलीय सरकार ही बनेगी और अपना कार्यकाल पूरा करेगी। उन्होंने नई सरकार से लोगों को बुनियादी सुविधाओं के बारे में सोचने व कुछ ठोस करने की उम्मीद की। प्रभात खबर के सम्पादक श्री ओमप्रकाश अश्क ने नई सरकार के स्थायित्व पर मोहर लगाई। छपते-छपते के सम्पादक श्री विश्वम्भर नेवर ने कहा कि उससे भी बड़ी बात है कि सरकार कितने दिन चलती है किस तरह चलती है। विचार गोष्ठी का संचालन उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने किया एवं स्वागत भाषणा महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने दिया।

सम्मेलन अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने न्यायमूर्ति श्री रमेशचन्द्र लाहोटी के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बनने पर अपनी खुशी जाहिर करते हुए सम्मेलन द्वारा उन्हें प्रेषित बधाई पत्र में समाज के लिए इसे अति गौरव की बात बताया।

०४-०६-२००४ : सुप्रसिद्ध कवि श्री मुरारीलाल डालमिया का अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डॉ. कल्याण मल लोढ़ा, कोलकाता की उपमेयर श्रीमती मीनादेवी पुरोहित विशेष रूप से उपस्थित थी।

१५-०६-२००४ : कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा एवं राजस्थान विधानसभा की अध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा सिंह के सम्मान में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा कलकत्ता स्वीमिंग क्लब में एक रात्रिभोज का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सम्मेलन सभापति श्री तुलस्यान ने राजस्थानी भाषा के संवैधानिक मान्यता के प्रश्नों को जोड़दार शब्दों में उठाते हुए नेताओं से सम्पूर्ण सहयोग की अपील की। श्री मिर्धा ने देश के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास में मारवाड़ी समाज की भूमिका की सराहना की। नई पीढ़ी से उद्योग के साथ-साथ सामाजिक दायित्वों को भी निभाने के

लिए अपील की। श्रीमती सिंह ने मारवाड़ियों से राजनीति में आगे आने को कहा तथा प्रवासी मारवाड़ियों को राजस्थान के आर्थिक विकास में अपनी भूमिका निभाने के लिए आमंत्रित की। सम्मेलन के उपसभापति श्री सीताराम शर्मा ने सम्मेलन के उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में आंध्र प्रदेश के प्रांतीय अध्यक्ष श्री रामकिशन गुप्ता एवं पूर्वोत्तर के पूर्व उपाध्यक्ष श्री वेणीशंकर शर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे।

१५-०८-२००४ : स्वाधीनता दिवस के ५८वें वर्षगांठ पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मारवाड़ी सम्मेलन भवन में मनाया गया। राष्ट्रीय ध्वजारोहण अध्यक्ष श्री तुलस्यान कर-कमलों द्वारा हुआ। झण्डोत्तोलन के उपरांत राष्ट्रीय गान का सामूहिक गायन किया गया। इस अवसर पर सम्मेलन सभापति ने उपस्थित सदस्यवृंदों से सम्मेलन की सांगठनिक शक्ति को विकसित करने एवं मारवाड़ी सम्मेलन भवन का वर्षों का सपना पूरा होने का केन्द्र बिन्दु बताते हुए इसे बहुपयोगी बनाने की सम्मेलन की जो योजना है उसके लिए तन-मन-धन से सहयोग देने की अपील की। सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने धन्यवाद ज्ञापन किया

२०-०८-२००४ : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों एवं राजस्थानी फाउन्डेशन के कार्यकारी निदेशक श्री मनोज कुमार शर्मा एवं उनकी टीम के साथ एक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें राजस्थान सरकार द्वारा ऐतिहासिक स्थलों की देखभाल का भार निजी व्यक्तियों, संस्थाओं को देने के निर्णय पर विचार विमर्श किया गय। इस अवसर पर सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, निवर्तमान उपाध्यक्ष रतन शाह, महामंत्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री रामअवतार पोद्दार, सुप्रसिद्ध पत्रकार गीतेश शर्मा, गौरीशंकर कायां, लोकनाथ डाकानिया आदि उपस्थित थे। अध्यक्ष श्री तुलस्यान ने फाउन्डेशन के कार्यक्रमों की सराहना की एवं कुछ सुझाव दिए। उपाध्यक्ष नी शर्मा ने सम्मेलन के उद्देश्यों की जानकारी दी व फाउन्डेशन से अनुरोध किया कि वे पश्चिम बंगाल राज्य सरकार से एक प्लाट का आवंटन कराकर राजस्थान भवन का कोलकाता में निर्माण करें।

२२-०८-२००४ : सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक समिति अखिल भारतीय समिति की बैठक उत्कल प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में राउरकेला में सम्पन्न हुई। ६७ वर्ष के सम्मेलन के इतिहास में अखिल भारतीय समिति की उत्कल प्रदेश में पहली बैठक के लिए प्रांतीय अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सारोठिया द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के प्रति आभार व्यक्त किया गया। बैठक में प्रादेशिक सम्मेलनों की सांगठनिक स्थिति पर रिपोर्ट वितरित की गयी। महामंत्री द्वारा प्रस्तुत रपट को स्वीकृत किया गया। बिहार, पश्चिम बंगाल, झारखंड, उत्कल प्रादेशिक अध्यक्षों एवं पदाधिकारियों ने अपने

प्रदेशों की गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। उपसमितियों के गठन काअधिकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष को दिया गया। उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा को बेलारूस के कान्सुल बनने पर स्वागत किया गया। इसके उपरांत देश की वर्तमान राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर एक लंबी बातचीत हुई जिसमें कई प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में कई प्रस्ताव एवं महत्वपूर्ण सुझाव रखे गये जिनका राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शर्मा ने स्पष्टीकरण किया। समापन भाषण में सम्मेलन के संगठन को मिलजुल कर मजबूत करने के लिए प्रांतीय एवं शाखा सम्मेलनों से अपील की। महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने बैठक का संचालन किया। आगामी उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन बलांगीर में करना तय हुआ। झारखंड के अध्यक्ष श्री बासुदेव बुधिया ने आगामी अखिल भारतीय समिति की बैठक को रांची में करने का निमंत्रण दिया।

२८-०८-२००४ : 'रोजगार के बढ़ते अवसर' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्रीय श्रम व रोजगार मंत्री श्री शीशराम ओला उपस्थित हुए एवं बढ़ती बेरोजगारी एवं अन्य गंभीर समस्याओं पर अपने विचार व्यक्त किये। बैठक की अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने सम्मेलन के उद्देश्य एवं कार्यक्रमों पर विस्तृत प्रकाश डाला एवं सम्मेलन के समरसता के क्षेत्र में बढ़ते कदम की समीक्षा की। कार्यक्रम को सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, पूर्व उपाध्यक्ष श्री रतन शाह, सुप्रसिद्ध समाजसेवी व कार्यकारिणी सदस्य प्रह्लाद राय अग्रवाल, श्री हरिप्रसाद बुधिया आदि ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

२५-०९-२००४ : कार्यकारिणी समिति की बैठक के निर्णय। अखिल भारतीय समिति के कलकत्ता से निर्वाचित नये सदस्य की घोषणा।

०३-१०-२००४ : बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सत्र २००५-०६ के श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला (पटना) के निर्विरोध प्रादेशिक अध्यक्ष चुने जाने पर बधाई। महाराष्ट्र विधान सभा के चुनाव में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री श्री राज.के. पुरोहित एवं महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र बंग को बधाई दी गयी।

प्रख्यात साहित्यकार व शिक्षाविद् प्रो. कल्याणमल लोढ़ा के ८४वें जन्मदिन पर सम्मेलन द्वारा बधाई।

०९-११-२००४ : असम के सिल्चर शहर में मारवाड़ी समाज पर हुए हमले का सम्मेलन द्वारा कड़ा विरोध एवं प्रवासी मारवाड़ियों की सुरक्षा एवं क्षतिपूर्ति की मांग की गयी। राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों द्वारा भारत के उपराष्ट्रपति सहित केन्द्रीय एवं राज्यमंत्रियों से स्थिति को नियंत्रित करने तथा मारवाड़ी समाज को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए सभी आवश्यक कदम अविलम्ब उठाने का अनुरोध किया गया। इस पर त्वरित कार्यवाही करते हुए राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने असम के मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई से बात की तथा उसकी जानकारी फोन पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा को दी।

२३-११-२००४ : कार्यकारिणी समिति की बैठक सम्पन्न हुई। गत बैठक की कार्यवाही सर्वसम्मति से स्वीकृत की गयी। सिलचर की घटना पर चिन्ता व्यक्त किया गया एवं इसकी पुनरावृत्ति न हो इस पर गंभीरता से विचार किया गया। पांच उपसमितियों का गठन किया गया एवं उनके संयोजकों की घोषणा की गयी। स्थापना दिवस के अवसर पर प्रकाशित हो रहे समाज विकास विशेषांक के लिए लेख और विज्ञापन सहयोग का अनुरोध किया गया। बैठक में कई प्रकार के महत्वपूर्ण सुझाव सदस्यों द्वारा प्राप्त हुए।

२१-१२-२००४ : स्थायी समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में कई प्रकार के महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुए एवं निर्णय लिए गये।

समय-समय पर आयोजित अन्यान्य कार्यक्रमों की झाकियां

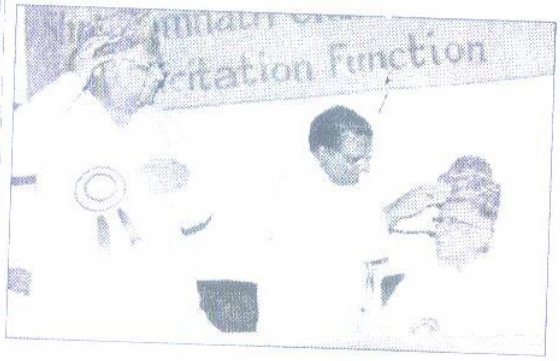

चतुर्थ मारवाड़ी सम्मेलन बंगला भाषा साहित्य पुरस्कार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा विभिन्न प्रांतों में बढ़ती क्षेत्रीयता एवं जातीयता की भावना से चिन्तित होकर विभिन्न समुदायों के बीच साहित्यिक सम्बन्धों के माध्यम से संस्कृति सेतु का निर्माण करने एवं समरसता स्थापित करने के लिए उक्त पुरस्कार की स्थापना १९९८ में की थी। पश्चिम बंगाल सरकार की पश्चिम बंग बंगला अकादमी के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में सम्मेलन उन बंगाली साहित्यकारों को प्रेरित, प्रोत्साहित और पुरस्कृत करता है जो राजस्थान सम्बन्धी उत्तम साहित्य की बंगला में रचना करते हैं। स्थानीय भाषा के युवा रचनाकारों का भी उत्साववर्द्धन करना इसके उद्देश्य में एक है।

पूर्व वर्षों में मेजर रामप्रसाद पोद्दार, मुम्बई, कार्या फाउंडेशन, मारवाड़ी सम्मेलन फाउन्डेशन के सहयोग से 'चन्दवरदाई पुरस्कार', 'मीरा बाई पुरस्कार' एवं 'भरत व्यास पुरस्कार' ७ साहित्यकारों को दिए गए हैं।

पुरस्कार स्वरूप साहित्यकारों को १० हजार १ रुपये की राशि एवं मानपत्र प्रदान किया जाता है।

आगामी चतुर्थ मारवाड़ी सम्मेलन बंगला भाषा साहित्य पुरस्कार समारोह पश्चिम बंग बंगला अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में **१२ फरवरी २००५,** शनिवार को संध्या ६ बजे बंगर्ला अकादमी सभागार, कोलकाता में आयोजित करने का कार्यक्रम है।

With best compliments of :

ORIENT FANS

15, India Exchange Place
Kolkata- 700 001

Phones : 2220-2610/2945/6289/7085
Fax : 033-22210324
E-mail : orifans@cal.vsnl.net.in
Website : www.orientfansindia.com

SREI committed to the growth of the country's core sector has gone far beyond providing finance and refinance for construction equipment and spare parts.

Today, SREI provides valuable inputs as financiers and consultants across infrastructure projects and roads, power and ports in particular.

Fuels the growth in the Indian transportation sector through attractive financial schemes for the commercial vehicle segment and automobiles.

Serves the international traveller through convenient foreign exchange transactions.

Creates a better environment by funding equipment and projects that are environmentfriendly.

Ensures complete protection by providing an entire range of insurance services.

Provides a range of investment oppurtunities through Government bonds, securities, fixed deposits and mutual funds.

Over the years SREI has built considerable expertise in the management of assets and financial services.

With its widespread network across the country, SREI is ready to meet growing customer needs with tailor-made solutions.

SREI is totally prepared and committed to stand by you to meet your diverse requirements as a complete finance solutions company.

Financially yours,

SREI INTERNATIONAL FINANCE LIMITED

EQUITY PARTNERS IFC USA • DEG GERMANY • FMO HOLLAND

SREI Equik SREI Requik SREI Parts SREI Core SREI Auto SREI Monitor SREI Bhaskar
SREI Forex SREI Life SREI General SREI Money SREI Treasure SREI Capital

Viswakarma, 86C Topsia Road South, Kolkata 700046 • Phone 22850112-15/024-27 • Fax 22857542
New Delhi Phone 23372274/90/23360994/23314030 • Bhubaneshwar Phone 545177 • Mumbai Phone 24968636
Chennai Phone 28555584 • Hyderabad Phone 55866791/9/20 • Bangalore Phone 2276727
Email : corporate@srei.com • Web : www.srei.com

© 2003 SREI INTERNATIONAL FINANCE LIMITED

बदलते परिप्रेक्ष्य में मारवाड़ी समाज की भूमिका

✍ **दीपचन्द नाहटा,** पूर्व महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली एकमात्र संस्था अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन हमारे समाज के प्रबुद्ध वर्ग द्वारा सामाजिक उत्थान के लिए सन् १९३५ में स्थापित हुई जो आज तक अबाध गति से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है। किसी भी संस्था का इतने कालखण्ड तक जीवन्त जाग्रत रहना अपने आप में एक उपलब्धि है। सम्मेलन के लिए यह गौरव का विषय है कि सम्मेलन को समाज के गणमान्य व्यक्तियों का सहयोग मिलता रहा है। अनेक संकटकालीन अवसरों पर भी सम्मेलन के पदाधिकारियों ने अपनी सूझबूझ एवं प्रतिभा का परिचय देते हुए सम्मेलन की गरिमा को अक्षुण्ण रखा है।

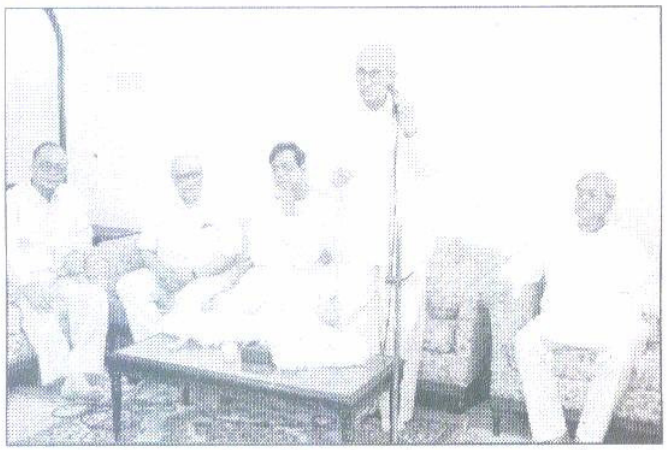

मो. सलीम के सम्मान में आयोजित भोज एवं सम्मान समारोह में बायें से छोटुलाल नाहटा, प्रो. कल्याणमल लोढ़ा, सांसद मो. सलीम, श्री दीपचन्द नाहटा (भाषण देते हुए) श्री सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष सम्मेलन

सम्मेलन ने शुरूआती दिनों में समाज में व्याप्त विषमताओं के उन्मूलन के लिए जो कदम उठाया था आज एक बार फिर उस आंदोलन की आवश्यकता महसूस की जा रही है। समाज में व्याप्त कुरीतियों का बहिष्कार हो, आडम्बर और प्रदर्शन बन्द हो- ताकि एक स्वच्छ एवं प्रतिभाशाली समाज का निर्माण हो सके। इस महत्वपूर्ण अभियान में सभी मारवाड़ी भाई एवं बहिनों का योगदान आवश्यक है। हम सब नई ऊर्जा एवं तेजस्विता के साथ परस्पर सहयोग को बढ़ाते हुए अपव्यय त्याग कर सृजन के नये क्षेत्रों में अपनी बचत को लगाये। देश के सृजनात्मक कार्यों में हमारा जो भी अवदान होगा उसे हमारा राष्ट्र आदरपूर्वक याद रखेगा।

निःसंदेह मारवाड़ी समाज ने उद्योग व व्यवसाय के क्षेत्र में अपार सफलताएं हासिल की हैय। एक सुनहरे वर्तमान एवं उज्वल भविष्य की सृष्टि हुई है। परन्तु आज प्रतिस्पर्धा की दौड़ हमारे उद्योग-धंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं। प्रश्न न केवल अपने को बचाने का है और न केवल स्पर्धा में टिकने का है। आवश्यकता है हम अपने राष्ट्र की अतीत कालीन गौरव की रक्षा करते हुए प्रतिस्पर्धा की दौड़ में अपने राष्ट्र को अग्रणी रखे। आज राष्ट्रनिर्माण का सुनहरा क्षण हमें पुकार रहा है। आवश्यकता है हम अपना धन, मन, बुद्धि, प्रतिभा, शक्ति आदि सुनियोजित तरीके से राष्ट्र को समर्पित करें। आज विश्व की नई औद्योगिक क्रांति को समझने वाला मारवाड़ी समाज इसके लिए सबसे अधिक उपयुक्त है।

उद्योग-धंधों के भूमंडलीकरण में मारवाड़ी समाज को आगे बढ़कर नेतृत्व करना है। ज्ञान-विज्ञान की नई प्रगति को आत्मसात् करते हुए नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों को बचाये रखना है। साथ ही यह भी ध्यान में रखें कि हमारा चरित्र उच्चकोटि का हो।

हमारे देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में मारवाड़ी समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है। बिड़लाजी और जमना लाल बजाज के लिए बापू ने कहा था- ''मेरे लिए तो वे कामधेनु थे।'' संयम को बनाये रखें। अगर हम में विलास, ऐशो आराम की प्रवृत्ति बढ़ती गई तो हमारे लिए नाशकारी सिद्ध होगी। गांधीजी की चेतावनी याद रहे- ''विलास विनाश है।'' अत: परस्पर प्रेम को बढ़ावे हम जहां भी जिस राज्य में रहते हों- वहां की प्रगति में सदा पूर्ण सहयोग दें।

केवल धन कमाना ही हमारा उद्देश्य नहीं है- साहित्य, कला, विज्ञान आदि के विविध क्षेत्रों में भी सदा आगे बढ़ते रहना है।

पश्चिमी भोगवादी अपसंस्कृति का संक्रमण धीरे-धीरे हमारी सभ्यता एवं संस्कृति पर हो रहा है। विशेषकर हमारी युवा पीढ़ी को आज की भोगवादी अपसंस्कृति से बचाना होगा। हमारा यह लक्ष्य होना चाहिए कि हमारी युवा पीढ़ी सुसंस्कृत, सहिष्णु और सौम्य हो- ताकि हमारा समाज दूसरे विभिन्न समाज के लोगों के समक्ष एक आदर्श रख सके।

हमारी युवा पीढ़ी अपनी प्रतिभा, शक्ति, सामर्थ्य का उपयोग भारत के सर्वांगीण विकास में करे। अपनी सादगी, सेवा, संयम को अक्षुण्ण रखते हुए राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान करें।

भारत में सभी धर्मों के लोग विद्यमान हैं

वैचारिक क्रांति का बिगुल फूंकें

✍ **राम अवतार पोद्दार**, संयुक्त महामंत्री अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

प्रवासी मारवाड़ियों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७०वें स्थापना दिवस तक की निरन्तर यात्रा को सुखद माना जाना चाहिए। बदलती अवधारणाओं, सिद्धांतों एवं परम्पराओं के बीच भी कोई संस्था, जो विशुद्ध वैचारिक है, अगर अपनी प्रासंगिकता बनाए रखती है तो इसे उस संस्था की उपलब्धि माना जाना चाहिए।

प्रवासी मारवाड़ी समाज का विस्तार व्यापक है। देश के कोने-कोने में सुदूर अंचलों तक मारवाड़ी बंधुओं का अधिष्ठान है। स्थानीय एवं प्रांतीय पहचान के बावजूद सभी मारवाड़ी इस मायने में एकरूप हैं कि वे राजस्थान, हरियाणा और मालवा से विस्थापित होकर जीविकोपार्जन की तलाश में प्रतिकूलताओं से जूझते हुए एक मुकाम कायम करने में सफल रहे हैं।

मारवाड़ी की जीवटता की कोई सानी नहीं। रेतीली भूमि का वासी होने के कारण पत्थर से पानी निकालने की कला में माहिर मारवाड़ी सदा से उद्यमता, धैर्यशीलता और सहिष्णुता का परिचायक रहा है।

आज स्थिति में थोड़ा बदलाव आया है। देश के विकास की धारा के समानान्तर प्रांतीय एवं स्थानीय व्यवस्था में भी परिवर्तन हुआ है। अर्थ की प्रधानता बढ़ी है। वैश्वीकरण के दौर में जीवन जीने की तरकीबें बदली हैं। सादा भोजन उच्च विचार वाली कहावत अब महत्वहीन सी हो गई है। बाहरी चमक-दमक को तरजीह दिये जाने के कारण विचारों की महत्ता पर प्रश्न चिह्न लगता जा रहा है।

जिन विचारों से समाज ने एक समय अपनी संरचना निरूपित की, अन्य समाजों से पृथक अपनी स्वतंत्र पहचान बनायी उन्हीं विचारों को कूड़ेदानों में फेंकने की कोशिश हो रही है। खोखली होती सामाजिक संचरना व आर्थिक सुदृढ़ता के बीच कुछ लोग उधार की शानोशौकत दिखाने पर आमदा है।

यह स्थिति विडंबनापूर्ण है, आनेवाली पीढ़ी के लिए नुकसानदेह भी। हम जो वर्तमान में रह रहे हैं, भविष्य की पीढ़ी के समक्ष किस रूप में उपस्थित रहना चाहेंगे, इस पर चिन्तन जरूरी हो गया है, क्योंकि हमारे पूर्वजों ने जो आदर्श और आचार-संहिता हमें विरासत में दिया था उसे खो चुकने के बाद हमारे पास ऐसा कुछ भी नहीं बचा है कि जिसे हम भावी पीढ़ी को विरासत के रूप में सौंप सकें।

सिर्फ धन किसी समाज के उन्नत होने का पैमाना नहीं हो सकता। उन्नत समाज की पहचान सभ्यता, संस्कृति, साहित्य के प्रति उसकी भूमिकाओं से होती है। दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से समाज इस दिशा में उपेक्षाभाव का शिकार है, उल्टे दिखावा, आडम्बर, प्रदर्शन की होड़ाहोड़ी में शामिल होकर अपने मूल्यों को तिलांजलि देने पर आमदा भी।

ऐसे में वैचारिक क्रांति की नितांत आवश्यकता है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन को इसका नेतृत्व देकर एक ऐसा उदाहरण पेश करना चाहिए जो भविष्य के लिए भी अनुकरणीय हो। अतीत में सम्मेलन सामाजिक सुधार आन्दोलनों को नेतृत्व देता रहा है, इसलिए यह उम्मीद अभी भी सम्मेलन से ही है।

सुशिक्षित, सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित, समृद्धिशाली, सुदृढ़ मारवाड़ी समाज के निर्माण में मेरा सहयोग किसी भी रूप में लिया जाए तो मैं इसे जीवन की उपलब्धि मानूंगा।

बदलते परिप्रेक्ष्य में...

और मारवाड़ी समाज की यह परम्परा रही है कि वे जहां भी जाते हैं सभी लोगों के साथ मिल-जुलकर रहते हैं। पर, कभी-कभी असामाजिक तत्वों द्वारा समाज में मजहबी जुनून या साम्प्रदायिक तनाव पैदा कर दिए जाते हैं। उस समय हमें विवेक से काम लेना चाहिए और यह समझना चाहिए कि यह भारतीय मानस एवं मान्यता के विरुद्ध है। यदा-कदा हम बाहर के राजनैतिक षड्यंत्र के शिकार हो जाते हैं। अत: ऐसे नाजुक अवसरों पर भी हमें विवेकपूर्ण शांति से अपनी पुरानी परम्परा को संभाल कर चलना है। हम यह सदा स्मरण रखें- शांति, सौहार्द, समता, सहिष्णुता और भ्रातृत्व प्रेम ये सब भारत के जीवन-मूल्य हैं। इसे स्मरण रखकर हम मजहबी जुनून और साम्प्रदायिक तनावों से बचें और विकास के पथ पर तेज एवं दृढ़ कदमों से आगे बढ़ें।

आज हम नारी जागरण की बात करते हैं। नारी को समान दर्जा देने की बात करते हैं। इन सबके होते हुए भी वर्तमान में यदि हम समाज में नारी की स्थिति का मूल्यांकन करें तो हमारा सिर लज्जा से झुक जाता है। नारी जाति पर आये दिन नृशंस अत्याचार होते हैं। पढ़ी-लिखी सुकुमार नव वधुएं दहेज कम मिलने के कारण आग की लपटों में जला दी जाती हैं या अत्याचारों से ऊबकर नव वधुएं आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो जाती हैं। समाज का विरोध कानून एवं जाग्रत नारियों के होते हुए भी ऐसे अत्याचार मर्मांतक एवं हृदयद्रावक हैं। अत: आवश्यकता है कि महिलायें, युवक और युवतियां इन सभी दायित्वों को संभालें और इन अत्याचारों के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करें ताकि नारी जाति इन अमानवीय अत्याचारों एवं यंत्रणाओं से मुक्ति पा सके।

सम्मेलन के प्रतिनिधियों ने सम्मेलन के मंच से अनेक आन्दोलन किये हैं। बाल-विवाह, पर्दाप्रथा, मृत्युभोज जैसी कुप्रथाओं को समाप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज उसी का प्रतिफल है कि सामाजिक सुधारों के लिए प्रबल जनमत तैयार हो रहा है। इस कड़ी में सम्मेलन की महिला समिति ने परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह जैसे समारोह का आयोजन कर समाज को आडम्बर मुक्त करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास किया है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन प्रारम्भ से ही अपनी दूरदर्शिता से समाज को सदा प्रेरित करता रहा है। आवश्यकता है हम सब सम्मेलन की गतिविधियों में सहयोग दें जिससे एक नये समाज और एक नये आदर्श युग का प्रारम्भ हो सके।

Great Refresher

OODLABARI

Royal

The strong CTC Leaf Tea with Rich Taste

Packed by

THE OODLABARI COMPANY LTD.

MAKERS OF FINEST GREEN TEA, CTC TEA & ORTHODOX TEA

Nilhat House, 11, R. N. Mukherjee Road, Calcutta-700 001

Phone : 2248 1101, 2248 4093 * Fax : 2248-9515

JAIPUR OFFICE:
D-242, Devi Marg,
Green Vistas Apartment
Jaipur-302016
Phone : 2200339

SUJANGARH SALES DEPOT:
Gandhi Chowk,
Sujangarh - 331507
Phone : 220048

MACO gel

Makesworth Industries Ltd.

"KAMALALAYA CENTRE"
Suite 504, 5th Floor
156A, Lenin Sarani, Kolkata-700 013
Phone : 2215-8600/4776/1130, Fax : +91-33-2225-1793

MACO GEL is a high profile product of **Makesworth Industries Ltd. (MIL)**, a part of the Makesworth group that excels in distribution of Industrial oils, rubber hoses, plastics and allied products in eastern India.

MACO GEL in its various grades is formulated by employing the most modern technology. This ensures total compatibility with cable polymers and coatings. It has excellent water blocking property as well as processibility for case and minimising down time during cable production.

The **MIL** plant located on the outskirts of Kolkata on Diamond Harbour Road, has state of the art technology and R & D facilities.

MACO GEL—THE PRODUCT

Category : Cable filling compounds. Soft pasty, hydrophyllic gel formulated from high quality base oil and other hi-tech ingredients which provide superior water blocking capacity over a wide temperature range.

Application : The ideal water resistant material for filling the interstices in Multipair Polyethylene insulated and sheathed telephone cables, ingress of moisture into cable sheath damage occurs.

Features : A homogeneous compound and containing a suitable
antioxidant. Easy removal by wiping from insulated conductors.

Transparent, so does not obscure the colour identification of the polyethylene insulation.

Fully compatible with polyethylene of medium and high density.

No unpleasant odour. No toxic or dermatic hazards.

Stable without migration.

FILL LONG LIFE INTO YOUR CABLE

राजस्थानी भाषा के विषय में विवेक की बात

✍ राजेन्द्र शंकर भट्ट

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन ने अपने मुखपत्र का नाम 'समाज विकास' बहुत ही समन्वयमूलक बुद्धि, बहुहितकारी विवेक और भविष्यदृष्टा विचार से रखा था। 'समाज' से एकता का उद्‌बोधन होता है, और सभी का हित करने की प्रतिबद्धता प्रतिपादित होती है। 'विकास' से इसकी दिशा निर्धारित होती है- 'विकास' से आभास होता है, भिन्न-भिन्न स्वरूप होते हुए भी सबका उत्तरोत्तर बढ़ना। जो कुछ आगे बढ़ने में बाधक होता है, अथवा उसमें सहायक नहीं होता, वह विकास के विपरीत पड़ता है, और अपने समाज के साथ इसे जोड़कर मारवाड़ी समुदाय में निरंतर अग्रसर और अभिवृद्धिरत रहने के लिए अपने को प्रतिबद्ध किया है। जो कुछ 'समाज विकास' में प्रकाशित हो वह भविष्यचेता हो, यह उसके नामकरण का तात्पर्य है।

इसके साथ ही, 'समाज विकास' विचार मंच है, और सभी को अपना अभिमत उपस्थित करने का अधिकार देना उसका कर्त्तव्य होता है। हर एक विचार विकास की ओर ले जाए, ऐसा नहीं होता, लेकिन स्वतंत्रता में उसके दुरूपयोग की स्वतंत्रता शामिल है, जिसके बिना स्वतंत्रता परिपूर्ण नहीं होती : अतएव विचार जब ऐसा आये जो विकास के विपरीत हो तो जितना कर्त्तव्य उसे प्रकाशित करने का होता है, उतना ही दायित्व उसे दुरूस्त करने का होता है। 'समाज विकास' के मई- २००४ के अंक में 'राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता का प्रश्न' शीर्षक से जो कुछ डा. वेंकट शर्मा ने लिखा है, उसका प्रकाशन जितना कर्त्तव्य था, उतना ही दायित्व उसके संबंध में निम्न निवेदन को स्थान देने का बनता है।

सबसे बड़ी और पहली बात यही कहनी है कि डॉ. वेंकट शर्मा का प्रतिपादन प्रगति विरोधी और विकास अवरोधक है, आगे ले जाने की जगह जो बीत गया, उससे जोड़ने का यत्न है, जो निष्फल किस प्रकार होगा इसका यही इस संदर्भ में सही उदाहरण होते हुए भी, इसे प्रस्तुत करने में संकोच हो रहा है। आगे संदर्भान्तर्गत इसका अवसर आया तो अपने आप यह सामने आ जायेगा। इतनी ही बात है कि डॉ. वेंकट शर्मा ने अपने अभिमत के प्रतिपादन में इसका पूरा उपयोग कर लिया है।

डा. वेंकट शर्मा ने दो प्रकार के विचार राजस्थान विधानसभा के संबंध में प्रकट किए हैं। पहले उन्होंने लांछन लगाया है : वैषम्यपूर्ण विडंबना की सर्वाधिक पीड़ा और वेदना राजस्थान प्रदेश में 'राजस्थानी' भाषा को झेलनी पड़ रही है जिसका प्रतिनिधित्व करने वाली विधानसभा सुदीर्घ काल पर्यन्त उसे शाब्दिक सहानुभूति मात्र देकर मौन हो जाती थी।' यह लाछंन न स्वीकार्य है, न सही है। इसका कलंक राजस्थान की दस विधानसभाओं पर लगता है, जिनके जब अन्य सभी निर्णय मंजूर हुए तो 'राजस्थानी' भाषा के संबंध में उनका 'मौन' भी मान्य होना चाहिए। वैसे, यह नितान्त रूप से मौन नहीं था। इन्हीं विधानसभाओं ने निरन्तर राजस्थानी की समुन्नति के लिए अलग संस्था के वास्ते हर वर्ष धनराशि आवंटित की, जिससे इस भाषा के प्रति इन सभी विधानसभाओं की श्रद्धा और प्रोत्साहन भावना प्रकट होती है। इसके सात ही, पहली विधानसभा का यह निर्णय था कि राजस्थान शासन का कामकाज हिन्दी में होगा, जो (१) परम्परा के अनुसार था, (२) अभी तक इसी के अनुसार व्यवहार हो रहा है। विशेषण जो चाहे चुन लिया जाए, क्या यह 'वैषम्यपूर्ण विडंबना' नहीं है कि जिस भाषा को राजस्थान विधानसभा भारत के संविधान की सूची में सम्मिलित कराना चाहती है, उसका स्वयं अपने प्रांगण में उपयोग नहीं करती, और उसके नियंत्रण से जो शासन कार्य होता है, उसमें भी उस भाषा का उपयोग नहीं कराती। यह तथ्य 'राजस्थानी' भाषा के उपयोग के पक्ष में दिये जा रहे हर एक तर्क का स्वत: उत्तर है : जिस भाषा का आप उपयोग नहीं करते, उसे दूसरों से स्वीकार और प्रतिष्ठित कराना चाहते हैं।

इतनी ही बात नहीं है, विगत दस विधानसभाओं का इस विषय में मौन नहीं रहा है। राजस्थान में देश की स्वतंत्रता के बाद बनी विधानसभा के पहले से राजस्थानी के लिए आंदोलन हो रहे थे, जिनमें ऐसे राजनेता भी थे जिन्होंने बाद में राजस्थान विधानसभा में स्थान प्राप्त किया- इनमें सर्वोपरि नाम जयनारायण व्यास का है। उनके अतिरिक्त भी जो राजस्थान में, उसके पूर्व रूप में भी, मंत्री-मुख्यमंत्री बने, जैसे हीरालाल शास्त्री, माणिक्य लाल वर्मा आदि ये सभी राजस्थानी के अपने क्षेत्र के स्वरूप में अच्छे उपयोगकर्ता, प्रचारकर्त्ता, रचनाकार और कवि थे। राजस्थानी को लेकर जो आंदोलन राजस्थान के बाहर मुखरित हुआ, उसमें भी जयनारायण व्यास का प्रमुख स्थान था। फिर भी इन राजनेताओं को जब अपनी-अपनी रियासत में, और बाद में वृहद राजस्थान में, शासनाधिकार प्राप्त हुए, इनमें से किसी ने राजस्थानी के स्थानीय रूप के प्रचलित स्वरूप को शासन में स्थान नहीं दिया, न संपूर्ण राजस्थान का शासनाधिकार प्राप्त होने पर उसका कोई स्वरूप शासन में प्रतिष्ठापित किया। ये सब नेता, और दस विधानसभाएं जो करती रहीं, उसे 'शाब्दिक सहानुभूति मात्र और मौन' कहना अपने शब्दों को व्यर्थ करना है। यह राजस्थान का अपनी स्थापना के समय से सुविचारित निर्णय था कि राजस्थान में शासन, शिक्षा, व्यवहार की भाषा हिन्दी होगी और राजस्थानी के हर स्वरूप के विकास के लिए समुचित सहायता तथा प्रोत्साहन दिया जायेगा। यह निर्णय अभी तक निभाया जा रहा है, जब ग्यारहवीं विधानसभा 'राजस्थानी' को संविधान सूची में सम्मिलित करने का संकल्प स्वीकार चुकी है। 'राजस्थानी'' संबंधी संकल्प और उससे संबद्ध समस्त कार्रवाई भी हिन्दी में है, 'राजस्थानी' में नहीं।

वह विधानसभा तो अब चली गयी,

उसमें उक्त संकल्प को प्रस्तुत करने वाला मंत्रिमंडल और राजनीतिक दल उसके बाद ही हुए निर्वाचनों में परास्त कर दिये गये : प्रस्तुतकर्त्ता मंत्री को मतदाताओं ने फिर मंत्री बनने का अवसर नहीं दिया और वे अब अल्पसंख्यक प्रतिपक्ष के नेता पद से संतुष्ट होने को विवश हैं। परंतु जो फलितार्थ 'राजस्थानी' के संबंध में इस पराजय के होते हैं, उन्हें अंगीकार नहीं किया जा रहा। अगर ऐसा किया जाता तो अब कार्यरत बारहवीं विधानसभा को अपनी पूर्ववर्ती ग्यारहवीं विधानसभा का यथाकथित संकल्प निरस्त करने में जल्दी करनी चाहिए थी। मतदाताओं को जब वह मंत्रिमंडल स्वीकार नहीं है जिसने उक्त संकल्प स्वीकार किया, और वे उसे और उस विधानसभा के बहुमत को परास्त कर चुके हैं, उसके संकल्प के अस्तित्व में रहने का औचित्य ही नहीं बनता।

इस आग्रह के दो आधार ध्यान देने योग्य है। पहला यह है कि 'राजस्थानी' विषयक संकल्प विधायी प्रक्रिया के प्रतिकूल पारित हुआ था। इस संबंध में विधानसभा की कार्रवाई का वर्णन करने वाले विवरण की छाया प्रति तथा उस पर राजस्थानी भाषा संकल्प विरोधी समिति की ओर से राजस्थान के मुख्यमंत्री को लिखे पत्र की प्रतिलिपि संलग्न हैं। ये स्वयं में स्पष्ट है, फिर भी यह विचारणीय और आलोचनीय है कि क्या यही तरीका होता है इतने महत्व के विषय में विचार बनाने और अभिव्यक्त करने का। चंद पंक्तियों की जिस कार्रवाई में बार-बार व्यवधान डाला गया, और जिसके बारे में विधानसभा के सामने ही कहा गया, 'वह क्या तरीका है', उसे 'सर्व सम्मति से पारित' कहना विधायी प्रक्रिया की साक्षात विडंबना है। यह छलना, उपहास और लज्जा होती है, जो विडंबना के अर्थ हैं। विडंबना को बल नहीं बनाया जा सकता, जिस संकल्प को पारित करने वाली विधानसभा के शासनारूढ़ बहुमत को राज्य के मतदाताओं द्वारा परास्त किया जा चुका है, उसका तथाकथित संकल्प राष्ट्रीय मंच पर विचार योग्य ही नहीं होता, उसका स्वीकार होना ही अत्यंत अनुचित होगा।

राजस्थानी भाषा संकल्प विरोधी समिति ने मुख्यमंत्री को विधिवत भेजे अपने पत्र में संबंधित संकल्प के पारित होने के संबंध में जो गंभीर आरोप लगाये हैं, उनके उपेक्षा अनुचित होगी, उन्हें संकल्प के साथ नत्थी करके, इस बात की जांच होनी चाहिए कि क्या आवेग, उपयोग अथवा स्वार्थ थे कि ऐसा महत्वपूर्ण संकल्प ऐसी जल्दबाजी में, बिना समुचित प्रक्रिया के, बिना सदस्यों को अपना अभिमत प्रकट करने का पूरा मौका दिये, स्वीकार कराया गया। और, क्या ऐसा संकल्प सम्मान के योग्य होता है। यह संकल्प ग्यारहवीं विधानसभा के अंतिम दिन, अंतिम क्षणों में, आश्चर्यजनक त्वरा से स्वीकार घोषित किया गया था।

संकल्प जिन्होंने पढ़ा नहीं है, और जो उसे छिपा कर उसका प्रतिपादन कर रहे हैं, वे ही इस संकल्प का सम्मान कर सकते हैं। यह संकल्प 'राजस्थानी' के पक्ष में नहीं, उसके सर्वथा प्रतिकूल है। ब्रज, हाड़ौती, बागड़ी, ढूंढ़ाड़ी, मेवाड़ी, मेवाती, मालवी, शेखावटी आदि किसी भी तरह से अब तक मारवाड़ी में शामिल नहीं है। यह संकल्प मारवाड़ी का प्रभुत्व स्थापित करने के लिए है, ऐसा स्वयं डॉ. वेंकट शर्मा ने उद्घाटित किया है :'यदि मारवाड़ी भाषा को ही राजस्थानी भाषा का प्रतीक अथवा मानक स्वरूप मानकर उसे राजस्थानी के स्वरूप में स्वीकार कर लिया जाए तो वह अपने अभिधेय अर्थ में मरू प्रदेश की भाषा का वाचक शब्द होते हुए भी अपनी लाक्षणिकता में 'राजस्थानी' भाषा का अर्थ ध्वनित कर सकता है। 'क्या कर सकता है, क्या हो सकता है, इस पर पूरा विचार किये बिना संकल्प बनाना और पारित करना कितना विचारयुक्त एवं स्वीकार योग्य हो सकता है, इस पर अवश्य गंभीरता से विचार होना चाहिए। संकल्प में सम्मिलित भाषाएं अलग हैं, और जब तक इनके बोलने वालों की सहमति से 'राजस्थानी' का एक निर्धारित स्वरूप नहीं उभरता, 'राजस्थानी' कहकर किसी भाषा को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

संकल्प जो पारित हुआ उसमें जिन भाषाओं और बोलियों का अलग-अलग उल्लेख आवश्यक हुआ है, (१) वे सबकी सब इस समय मारवाड़ी से भिन्न है, और मारवाड़ी को राजस्थानी बताकर उनको उसमें समाहित मान लेना वास्तविकता का तिरस्कार ही नहीं, उन भाषाओं और क्षेत्रों का अपमान है। (२) इसी कारण इस संकल्प का उग्र, आंदोलनात्मक विरोध उभरा है। (३) उसे इस संकल्प को निरस्त किये बिना शांत नहीं किया जा सकेगा।

इसकी इच्छा एवं चेष्टा नहीं लगता कि संकल्प-समर्थकों की है। डा. वेंकट शर्मा का जो आलेख 'समाज विकास' ने पांच पृष्ठ देकर प्रकाशित किया है, उसमें धमकी है : 'राजस्थान के पश्चिमोत्तर प्रदेश को 'मरूप्रदेश' के रूप में संवैधानिक मान्यता प्रदान की जा सकती है जिसके निर्माण के साथ-साथ राजस्थान प्रदेश को लेकर उत्पन्न की गयी अथवा की जाने वाली अनेक कृत्रिम समस्याओं का सहज ही समाधान हो सकता है तथा प्रशासन के संचालन में भी 'चुस्ती' आ सकती है। उस स्थिति में 'राजस्थानी' भाषा के नाम पर खड़ा किया प्रादेशिक भाषा का कृत्रिम आंदोलन भी धूमिल पड़ जाएगा क्योंकि 'मरूप्रदेश' की संभाव्यमान सर्जना में राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता के मार्ग में कोई बाधा नहीं पड़ेगी।'

'राजस्थानी' के नाम पर कितना बड़ा बलिदान मांगा जा रहा है। राजस्थानी भाषा संकल्प विरोधी समिति का आरोप सही साबित हुआ है : 'राजस्थान के वर्तमान स्वरूप को विखंडित करने के नापाक इरादे को अमली जामा पहनाने का यह प्रयत्न हैं। राजस्थान का इतिहास जो जानते हैं कि पंद्रहवीं शताब्दी में मेवाड़ के महाराणा कुंभा के समय से, उनके पौत्र महाराणा सांगा के समय में भी, वर्तमान राजस्थान के समस्त प्रदेश को एकीकरण प्रदान करने के प्रयत्न जो प्रारंभ हुए, वे अब लोकतांत्रिक रूप से परिपूरित हुए हैं। इनके अन्तर्गत जो राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य बना है, उसके टुकड़े-टुकड़े करने का क्या स्वार्थ और प्रयोजन है? क्या इस समय, इस राज्य के और इस राज्य से निकलकर सारे भारत और भारत के बाहर भी छाये राजस्थानी राजस्थान का अंग-भंग चाहते हैं? मारवाड़ी को लेकर अगर मरूप्रदेश बनेगा तो ब्रज, हाड़ौती, बागड़ी, ढूंढ़ाड़ी, मेवाड़ी, मेवाती बोलने वाले क्या किसी की आधीनता स्वीकार करेंगे? 'राजस्थानी' आंदोलन में राजस्थान को तोड़ने के प्रयत्न निहित हैं, इसे भली प्रकार से समझा जाना चाहिए।

मूल प्रकरण पर आने के पहले एक

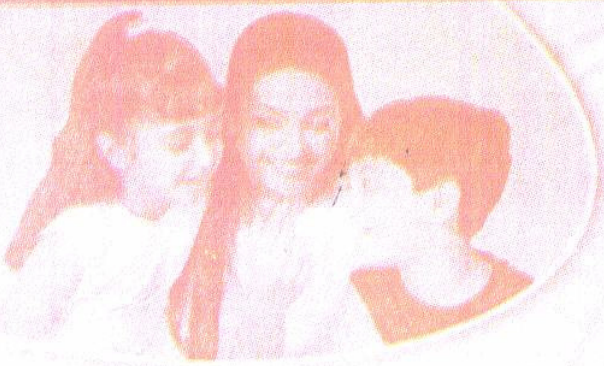

गोल्डी मसाले
प्यार से
खिलाइए
गोल्डी एगमार्क मसाले
Goldiee
AGMARK MASALE
New Crop Spices
Heeng * Papad * Pickle * Tea * Gulab Jamun Mix
Sauce * Vinegar * Agarbatti * Dhoopbatti
Shubham Goldiee Masale Pvt. Ltd.
"Goldiee House", Nayaganj, Kanpur (U.P.) INDIA • Fax : 0512-2368131 • Tel.: 2352737, 2316862
www.goldiee.com E-mail : info@goldiee.com Cable : Goldiee

आख्यान उपयुक्त होगा। राजस्थान में राजस्थान भक्त प्रबल मुख्य सचिव हुए हैं : भगवत सिंह मेहता, जो मेवाड़ (उदयपुर) के थे। वे 'राजस्थानी' को व्यावहारिक उपयोग की भाषा बनाने का परीक्षण कर रहे थे। उन्होंने उदयपुर में राजस्थान के सभी जिलों के प्रतिनिधियों की जो बैठक पंचायती राज की समस्याओं पर विचार के लिए बुलायी थी, उसमें वक्ताओं से अपने प्रदेश की भाषा (बोली) में अपने को अभिव्यक्त करने का आग्रह उन्होंने किया। यह सिलसिला आधे घंटे भी नहीं चल पाया, जोधपुर की बोली बहुतों की समझ में ही नहीं आयी, और सबने मिलकर हिन्दी में ही कार्रवाई चलाने का निर्णय किया।

यह निर्णय कोई न या करने की बात नहीं थी। इससे बहुत पहले के प्रवाह और परम्परा से यह सुनिश्चित हो गया था कि राजस्थान की रियासतों में हिन्दी ही में काम होगा। 'राजस्थानी' का संकल्प अब स्वीकार करने के प्रयत्न में लगे लोग इस ओर नहीं देखना चाहते कि (१) जो राजस्थान की स्वतंत्र रियासतें थीं, अलवर से लेकर बांवाड़ा तक, जैसलमेर से लेकर भरतपुर तक, बड़ी-बड़ी भी जयपुर, जोधपुर, छोटी-छोटी भी सिरोही, किशनगढ़, सब अपने गजटों में जब अंग्रेजी का उपयोग नहीं करती थीं, तब हिन्दी ही काम में लाती थीं, कहीं वहां की स्थानीय भाषा में वहां का गजट नहीं निकलता था। जब राजा थे, तब भी ऐसा ही हुआ, हिन्दी का ही शासन में प्रचलन रहा, जब उत्तरदायी शासन में लोक नेताओं की प्रमुखता हुई, तब भी ऐसा ही हुआ। (२) इन लोक नेताओं ने जो आंदोलन चलाये उनमें स्थानीय बोलियों का उन्होंने खूब उपयोग किया, स्वयं इसके लिए गद्य-पद्य की रचनाएं कीं, लेकिन अपने आन्दोलन की कार्रवाई, प्रजापरिषद-प्रजामंडल आदि के संगठनात्मक कार्य, हिन्दी में ही करते थे। और जब सारे राजस्थान के संगठन बने, पहले लोक-परिषद के रूप में, फिर कांग्रेस की शाखा के रूप में, प्रयोग निरन्तर हिन्दी का होता रहा। राजस्थान का वर्तमान रूप जब बना हिन्दी की उसके लिए स्वीकृति आकस्मिक, अथवा भ्रमवश अथवा स्वार्थमूलक नहीं थी : यह स्वाभाविक प्रवाह का उपयोग ही था, जिसके प्रतिकूल प्रचलन कठिन भी होता, अस्वाभाविक और अनुचित भी- जिसे अब प्रवाहित करने का वितंडा खड़ा किया जा रहा है। जिसे जयनारायण व्यास ने नहीं किया, उसे करने (उन्हीं के अनुसार, जोधपुर के) अशोक गहलोत अपने हाथ जला चुके हैं। इसके आगे उस नेतृत्व के लिए कहा क्या जा सकता है जिसने ग्यारहवीं राजस्थान विधानसभा से अनुचित रूप से 'राजस्थानी' का संकल्प स्वीकार कराया था।

राजस्थानी का जब स्वरूप अभी भी विभक्त है, जो राजस्थानी संकल्प में अन्य भाषाओं के उल्लेख से सुप्रकट है, तब उसे एक नाम से संविधान की सूची में सम्मिलित कैसे किया जा सकता है।

डॉ. वेंकट शर्मा को दिक्कत यह है कि वे राजस्थानी के आदिकाल और मध्यकाल में से अपने को नहीं निकाल पा रहे। उस समय की राजस्थानी की प्रशंसा में उन्होंने जो कहा है, उसके विपरीत न कोई तर्क है, न कथ्य। उस गौरव से हम सब महिमामंडित है। इतना ही नहीं, राजस्थानी के सभी स्वरूपों की उचित और उत्साहपूर्ण उन्नति हम सब चाहते हैं। परंतु प्रश्न इस समय वर्तमान का है। उससे आगे भविष्य का। समस्या इस समय यह है-''अंग्रेजी भाषा की तहजीब पर हम सब मुग्ध है और उसे राजभाषा का दर्जा देने में हमें आत्मसम्मान और राष्ट्र गौरव की अनुभूति होती है। 'हिन्दी को अंग्रेजी को अपदस्थ करने में अभी बहुत यत्न करना होगा, अपने को बहुत सशक्त करना होगा : दिन दिन यह काम कठिनतर होता जा रहा है। हिन्दी का अंग-भंग करके हम हिन्दी की प्रतिस्पर्धी शक्ति घटायेंगे। 'राजस्थानी' स्वीकार हुई तो पहले राजस्थान टूटेगा, फिर समस्त हिन्दी क्षेत्र की टूटन का सिलसिला शुरू होगा, ब्रज, अवधी किसे सम्मिलित रखा जा सकेगा, जब राजस्थानी अलग हो जायेगी।

अगर अलग राज्य बनाकर उसके पदों के उपभोग का लालच है तो इस दुरावस्था का निराकरण पहले आवश्यक है। परंतु ऐसे प्रश्न आरोपों से सुलझाये नहीं जा सकते, जिनसे डॉ. शर्मा का आलेख अलंकृत है। राजस्थान 'राजस्थानी' की बंदिश स्वीकार करके अपने को अलग-थलग कर लेगा। अभी राजस्थान से बिहार तक हिन्दी के माध्यम से सभी स्थानों पर पहुंच बनायी जा सकती है, और भारत के भविष्य की भाषा भी हिन्दी है। इतने विशाल क्षेत्र की संभावनाएं छोड़कर, और राजस्थान के भी टुकड़े कराकर, एक टुकड़े की समीाओं से अपने को संतुष्ट करना संकरा ज्ञान और विवेक है। 'हमारी वाणी मूक तथा बुद्धि असंतुलित हो जाती है', ऐसा उन उद्गारों के बारे में नहीं कहा जा सकता, जिनके सृजन का श्रेय डा. वेंकट शर्मा के प्रतिपादन को है।

उन्होंने राजस्थानी के आदिकाल और मध्यकाल को गिनाया। परंतु वर्तमान में स्थिति यह है कि जिस 'राजस्थानी' का वे प्रबल प्रतिपादन कर रहे हैं उसमें प्रकाशित एक भी दैनिक अथवा साप्ताहिक नहीं है : 'राजस्थानी' के जो प्रबल समर्थक अपने को प्रचारित करते है, वे अपना दैनिक हिन्दी में निकालते हैं। राजस्थानी के समर्थक विद्वान यह स्वीकार करते ही हैं कि वे आजीवन हिन्दी के अध्यापक रहे हैं। जिससे जीवनयापन हुआ हो, उसी का विरोध ऐसा आचरण होता है जिसकी प्रशंसा नही की जा सकती। 'राष्ट्रीय एकता' की बात करना, और उपक्रम राष्ट्रीय एकता के विगठन के करना, विषयगामिता होती है। दोहराने भर की बात है। राजस्थान को 'संकीर्णतागस्त भाषाविषयक आन्दोलनों से मुक्त रखा जाए'।

'समाज विकास' के सभी विज्ञ और विवेकशील पाठकों को पूरे फैलाव में इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए। 'समाज विकास' को ऐसा वातवरण बनाना चाहिए कि इस प्रश्न पर अतीत की दृष्टि से नहीं, उपस्थित और भावी स्थितियों के संदर्भ ही में विचार हो। हिन्दी का समर्थन, 'राजस्थानी' का विरोध नहीं होता, यह तो हर एक के वास्ते उसके लिए उचित और उपयुक्त स्थान निर्धारित करने का विवेक और दायित्व है। हिन्दी और राजस्थानी की जो स्थिति इस समय राजस्थान में है, वही भविष्य में भी रहनी चाहिए। राजस्थान को इस समय मतिभ्रम की नहीं, मतएक्य की आवश्यकता है।●

('समाज विकास' सभी मतों एवं विचारों का स्वागत करता है। प्रकाशित लेखों से सम्पादकीय सहमति आवश्यकता नहीं है- सम्पादक)

अखिल भारतीय राजस्थानी समारोह

८ अर ९ जनवरी २००५, कोलकाता

आगूंच न्यूतो

भोत बरसां तक तो आपां नै ईं भरंम मे राख्यो गयो कै आपणी भाषा, भाषा नईं है, बोली है । पण पिछलै ३५ बरस पैली देस री सर्वोच्च भाषाई अर साहित्यक संस्था केन्द्रीय साहित्य अकादमी जद सै राजस्थानी नै भाषावां री सूचि मे शामिल करली अर हर बरस ई भाषा री श्रेष्ठ कृति ने पुरस्कृत करै लागी है, ईं मिथ्या प्रचार री दीवाल ही ढहगी ।

अफसोस ईं बात रो है कै संविधान रै भाषाई मंदिर की देहरी के अन्दर आज भी राजस्थानी रो प्रवेस नईं है । अछूत की तरियां ईं नै देहरी के बार ही खड्यो रैवणो पड़ै । केन्द्रीय अकादमी की ओर सूं मान्यता प्राप्त २४ भाषावां में से २१ ने संविधान मै स्वीकृति मिल चुकी है, पण राजस्थानी नै नईं मिली ।

अत: जरूरी है कै राजस्थानी भाषा री दशा अर दिशा पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित कर्‌यो जावै । राजस्थानी प्रचारिण सभा अर राजस्थान सरकार री स्वायत्त संस्था राजस्थानी भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी, बीकानेर रै संयुक्त तत्वावधान मे एक राष्ट्रीय समारोह, ८ अर ९ जनवरी, २००५ नै करणै रो निर्णय लियो गयो है । उद्‌घाटन व समापन सत्र के अलावा ४ सेमीनारां आयोजित करी जावैगी । रात नै कवि सम्मेलन का आयोजन रैवैगो ।

ओ पत्र आगूंच बास्तै है । आप से अनुरोध है कै ईं समारोह मे उपस्थित रैकर मायड़ भाषा सारू काम करणियै साथियां रो उत्साहवर्धन करयो ।

कार्यक्रम रो निमंत्रण आपनै अलग सै भेज्यो जावैगो । कोई कारण से नई पूंचै तो भी आप जरूर सै पधारियो ।

आप रा,

प्रह्लाद राय अग्रवाल
स्वागताध्यक्ष

रतन शाह
संयोजक

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

का

द्वादस प्रांतीय अधिवेशन

२६ और २७ फरवरी २००५

जोरहाट में

झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन

के

नये अध्यक्ष का चुनाव

६ मार्च २००५

को

राँची में

इतिहास के झरोखे से झांकती हमारी अस्मिताएं

✍ बंशीलाल बाहेती

यह कितनी विडम्बना है कि इतिहास अपने को दोहराता है और यह और भी सच है कि इतिहास अपने को बार-बार दोहराता है। राजस्थान एक विशाल भू-भाग में फैले धरती का एक ऐसा हिस्सा है जहां कि गाथाओं, कथाओं एवं दास्ताओं ने बार-बार इतिहास रचा है। इसकी कोख से जन्में वीरों के अदम्य साहस, शौर्य एवं स्वाभिमान ने इसका मान सम्मान तथा संस्कारों को नई ऊंचाइयां प्रदान की है। इसके संतों ने इस धरती को देवभूमि बना दिया। यहां के उद्यामियों ने अपनी साख और सामर्थ्य के नए-नए आयाम उपस्थित किए हैं। संघर्षों से जुझते, अभावों का मुकाबला करते जीवट के धनी इस धरती के वाशिंदों ने मानवीय मूल्यों को नए-नए अर्थ प्रदान किए। **'इण पर देव रमण ने आवे यह है धरती धोरां री'** इन कालजयी उद्घोषों ने इस धरती को गंगा की पवित्रता और स्वर्ग की अमरता प्रदान की है। विवदन्ति है कि इसी भूभाग के एक हिस्से जैसलमेर में जिस किले का निर्माण किया गया वह सोने का था। **सोनार किला** की अपनी ख्याति थी अपनी अलग पहचान थी। तत्कालीन शासक जैसल ने जैसलमेर के किले की स्थापना की थी और उसी के नाम से इसका नामकरण जैसलमेर रखा गया इसी विशेषता के कारण इस किले के बावत कहा गया- **'गढ़ कोटा- गढ़ आगरा, अधगढ़ बीकानेर। भलो बसायो जैसला- त गढ़ जैसलमेर'**।

परंतु आज जैसलमेर का स्वर्ण किला माटी के परिणित हो गया है उसकी तमाम स्वर्णिम अस्मिताएं उस माटी के तले दब कर रह गई है उसकी तमाम संवेदनाएं मूक है- अपनी इस दशा का कारण वहां की धरती अभी तक खोज नहीं पा रही है। इतिहास गवाह है कि रावण की हठ धर्मिता, अहंकार एवं अधर्म ने स्वर्ण की लंका का खाक में मिला दिया था। रावण के आचाण और छल कपट के कारण लंका का विनाश हुआ और एक पूरी जाति वांछित हुई। किन्तु जैसलमेर के स्वर्ण किले का ऐसा हम क्यों हुआ इसका सटीक उत्तर तो आपको तभी मिलेगा जब उस सौंदी माटी से आप पूछेंगे। ऐसा क्या घटित हुआ कि स्वर्ण दुर्ग अचानक माटी के तब्दील हो गया। आत्मीयता, शालीनता और संस्कारों के धनी जैसलमेर का अपना स्वर्णिम इतिहास है। इसके बावजूद ऐसा क्या हुआ कि वह पवित्र धरती अभिशप्त हो गई, देवता हतप्रभ हो गए और मानवता विलख पड़ी। सदियां बीत गई किन्तु आज तक अपनी पीढ़ी को हम इसका सही उत्तर नहीं दे पा रहे हैं।

इतफाक से कुछ वर्षों पूर्व जैसलमेर जाने का अवसर मिला। अवसर था अ.भा. माहेश्वरी महासभा का राष्ट्रीय अधिवेशन। मन में कौतूहल भी था, जानने की जिजासा और उस धरती को नमन करने का भाव। तब अ.भा. माहेश्वरी महासभा का अपना जातीय सम्मेलन जैसलमेर में जिस धूमधाम, शान शौकत और गौरवशाली ढंग से हुआ उससे वहां के स्थानीय लोग इतने भाव विभोर और पुलकित थे कि सदियों का इतिहास उनके सामने उभर आया। अपनी सोनल धरती पर गर्व करते वहां के वाशिंदें अपने पुरखों की पावन भूमि पर दूर-दूर से आए इन मेहमानों को देखकर गद-गद हो रहे थे। उन्हें लग रहा था जैसे एक महान समाज के लोग सुदूर देशों से हजारों की संख्या में किसी बहुत बड़े विश्वास और भरोसे के साथ वहां सम्मिलित हुए हैं। वे जानना चाहते हैं कि एक जागरूक समाज अपनी समस्याओं को समझने और सुलझाने के लिए इतिहास की कौन सी स्वस्थ एवं गौरवशाली परम्पराओं का निर्वाह करेगा। वे देखने को आतुर थे कि अपने समाज की समृद्धि, एकता और सम्मान की सुरक्षा के लिए हम कितने चिंतित एवं निष्ठावान हैं।

जैसलमेर की कोख से जन्मे पौरुष एवं पुरुषार्थ ने सदैव अपनी सामर्थ्य एवं शक्ति के समझने व परखने का कभी भी कोइअ वसर नहीं गंवाया है और इसी परखने और समझने की ललक ने जैसलमेर के जन जन को चुनौतियों को स्वीकार करने और चुनौतियां देने का अदम्य साहस प्रदान किया है। वे नमन भी ऐसे ही जीवट के लोगों को करते हैं।

उस रात दूरदर्शन एवं आकाशवाणी के जैसलमेर के युवा कलाकार मास्टर कमरूद्दीन अपने मजीरे की मस्ती और तबले की ताल पर झूमते हुए गर्व के साथ बता रहे त्रक हजारों वर्ष पूर्व अद्वितीय, रूपमति, विलक्षण बुद्धिवाली एवं अदम्य साहस की मूर्ति जैसलमेर की राजकुमारी मूमल ने किसी ऐसे ही पुरुष एवं पुरुषार्थ को पहचानने व परखने के लिए प्रतियोगिता का आयोजन किया था और शर्त रखी थी कि उसके प्रश्नों का सही सही समाधान करने वाले योग्य एवं मेधावी पुरुष का वह वरण करेगी तो देश देशांतर के सैकड़ों राजकुमार वहां पहुंचे। परंतु दुर्भाग्य से वे एक के बाद एक परास्त हो गए। उस चुनौती का मुकाबला करने अमरकोट का राजकुमार अमरसिंह सोढ़ा भी आया था। राजकुमारी मूमल ने उससे भी चार प्रश्न पूछे थेऔरह भरोसा दिया था कि सही समाधान देने पर वह राजकुमार सोढ़ा का वरण करेगी। ऐसा निर्णय करते वक्त मूमल के अन्तर्मन में इतिहास की वही शास्वत भावनाएं सामने थी जिसकी वजह से अपने से अधिक सामर्थ्यवान, शक्तिशाली, ओजस्वी तथा मेधावी के संरक्षण और सान्निध्य की कामना युग युग से मानवीय संस्कारों का आधार रही है।

इस सच्चाई को परखने के लिए हर युग में अनेकों प्रयास हुए हैं- इसी सत्य के लिए यज्ञ ने धर्मराज युधिष्ठिर से प्रश्न पूछे थे- ऐसे ही तरीके से दमयन्ती ने नल को खोजा था, यहां तक कि ऋषिश्रेष्ठ मार्कण्डेयजी से महाराभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास

ने पूछा था- 'हे ऋषिदेव महाभारत ज्ञान का अथाह सागर है, जीवन की सूक्ष्मता स्थिति का विश्लेषण उसमें किया गया है, उसमें जीवन संघर्ष की पेचीदगी को दर्शाया गया है, उसमें स्वयं के कर्तव्यबोध का ज्ञान सम्माहित है और इतना सब कुछ होते हुए भी उसमें यथार्थ का पता नहीं चल सका। उन्होंने कहा कि आखिर द्रौपदी को पांच पांडवों की पत्नी क्यों बनना पड़ा? आचार्य द्रोण श्रेष्ठवर कृपाचार्य, पितामह भीष्म स्वयं भगवान कृष्ण, धर्मराज युधिष्ठिर जैसे देव पुरुषों के बावजूद दो परिवारों का विध्वंस क्यों नहीं रोका गया- क्यों दो परिवारों की कलह पूरे देश, पूरी व्यवस्था एवं सम्पूर्ण समाज के विनाश का कारण बन गई। समझ आने ही बच्चा अपनी मां से, अपने पिता से तथा अन्य बड़ों से इसी प्रकार की जिज्ञासा बार-बार करता है। शायद इसी प्रकार के प्रश्नों, शंकाओं और आशंकाओं ने सामूहिक चिंतन के लिए मानवता को प्रेरित किया और संभव है इसीलिए सामाजिक संगठन एवं व्यवस्थाएं उभरी तथा वे संगठन और व्यवस्थाएं ही सजीव रहे जिन्होंने निरन्तर अपनी स्थिति का खुलमन से, ईमानदारी और सच्चाई के साथ विवेचन किया। अपनी गलतियों का सुधार और अपने समृद्धशाली भविष्य का संकल्प करते हुए दृढ़ता के साथ आगे बढ़े।

अकेले किसी भी व्यक्ति की सामर्थ्य की अपनी सीमाएं होती है, इसीलिए वह एक दूसरे के जीवन की सार्थकता तलासने का प्रयास करता है। और यही कारण है कि पारिवारिक परम्पराएं व सामाजिक व्यवस्थाएं एक भरोसा और विश्वास लेकर सम्मानजनक स्वरूप के साथ उभरती है। इसी विश्वास व भरोसे की सुरक्षा के लिए सामाजिक व जातीय सम्मेलन एक आवश्यक जरूरत रहे हैं। यही एक सम्मानजनक व्यवस्था की अनिवार्यता भी है। क्योंकि ऐसे ही सम्मेलनों में व्यक्ति विशेष ही नहीं पूरी व्यवस्था एवं पूरा समाज वहां अपनी शंकाओं का समाधान पाने की कामना करता है। वह अपने भविष्य की समृद्धि और सुरक्षा का भरोसा लेकर वहां उपस्थित होता है और अपनों के बीच विश्वास की उस गहराई का आंकलन करने का प्रयास करता है ताकि वह अपने अस्तित्व के लिए अश्वास्त हो सके। स्वाभाविक है ऐसे सम्मेलन सहज उस जाति विशेष के लिए तो बेहतरीन भूमिका का निर्वाह करते ही है, अन्य समाज की उनके आचरण, निर्णय और दूरदर्शिता के विश्लेषणों से प्रभावित होते हैं।

हम यह नहीं भूल कि एक गौरवशाली समाज के इतिहास पुरुष ऐसेही वातावरण में उभरते हैं और ऐसे ही लोग अपनी जातीय एकता और सामाजिक मर्यादाओं को इतिहास में पूज्यनीय बनाने में सफल होते हैं। इतिहास साक्षी है कि जातीय मनोबल भी कमजोरी और सामाजिक व्यवस्था के बिखराव ने बारबार दुर्योधन, दुःशासन, जरासंध कंस एवं शिशुपाल जैसे लोगों को उभरने का अवसर दिया। इन्हीं लोगों ने बारबार धूर्तता और चालाकी के साथ सामाजिक स्मिता का चीर हरण किया- बार-बार इन लोगों ने अपने दंभ और क्रूरता को उभार कर पूरी व्यस्था को रौंदा और नष्ट किया। इन्हीं लोगों ने अराजकता का निर्माण किया- विश्वासघात किया और स्वयं भी नष्ट हुए तथा पूरी जाति का विनाश कर गए। कई बार हमारे युग पुरुष भी अपने वादि विवेक का उपहास होते हुए भी मूर्खतापूर्ण आवेश में फंसकर अपनी संस्कृति और इतिहास का अपमान क्यों बर्दाश्त कर लेते हैं। कई बार क्यों वे छद्मवेश में संलग्न दंभी क्रूर और पाखंडी लोगों के षड्यंत्र को स्वयं आगे बढ़कर रोकने से डर जाते हैं। वे क्यों भूल जाते हैं कि ऐसे ही ढोंग अपनी सांस्कृतिक, सामाजिक एवं नैतिक व्यवस्थाएं उजाड़ते हैं, उसे बंजर करते है और तब वहां जो झाड़ झारखंड उभरते हैं उन्हें हम दुर्योधन, दुशासन या किसी भी ऐसे नाम से पुकारने को विवश हो जाते है और तब जिस भय, अविश्वास और अनिश्चितता की स्थिति का निर्माण होता है तो सारी व्यवस्था मर्यादाएं और नैतिकताएं बिखर कर चूर-चूर हो जाती है और तभी किसी महाभारत की बाध्यता पूरी जाति के विनाश को बाध्य कर देती है।

सामाजिक व्यवस्था को इस प्रकार की क्रूरता से बचाने की जिम्मेवारी युग पुरुषों की ही होती है। शायद इसीलिए जातीय सम्मेलन युग-युग से एक ऐतिहासिक जरूरत रहते हैं। ऐसे अवसरों पर निष्ठा, सच्चाई और सज्जनता के साथ हम खुली बहस के माध्यम से अपने समाज के गुण दोषों का विवेचन कर पाते है और इस प्रकार के प्रयासों से हम अपनी सांस्कृतिक सामाजिक एवं नैतिक परिस्थितियों को बंजर होने से बचा सकते हैं और तभी हम अपने विवेक का पैनापन कायम रख सकते हैं। ताकि बौद्धि दिवालिएपन और मूर्खतापूर्ण आवेग में फंसने से अपने को बचा सकें।

जो लोग हजारों की संख्या में ऐसे सम्मेलनों में पहुंचाते हैं उनकी स्पष्ट मानसिकता रहती है कि वे अपनी जाति के उन मुखर व सजग लोगों को पहचान सके जो अपनी संस्कृति और अपने इतिहास को सम्मानित करने की क्षमता रखते हैं। वे उन मुखर लोगों को भरोसा देने जाते हैं कि पूरी व्यवस्था व पूरा समाज ऐसे जीवट वाले लोगों को नमन करेगी जो दृढ़ता एवं निष्ठा से उनकी सामाजिक व नैतिक मूल्यों की सुरक्षा करेंगे- जो फिर किसी विध्वंसक, धूर्त और चालाक द्यमवेशी को उभरने से रोकेंगे। उनके विश्वास को कायम रखेंगे।

संभवत: जैसलमेर की धरती ने ऐसी परम्पराओं की पहल की थी- तभी तो राजकुमारी मूमल ने स्वयं की अस्मिता की सुरक्षा के लिए किसी उपयुक्त एवं समर्थ राजपुरुष को प्राप्त करने का ऐसा रास्ता अपनाया था। उसके प्रश्न गूढ़ थे- विवेक पूर्ण थे। उनका जबान देने वाला कोई मेधावी- साहसी और जीवट वाला देव पुरुष ही हो सकता था। राजकुमारी मूमल की भावनाओं को जो नहीं समझ पाए उन्होंने आधे अधूरे मन से ही प्रयास किए- उनके सीमित स्वार्थ ने मूमल के सौंदर्य एवं उसके स्वरूप से आगे सोचने ही नहीं दिया। अपनी स्वयं की पहचान और उसके लिए आवश्यक शौर्य, साहस और विवेक का उनमें अभाव था- वे किसी राजवंश के वंशज थे और इसी बैशाखी के सहारे वे आकाश की ऊंचाई छू लेने की मूर्खता करते रहे। वे असफल होते गए और विस्मृत कर दिए गए।

मास्टर कमरूद्दीन ने आगे कहा- ऐसे ही वातावरण में अमरकोट का गर्वीला- जोशीला एवं मेधावी राजकुमार अमर सिंह सोढ़ा जब राजकुमारी मूमल के सामने आया तो जैसे तेल बिजली कौंध गई। उसका रोबदार चेहरा उसकी सुन्दरता को निखार रहा था- राजकुमारी ने उसके हाव भाव देखने-उसकी चुस्ती व फुर्ती का अंदाज किया। उसकी सजग आंखें और चौकने कान बता रहे थे कि राजकुमार सीधा स्वर्ग से जमीन पर उतर कर

आया है- राजकुमारी अपने भाग्य पुरुष को निहारने लगी- परंतु शीघ्र ही संतुलित होकर उसने आदेश दिया कि सामने के क्ष का पर्दा हटाया जाए। अगले ही क्षण उस कक्ष का पर्दा हट गया- कक्ष में एक बबर शेर इस प्रकार दोनों पैरों के बल क्रोधित मुद्रा में खड़ा था मानों इशारा मिलते ही सामने आने वाले को चीर रख देगा।

वातावरण सहमा हुआ था- सब तरफ सन्नाटा था। राजकुमारी मूमल ने गंभीर व गहरी आवाज में राजकुमार से पूछा- क्या शेर का सिर ला सकोगे? प्रश्न पूरा होने के पहले ही मूमल ने देखा कि राजकुमार अमरसिंह अविचिलित और संयत भाव से शेर पर इस प्रकार झपटा कि पलक बंद होने से पहले ही शेर की गर्दन धड़ से अलग हो गई। सारे वातावरण में खुशियां बिखर गई। राजकुमार के जय घोष के साथ अकाश गूंजने लगा। शेर के नाम से तो बड़े-बड़े बहादुर भी कांपने लगते हैउससे मुकाबला करने वाला तो कोई महानायक ही हो सकता है। इसके लिए आत्मबल, सूझबूझ, फुर्ती और मेधा शक्ति जरूरी है और जिसमें ये गुण हो वह जीवन की हर कठिनाई-मुसीबत और चुनौती का मुकाबला करने में समर्थ होता है- राजकुमारी मूमल यही तो देखना और परखना चाहती थी- उसके स्वप्नों का राजकुमार ऐसा करने में सफल हुआ था।

राजकुमारी ममूल दूसरा प्रश्न करने से पहले अगले कक्ष का पर्दा उठवाया और आदेश दिया कि राजकुमार अमर सिंह सोढ़ा सामने बंधे जाल की गांठे खोलकर कक्ष के उस पार जावे। एक ही क्षण में राजकुमार ने अपनी तलवार से जाल को काट दिया और कक्ष के उस पार पहुंच गया। यही एक तरीका था जिससे जिन्दगी की गुथ्थियों को काट कर व्यक्ति सपाट स्थल पर दौड़ सकता है। यदि वह जिन्दगी की गांठे खोलने में ही उलझा जावे तो प्रगति एवं समृद्धि के राजपथ पर कभी नहीं पहुंच पाएगा जिन्दगी कोई स्थिर पाषाण पत्थर नहीं होती। वह तो सदा स्पनदंन करती रहती है- दौड़ना चाहती है और दौड़ते हुए आकाश की ऊंचाई धूने को आतुर रहती है। राजकुमारी मूमल ने देखा कि उसका देवपुरुष उसकी कल्पना से ही अधिक समर्थ व सजग था।

अचानक राजकुमारी सहज व भावुक बन गई । अपने तीसरा प्रश्न पूछने का ढंग बदलते हुए पास के कक्ष का पर्दा हटाते हुए उसने राजकुमार से अनुरोध किया कि आप थक गए होंगे, बेहतर होगा आप सामने के पलंग पर कुछ देर आराम फरमाए तो मैं अगला प्रश्न पेश करूंगी। राजकुमार सहम गया- अचानक इस भावुकता का कारण उसके समझ में नहीं आया। उसे लगा कि जिन्दगी को लोग बारबार छलते है- व्यक्ति की अपनी गफलत और नादानी से उसका पूरा जीवन बिखर जाता है। जीवन तो सिर्फ संघर्ष और सावधानी से ही संभव है। उसे लगा कि उसकी छोटी सी झूठ सी भूल से उसका वही हश्र होगा जो अब तक अन्य असफल राज पुरुषों का हुआ। वह सीधा पलंग के सामने खड़ा हुआ- एक क्षण उसने चिंतन किया और अपनी तलवार की नोक से उस पलंग के गलीचे को हवा में उछाल दिया- गलीचे के नीचे एक गहरा अंधकूप था, यदि राजकुमार ने नादानी से पलंग पर बैठने का प्रयास किया होता तो वह गहरे कूप में कहां खो जाता किसी को पता भी नहीं लगता। इतिहास साक्षी है कि सजगता, तत्परता और संघर्ष शक्ति के अभाव में कौमों का अस्तित्व तक समाप्त हो गया। भुलावे में भ्रमित स्वयं भगवान राम राजमाता सीता का अपहरण नहीं रोक के। राजकुमार ने न गफलत की और न भावुकता में बहे और न भुलावे में आए। राजकुमारी मूमल तो उसकी विलक्षण बुद्धि और सजगता पर निहाल हो रही थी किन्तु अभी भी उसकी परख अधूरी थी।

उसने चौथे कक्ष का पर्दा उठाया- सामने पानी का गहरा तालाब था- राजकुमार को आदेश दिया गया कि वह तैर कर दूसरे किनारे पहुंचे। प्रश्न सहज व साधारण था- तालाब का पानी स्थिर व साफ था- एक क्षण राजकुमार भ्रमित हुआ पर पुनः सहज होकर उसने अपने अंगरखे से एक सोने का गोला निकाला और उस तालाब में उछाल दिया। गोले की चोट से कांच का फर्श चूर-चूर हो गया और नीचे बहुत गहराई में कांच के टुकड़े पानी की रंग की सतह पर बिखर गए। यदि राजकुमार ने तालाब में तैरकर पार जाने की भूल की होती तो औंधे मुंह ऊपर से उस गहरे फर्श पर गिरते और तब स्वाभाविक तौर पर उनका शरीर टुकड़े टुकड़े होकर बिखर जाता। जिन्दगी में पागलपन और नासमझी से गोते लगाने वालों का यही अन्त होता है। जो सावधानी बरतते हैं वे ही किनारे पहुंच पाते है। राजकुमार की समझ तथा प्रौढ़ता ने राजकुमारी को पूर्ण आश्वस्त कर दिया। हर प्रकार से परखने और जांचने समझने के बाद राजकुमारी ने अमर सिंह सोढ़ा का वरण की स्वीकृति दे दी।

जैसलमेर की धरती की इस कहानी को सुनने के बाद मुझे लगा कि राजकुमारी मूमल ने एक महान इतिहास की रचना का प्रयास किया था- वहां की धरती के सोनल होने का रहस्य भी तभी मालूम पड़ा- इसकी माटी में सौंधी सौंधी महक है- गुणों को परखने व पहचानने की उसमें गजब की क्षमता है। अपने शौर्य एवं स्वाभिमान पर गर्व करने के उसके अनेकों कारण है।

जब मैंने मास्टर कमरूद्दीन को धन्यवाद दिया कि उन्होंने इतिहास को सजीव कर दिया तो वे भाव विह्वल हो गए। लगा वे कह रहे है कि अभी आप इस धरती पर दो दिन और रूकेंगे- अपनों को समझने के आपको ही दृढ़ने होगें पर हम सदियों से यह नहीं समझ पाए कि राजकुमारी मूमल ने सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् की खोज के हर संभव मोड़ को पार करने के बावजूद क्या पाया? और राजकुमार अमर सिंह सोढ़ा हर परीक्षण में सफल होते हुए भी सब कुछ क्यों गंवा बैठा?

उस कलाकार ने कहा कि राजकुमारी मूमल की दास्तांन अभी अधूरी है। उसने आग्रह किया कि वह दास्तांन हम पूरी सुने और बताएं कि उसकी परख और पहचान में क्या कमी रही- राजकुमार अमर सिंह सोढ़ा कहा चूक कर गए। उसने पुनः भावुकता से कहा- आप लोग इस धरती के मेहमान है- आपके समाज का सदियों का अपना अनुभव है, आपके अपने संस्कार और सभ्यता है। उसने कहा राजकुमारी मूमल एवं राजकुमार अमर सिंह सोढ़ा इतिहास गढ़ते गढ़ते गहन अतीत में खो गए। जैसलमेर की धरती सदियों से उन्हें भूल नहीं पायी। आज भी वहां की पीढ़ी दर पीढ़ी उस पीड़ा को झेल रही है।

मुझे लगा उस कलाकार के मन में ऐसी ही कोई टीस थी- कोई आशंका थी और संभवतः इसी वजह से वह कहना चाहता

था कि अपनों को समझने और पहचानने में हम में से हर कोई कहीं न कहीं ऐसी भूल जरूर करता है कि सारे समीकरण बनते-बनते बिखर जाते हैं। विश्वास टूट जाते हैं और इतिहास गढ़ने के पहले ही खंडित हो जाते हैं। इसीलिए जैसलमेर की माटी अपनी धरती पर खड़े उस हर व्यक्ति-व्यवस्था और समाज को राजकुमारी मूमल का रास्ता देकर सावधान करती है- उन्हें सजग करती है। उस कलाकार ने कहा कि हम चाहेंगे आपका समाज यहां एक इतिहास की रचना करके जावे। आपका समाज समर्थ, सौभाग्यशली एवं समृद्ध है- आप लोग प्रयास करें ताकि जैसलमेर की धरती उस अभिशाप से मुक्त हो सके कि यहां इतिहास बनते बनते बिखर जाते हैं।

मुझे लगा कलाकार ने एक एक सत्य को उजागर किया था- उस दिन शोभायात्रा में जैसलमेर का जन-जन पूरे उत्साह और उमंग के साथ शरीक हुआ था- उन्हें निश्चय ही एक विश्वास रहा था कि हमारा गौरवशाली समाज उनकी आकांक्षाओं को भी कोई मूर्त रूप देगा- उनमें भी एक नया भरोसा पैदा करेगा। शायद वे सोच रहे थे कि उनकी धरती सदियों के शाप से मुक्त हो जावेगी। परंतु ऐसा कुछ हो नहीं पाया।

राजकुमारी मूमल की आगे की दास्तांन कहते हुए उसने बताया कि उस दिन जैसलमेर में दिवाली के त्यौहार की रौनक हो गई- जोर शोर से खुशिया मनाई गई- तोरणद्वार सजाए गए- घर-घर मंगल गीत गाए गए और राजकुमार अमरसिंह सोढ़ा का शानदार स्वागत किया गया। तय हुआ कि अमरकोट से गाजे बाजे के साथ राजकुमार अपने परिजनों के साथ बारात लेकर आएंगे एवं राजकुमारी के साथ पूरी विधी विधान से शादी करेंगे।

इधर जैसलमेर से विजयी राजकुमारी अपने नगर अमरकोट रवाना हुआ और ढलती रात में जब वह नगर के पास पहुंचा तो हर आगंन- अटारी, मुंडेर और गली गली से गूंजते इन मीठे एवं मधुर स्वरों- **मोरयो मीठो बोल्यो रे ढलती रात में-** सुन कर वह खुशी से झूम उठा। उसे लगा अमरकोट की धरती तो थिरकने व नाचने लगी थी। हजारों हजार नवयौवनएं, नववधुएं, बहनें एवं माताएं थाल सजाकर अपने घरों के दरवाजे पर खड़ी हो गई। अनेकों अपने उत्साह को रोक नहीं पायी और नगर परकोटे के मुख्यद्वार की तरफ दौड़ी चली गई। परकोटे के मुख्य द्वार पर उन्होंने उस गर्विले का गौरवमय स्वागत किया- उसकी आरती उतारी। आज अमरकोट की माताएं निहाल हो गई थी- आज उनके लाडले ने अपने पुरखों को अमर कर दिया था- आज उसने अपनी कौम का मस्तक ऊंचा उठा दिया था। अपने कौशल, बुद्धि और पराक्रम के बल पर उसने अपनी जातीय गरिमा को ऊंचाई के उस शिखर पर पहुंचा दिया था कि जिसके लिए कौमे तरसती हैं। महीनों खुशियों का वातावरण छाया रहा- शादी का मुहूर्त जल्दी नहीं मिल रहा था। राज पुरोहितों की राय का आदर करते हुए तय किया गया शादी ठीक मुहूर्त पर ही सम्पन्न होगी और इसके लिए राजकुमार व राजकुमारी को कई माह इंतजार करना होगा।

परंतु राजकुमार तो मूमल से दूर एक क्षण भी नहीं रह सकता था वह बेहद बेचैन रहने लगा। सामाजिक मर्यादाएं उसे उतावला होने से रोकती रही और मानसिकता उसे उद्वेलित करती रही। आखिर एक रात राजकुमार वेश बदल कर अपनी विश्वस्त एवं सबसे तेज दौड़ने वाली ऊंटनी पर सवार होकर जैसलमेर पहुंच गया।

अपने को राजकुमार का संदेश वाहक बताते हुए सीधे राजकुमारी मूमल के कक्ष में प्रवेश करते हुए काई कठिनाई नहीं हुई। राजकुमारी ने सोढ़ा को देखा तो पुलकित होकर नाच उठी। वह भी तो उतनी ही व्यग्रता से राजकुमार की यादों में खोई रहती थी- हर क्षण वर्षों की दूरी लिए गुजरता था। अपने सामाजिक परिवेश परम्पराओं के बंधन और संस्कृति का पूरा सम्मान करते हुए मिलन का यह बेहतरीन रास्ता भी राजकुमार की तेजस्वी बुद्धि का चमत्कार थी। अब प्रतिदिन रात चढ़ते ही राजकुमार अमरकोट से रवाना होता और जैसलमेर में राजकुमारी के साथ घंटों रहता एवं रात ढलने के पहले ही वापस अमरकोट पहुंच जाता। उसकी ऊंटनी में गजब की गति थी। जब दौड़ती थी तो लगता था वह आकाश में उड़ रही है। उसे भी अपने राजकुमार की मर्यादाओं का भान था।

भाग्य की विडम्बना देखिए कि अमरकोट के राजमाता को यह बात मालूम हो गई कि राजकुमार प्रत्येक रात गायब रहते हैं। उन्हें आशंका हुई कि राजकुमार कहीं भटक तो नहीं गए। क्योंकि इतने कम समय में अमरकोट से जैसलमेर जाकर वापस लौट आने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। सच्चाई जानने के लिए एक दिन राजमाता ने राजकुमार की विश्वस्त ऊंटनी के पैरों में सीधी कीले गलवा दी। राजकुमार को इसका अंदाजा भी नहीं हो सका। वह तो प्रत्येक दिन की तरह समय पर राजमहल से रवाना होकर अपनी ऊंटनी पर सवार हुआ और जैसलमेर के रास्ते चल पड़ा। राजकुमार को अचरज और क्षोभ हो रहा था कि उसकी ऊंटनी सदैव की गति से दौड़ नहीं रही है- उसकी चाल धीमी थी और उसके पैर स्वाभाविक रूप से नहीं पड़ रहे थे। परंतु अब तो और दूसरा उपाय भी नहीं था। राजकुमार छटपटा रहा था और पूरी शक्ति से ऊंटनी को दौड़ाने का हर प्रयास करते हुए जैसलमेर की तरफ बढ़ा जा रहा था।

उधर समय पर जब राजकुमार मूमल के पास नहीं पहुंचे तो अधीर मूमल ने अपनी बहस सूमल को बुलाया। उसे राजकुमार के कपड़े पहनाए और मन बहलाने के लिए एवं राजकुमार का इन्तजार करने के लिए उसके साथ हास परिहास करती रही। परंतु अब तो राजकुमार को वापस लौटने का समय भी हो गया ता और वह अभी तक नहीं आया। मूमल सचमुच उद्वेलित होने लगी। उधर अल्हड़ सूमल राजकुमार के वेश में ही पलंग पर ही हो गई। मूमल को भी अचानक गहरी नींद ने घेर लिया और वह भी उसी पलंग पर समूल के साथ हो गई। जब राजकुमार वहां पहुंचा तो रात ढल रही थी उसकी विश्वस्त उंटनी ने आज उसको धोखा दे दिया। राजकुमार पहले ही परेशान और थका हुआ था और जब उसने राजकुमारी मूमल को एक अन्य राजकुमार के साथ एक ही पलंग पर सोये देखा तो उसका खून उबल पड़ा। इच्छा हुई कि उसी क्षण दोनों के सिर धड़ से अलग कर दे पर पता नहीं वह क्यों शांत हो गया और अपनी कटार मूमल और सूमल के बीच रखकर वापस लौट गया। उंटनी छटपटा रही थी- उसकी पीड़ा असहनीय थी। राजकुमार ने देखा उसके पैर लहूलुहान हो रहे थे उनके लोहे की सीधी कीलें गड़ी हुई थी। उसने उन कीलों

को खींच कर निकाला और फिर उसे सहलाया- थपथपाया और उस पर सवार होकर भारी मन से अमरकोट रवाना हो गया।

राजकुमार सोढ़ा जीवन में इतना निराश कभी नहीं हुआ था- इतना उद्वेलित भी इससे पहले वह नहीं हुआ था। एक अजीब मन: स्थिति में वह जैसलमेर से अमरकोट की तरफ बढ़ रहा था- उसे अपने आप पर ग्लानि हो रही थी कि अपनी ऊंटनी की धीमी गति का कारण जानने का विलंब प्रयास क्यों नहीं किया। वह समझ नहीं पा रहा था कि उसकी ऊंटनी के पैरों के कीलें गाड़ने का जघन्य अपराध किसने किया- ऐसा करने का किसी का क्या मकसद था- ऐसा करके किसी को क्या मिला। उसकी विश्वस्त ऊंटनी भी आज जार जार रो रही थी। अगर वह बोल पाती तो चिल्ला चिल्ला कर कहती कि मानवीय रिश्तों को आज तक पूरी मानवता भी ठीक से नहीं पहचान पाई फिर मूक जानवर उनके व्यवहार को कैसे समझे? वह कहना चाहती थी कि **यह शास्वत नियम है कि जब घर के दिए की बाती उस घर के चूहें चुराने लगे तो यकीन रखिए उस घर में एक न एक दिन आग जरूरी लगती है।** जब स्वयं राजमाता ही अपने पुत्र पर संदेह करने लगे तो विश्वास किस पर किया जाए। ऊंटनी और भी बहुत कुछ कहना चाहती थी पर राजकुमार जिस भाषा को समझ सके ऐसी भाषा वह कहां से लाती। ऊंटनी आहिस्ते आहिस्ते चल पा रही थी मंथर गति से चल रही ऊंटनी पर सवार राजकुमार सोढ़ा एक जिंदा लाश की तरह बैठा था। राजकुमार ने तेज जाने का कोई प्रयास नहीं किया वह सब कुछ जीत कर भी सब कुछ हार गया था।

उधर राजकुमारी मूमल सुबह होते ही जब उठी तो राजकुमार सोढ़ा की कटार अपने तथा अपनी बहन मूमल के बीच पड़ी देखकर सहम गई। उससे बहुत बड़ी चूक हो गई थी- उसकी गफलत और नादानी ने अनर्थ कर दिया था। सोढ़ा की कटार देखकर ही उसे लगा कि राजकुमार नाराज होकर लौट गया है। कितनी कठिन साधना के बाद उसने अपने स्वप्नों के राजकुमार को प्राप्त किया था और आज उसकी भूल से एक क्षण में ही वह उससे दूर चला गया- इसी ख्याल मात्र से मूमल सिहर उठती थी। अपनी छोटी बहन समूल को राजकुमार के कपड़े पहनाना क्या जरूरी था? फिर उसने ऐसा क्यों किया? कहीं सोढ़ा गलतफहमी का शिकार तो नहीं हुआ? क्या राजकुमार सोढ़ा भी मानवीय ईष्या से ग्रस्त हो सकता था? मूमल बारबार अपने को कोसती रही कि क्यों वह गाफिल होकर सो गई। उसकी उस छोटी सी गफलत ने ही तो सारे समीकरण बिखेर दिये थे। यदि वह सावधान रहती- सजग रहती और जागरूक रहती तो राजकुमार सोढ़ा नाराज होकर नहीं लौट जाता। शायद सब मूमल को राजकुमार के वेश में देखकर वह ज्यादा प्रफ्फुलित एवं खुश होता परंतु अब तो सारा खेल बिगड़ गया था।

उसे लगा कि अब तक तो राजकुमार वापस अमरकोट पहुंच गया होगा। उसने अपने को आश्वस्त किया कि संभवत: अगली रात वह सोयेगी नहीं और राजकुमार का इंतजार करेगी उससे अपनी भूल की माफी मांगेगी। परंतु मूमल कई रातें जागती रही और राजकुमार का इंतजार करती रही। परंतु सोढ़ा फिर जैसलमेर नहीं आया। विवश होकर मूमल स्वयं एक दिन जैसलमेर से रवाना होकर अमरकोट गई। राजकुमारी मूमल का संदेश वाहक के रूप में प्रस्तुत करके वह सीधे राजकुमार के कक्ष में पहुंची तो मालूम हुआ कि जैसलमेर से लौटने के बाद राजकुमार निराश तथा खामोश रहने लगे थे। उनका मन हमेशा उखड़ा-उखड़ा रहता था। वे राजमाता से भी बात नहीं करते थे। बार-बार बड़बड़ाते थे कि मूमल निष्ठावान क्यों नहीं रही। उन्हें लगता था मूमल ने उसके साथ छल किया था- उसके पौरुष और विश्वास का मजाक उड़ाया था। उसे लगता कि जैसलमेर की राजकुमारी पर भरोसा करना ही उसकी नादानी और सबसे बड़ी भूल थी। इसी अवस्था में एक दिन राजकुमार को काले विषधर ने डस लिया था और थोड़ी देर पहले ही उनका देहान्त हो गया था। मूमल ने सोढ़ा की लाश को देखा और फफक-फफक कर रो पड़ी- कहते हैं मूमल सोढ़ा की लाश के साथ लिपट गई और उसी क्षण उसने अपनी देह त्याग दी।

यह जैसलमेर की धरती कि विडम्बना थी कि अपनी अद्वितीय सुन्दरी राजकुमारी को डोली में बिठाकर विदा नहीं कर पायी- अमरकोट का यह दुर्भाग्य रहा कि अपने विजयी राजकुमार का अभिवादन नहीं कर पाया। मूमल अब ब्याही चली गई और राजकुमार अपना दर्द किसी के साथ बांट नहीं पाया। संघर्ष, बलिदान और पराक्रम की एक दास्तांन बुझ गई थी। सोढ़ा और मूमल इतिहास रचते अतीत में खो गए और मानवीय मूल्यों पर एक प्रश्न चिन्ह लगा गए। मेधावी एवं भरपूर कौशली के धनी दोनों ही मानवीय मूल्यों पर एक प्रश्न चिह्न लगा गए। मेधावी एवं भरपूर कौशल के धनी दोनों ही मानवीय संवेदनाओं के आघात सहन नहीं कर सके। उनके अपनों ने ही उनको ठगा, भ्रमिक किया और एक महान इतिहास को बनने से पहले ही बिखेर दिया।

मूमल- सोढ़ा की अमरकथा यहां की धरती भूल नहीं सकी। जैसलमेर से अमरकोट की वादियों में गुजरते हर मुसाफिर को मूमल और सोढ़ा अपना वास्ता देकर पूछते है कि क्या हम अपनी पीढ़ी को आश्वस्त कर पाए कि उनकी समृद्धि के लिए हम वचनबद्ध रहेंगे, उनके विश्वास को भंग नहीं होने देंगे। जैसलमेर से लौटने के बाद कई बार सोचता रहा कि क्या जैसलमेर की धरती को उसके शाप से मुक्ति मिली- क्या वहां के जन जन के भरोसे व विश्वास को हम मूर्त रूप दे पाए। मूमल और सोढ़ा विश्वास घात के शिकार हुए थे- उनके साथ छल हुआ था। तब मानवीय आस्थाओं को कपट और क्रूरता से कुचला गया था- अमरकोट में सोढ़ा के साथ हुए विश्वासघात ने जैसलमेर तक पहुंचते पहुंचते उसके मन के एक विश्वास का संकट पैदा कर दिया था। इसी विश्वासघात और विश्वास के संकट ने जैसलमेर को अभिशप्त कर दिया और सोने का दुर्ग माटी बन कर रह गया। **जो कौमों अपनी पीढ़ी दर भरोसा नहीं करती उनके शौर्य, साहस और क्षमताओं को प्रोत्साहित नहीं करती उनके विनाश और विघटन को कोई नहीं बचा सकता।** हम मूमल और सोढ़ा को तो आश्वस्त करने की क्षमता नहीं रखते परंतु अपनों को भरोसा देने की हमारी अपनी जिम्मेदारी है। अपनी जिम्मेवारी का ईमानदारी से निर्वाह करके ही हम अपनी अस्मिता बचा पाएंगे। आइए हम संकल्प करे कि अपनी पीढ़ी के लिए हम अभिशाप नहीं बनेंगे। फिर कोई मूमल तथा सोढ़ा इतिहास रचने से वंचित नहीं होगे।

धार्मिक क्रियाकल्पों में धन व वैभव प्रदर्शन की अतिरेकता

✍ सत्यनारायण सिंहानिया, अध्यक्ष, अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन, कानपुर शाखा

प्रत्येक सम्प्रदाय में धार्मिक क्रियाकल्पों, अनुष्ठानों, उत्सवों, प्रवचनों का विशेष महत्व है और समय-समय पर इस प्रकार के आयोजनों से हम रूबरू भी होते रहते हैं किन्तु हिन्दू समाज में धार्मिक क्रियाकल्पों की बहुतायत देखने को मिलती है, इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि हिन्दू समाज में अन्य सम्प्रदायों से ज्यादा व्यक्ति धार्मिक है अथवा उनकी धर्म में अधिक आस्था है। जहां तक हमने इस तथ्य पर चिन्तन और मंनन किया है तो मेरे विचार से यह बात उजागर होती है कि हिन्दू समाज में शास्त्र और ग्रंथों के अनुसार तैंतीस करोड़ देवी एवं देवता है और इनके अतिरिक्त प्रत्येक जाति एवं संस्कृति के अनुरूप कुलदेवी एवं कुलदेवता की भी मान्यता है, ऐसी स्थिति में समाज के विभिन्न वर्गों की आस्था विभाजित होकर अलग-अलग देवी देवताओं पर केन्द्रित होना स्वाभाविक ही है और यही कारण है कि हिन्दू समाज में धार्मिक क्रियाकल्पों की बाढ़ सी आ गई है।

अब हम कानपुर महानगर की ओर ही दृष्टिपात करें तो हिन्दू समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस बात से सनकार नहीं कर सकता है कि कानपुर में गत दशक में जितने धार्मिक उत्सव सम्पन्न हुए हैं वह अपने आपमें एक रिकार्ड है। शहर के विभिन्न स्थलों पर धार्मिक अनुष्ठान, उत्सव, प्रवचन, यम आदि का बोलबाला रहा है किन्तु विशेष तौर पर फूलबाग मैदान इन आयोजनों का सबसे बड़ा स्थल बन कर उभरा है। कानपुर नगरवासियों को इस मैदान व इससे जुड़े गणेश उद्यान में धार्मिक गतिविधियों का साक्षात्कार करने का वर्ष में लगभग ३०-४० बार अवसर प्राप्त होता है। धार्मिक संस्थाओं द्वारा इस स्थल पर अपने इष्टदेव व देवियों का वार्षिक उत्सव, स्थापित एवं पूज्यनीय सन्तों का प्रवचन, कुलदेवी देवता का वार्षिक मंगल उत्सव, महात्माओं के सान्निध्य एवं निर्देशन में अनेकानेक यज्ञ, अनुष्ठान, रामकथा पान, कृष्ण रासलीला, भजन गायकों का भजनों द्वारा सम्मोहन, श्रीमद् भागवत कथा सप्ताह आदि धार्मिक कार्यकलापों का निरन्तरता प्राप्त हो रही है और दिनोंदिन इसका विस्तार होता जा रहा है। इस संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि प्रत्येक आयोजन भव्यता ,दिव्यता में अपने पुराने रिकार्ड को ध्वस्त करता तथा अन्य आयोजनों से प्रतिस्पर्धा करता सा प्रतीत हो रहा है, साथ ही साथ एक ही इष्टदेव के नाम से संगठित धार्मिक संस्थाएं उन्हीं के लिए अपने आयोजन अलग-अलग तिथियों पर करती है और प्रत्येक आयोजन में औसतन १० लाख से १२ लाख रुपये का व्यय आता है। इन आयोजनों का खाका खींचने से मेरा तात्पर्य यह है कि कानपुर के फूलबाग मैदान पर ही हिन्दू समाज के धार्मिक आयोजनों के नेतृत्व द्वारा अनुभावत: ३ करोड़ रुपया वार्षिक व्यय किया जा रहा है। धार्मिक संस्थाओं के पुरोधा हिन्दू समाज की धार्मिक निष्ठा एवं भावनाओं का दोहन कर दान एवं अनुदान के रूप में धन एकत्र कर मात्र २४ घंटे के अन्तराल में इस गाढ़े पसीने की कमाई को परमेश्वर के चरणों में अर्पित कर अपने वैभव, यश, क्षमता एवं योग्यता का गुणगान कर स्वयं को समाज में प्रतिष्ठित करने का पुरोजार प्रयास करते है। मैं यह मानता हूं कि धार्मिक आयोजनों द्वारा मन, चित्त एवं वातावरण की शुद्धि होती है और मन विकार रहित हो जाता है किन्तु इन आयोजनों में बढ़ रही प्रतिद्वंद्विता व स्वयं को स्थापित करने की जिज्ञासा हिन्दू समाज के लिए आने वाले समय में घातक ही सिद्ध होगी क्योंकि धन व वैभव का खुला प्रदर्शन इन आयोजनों में स्पष्ट झलकता है। क्या हमारा प्रभु इन आयोजनों से रीझ रहा है, क्या हम और हमारे परिवार में सात्विक बुद्धि का विकास हुआ है, क्या हम मानवतावादी उदार दृष्टिकोण के नजदीक भी फटक पाये है, क्या हम परमपिता की जरूरतमंद सन्तानों के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाकर उन्हें संतुष्ट कर सके है, क्या हम ईर्ष्या, द्वेष, दम्भ, अहंकार के तम से बाहर निकल सके हैं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर यदि हम अन्तर्मन से खोजने बैठे तो मेरे विचार में उत्तर नकारात्मक ही होगा। जब हम इन आयोजनों से अपने चित्त के वातावरण को शुद्ध नहीं कर पाये तो समाज के धन को इस तरह अपव्यय करने का क्या लाभ है और क्या हम वास्तव में इसके अधिकारी भी हैं।

इन तथ्यों को उजागर करने से शायद अधिकांश भाई बहन मुझे नास्तिक समझ कर ह्रेय दृष्टि से देखे किन्तु इससे मुझे कोई अन्तर नहीं पड़ता है। वास्तविकता व सत्य अपने यथार्थ एवं शाश्वत रूप में ही शोभा देता है और उस पर बनावटीपन का मुलम्मा चढ़ा देने से वह छिप नहीं सकता है और एक न एक दिन उभर कर सामने प्रकट होता ही है और आज आवश्यकता इस बात की है कि धार्मिक आयोजक इस तथ्य को स्वीकारें और अपने कार्यक्रमों में बदलाव करें। समाज में फैल रही जड़ता, एकात्मता, स्वार्थसिद्धि का निवारण तथा दलित एवं जरूरतमों के प्रति विशुद्ध मानवीय दृष्टिकोण आज की महती आवश्यकता बन चुका है और धार्मिक, सामाजिक एवं स्वयंसेवी संस्थाओं को इस दिशा में अग्रसर होना ही होगा और यदि हम इस पवित्र पथ पर चल पड़े तो सच्चे अर्थों में हम अपने परमपिता के प्रिय बंदे के रूप में स्थान प्राप्त करने के अधिकारी बन जायेंगे।

धार्मिक आयोजनों को परिष्कृत रूप में आयोजित कर असहाय एवं दीन दुखियों की सहायता के क्षेत्र में कदम बढ़ाना अत्यंत प्रशंग्नीय एवं उपयोगी कदम सिद्ध होगा और इस दिशा हेतु धार्मिक आयोजकों से मेरा करबद्ध निवेदन अल्पबुद्धि अनुसार इस प्रकार है-

१. समस्त धार्मिक संस्थाएं स्वत्व व प्रतिष्ठा को त्याग कर एकत्र हो और सिद्धान्त रूप में सहमत होकर एक विशाल भूखण्ड कम करें जिसमें विनयोग के अनुसार स्वामित्व प्राप्त हो।

२. इस भूखण्ड का निर्माण इस प्रकार हो जिसमें सभी इष्टदेव व कुलदेवी एवं देवताओं जिनकी हिन्दू समाज बहुतायत में पूजा अर्चन करता है उनकी मूर्ति स्थापित हो तथा विशाल सत्संग कक्ष (हाल) का निर्माण किया जाए।

३. इसी निर्मित धर्म भवन में पूजा अर्चना की सुविधा के साथ-साथ समस्त धार्मिक आयोजन भी किये जायें।

४. धर्म भवन के अन्य भाव में धर्मार्थ चिकित्सालय, विद्यालय एवं स्वावलम्बन हेतु महिलाओं एवं पुरुषों हेतु रोजगारपरक कार्यक्रम संचालित किये जायें।

मैं समझता हूं कि वर्ष भर में धार्मिक आयोजनों में नगर वासियों का जितना धन व्यय होता है, उतने ही धन में प्रारंभिक चरण में हम उक्त परियोजना को पूर्ण कर चमत्कारी धार्मिक कार्यक्रमों का श्री गणेश कर सम्पूर्ण देश को नयी दिशा प्रदान कर सकेंगे और समस्त धर्मावलम्बियों को आत्मिक संतोष भी प्राप्त होगा और समाज सेवा व धर्म अनुष्ठान का अनूठा संगम भी दृष्टिगोचर होगा।

पूर्वी भारत में राजस्थानी भाषा

✍ डॉ. मनोहर लाल गोयल

पूर्वी भारत का मतलब मुख्य रूप से बंगाल, बिहार, असम, झारखंड और उड़ीसा है। कभी यह पूरा क्षेत्र लगभग एक ही शासन के अंतर्गत रहा है। मुगलों के शासनकाल में अकबर के समय यह क्षेत्र उनके माल और सिपहसालार राजा मानसिंह के प्रशासन में था। तब राजस्थानियों का इस क्षेत्र में आना जाना शुरू हुआ। प्रचुर मात्रा में राजस्थानी भाषियों का पूर्वी भारत में प्रवासन हुआ। राजस्थानी सैनिक आए और सेना के लिए रसद की आपूर्ति करने वालों का वर्ग यानी व्यापारी समुदाय भी। आज इनकी संख्या लाखों लाख है। मजे की बात यह है कि राजस्थान से हजारों किलोमीटर दूर रहते हुए और स्थानीय लोगों के साथ समरस हो जाने के बाद भी ये प्रवासी सांस्कृतिक रूप से राजस्थान से जुड़े रहे हैं। भाषा के मामले में ये राजस्थान से भी चार कदम आगे हैं। राजस्थान में भले ही राजस्थानी भाषा की उपेक्षा होती रही हो, परंतु प्रवासी राजस्थानी इसे अपने स्तर से अपनाये हुए हैं और इसके प्रचार प्रसार का कार्य भी कर रहे हैं। पूर्वी भारत के कई शहरों में राजस्थानी भाषियों की आबादी इतनी अधिक और गहन है कि उन खास क्षेत्रों को मिनी राजस्थान भी कहा जाता है।

राजस्थान से बाहर आकर बसे राजस्थानियों की पहचान मारवाड़ी के रूप में है। इनमें वे भी शामिल हैं जो राजस्थान से सटे, हरियाणा या मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र के मूल निवासी है, पर सांस्कृतिक रूप से वे राजस्थानी ही हैं। इनकी भाषा मारवाड़ी है जो राजस्थानी का ही एक रूप है। इन प्रवासियों में से अधिकांश अपनी मातृभाषा बोलते-समझते हैं और इसका उन्हें गर्व भी है। वे राजस्थानी भाषा की पुस्तकें पत्र-पत्रिकाएं और समाचार पत्र पढ़ना चाहते हैं। लेकिन इनकी अनुपलब्धता इन्हें निराश कर देती है। यही कारण है कि इस क्षेत्र के अखबारों में उन्हें कहीं भी अपनी मातृभाषा दिख जाती है तो वे उसे चाव से पढ़ते है। हिन्दी अखबारों के सम्पादक अपने अखबारों के राजस्थानी भाषी पाठकों की इस रूचि के प्रति सजग रहे हैं और उनकी मांग पूरी करने का प्रयास भी करते रहे हैं। पटना से लेकर रांची तक, गुवाहाटी से लेकर जमशेदपुर तक और धनबाद से लेकर कोलकाता तक के हिन्दी समाचारपत्रों में राजस्थानी साप्ताहिक स्तंभ छपते रहे हैं और राजस्थानी भाषी पाठक उन्हें चाव से पढ़ते रहे हैं। कोलकाता से प्रकाशित दैनिक सन्मार्ग, विश्वमित्र, जनसत्ता, रूपलेखा, छपते-छपते, प्रभात खबर, सेवा संसार, गुवाहाटी से प्रकाशित पूर्वांचल प्रहरी-रांची से प्रकाशित रांची एक्सप्रेस, प्रभात खबर, जमशेदपुर से प्रकाशित आवाज, प्रभात खबर, धनबाद से प्रकाशित बिहार ओबजर्बर, जनमत, प्रभात खबर, पटना से प्रकाशित प्रभात खबर, आज तथा अन्य कई दैनिकों, साप्ताहिकों, पाक्षिकों में राजस्थानी स्तंभ छपते रहे हैं। नई शुरूआत दैनिक जागरण के जमशेदपुर संस्करण ने की है। डा. मनोहरलाल गोयल का राजस्थानी स्तंभ- 'मरूधर री महक' इसी वर्ष अगस्त से प्रति सप्ताह जागरण सिटी पेज पर छपने लगा है।

पूर्वी भारत से प्रकाशित हिन्दी अखबार राजस्थानी स्तंभ का प्रकाशन करें, इसके लिए जमशेदपुर की राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति परिषद ने बड़े पैमाने पर प्रयास किया है। राजस्थानी कालम लेखन की मांग को परिषद के संस्थापक व महामंत्री मनोहरलाल गोयल ने पूरा किया है। वे उपरोक्त में से अधिकांश में राजस्थानी स्तंभों का लेखन करते रहे हैं। इस क्षेत्र के अन्य राजस्थानी स्तंभ लेखकों में प्रमुख रहे है- सर्वश्री रत्नेश जैन- रांची, इन्द्रजी, प्रो. शिवकुमार, स्व. भगवती प्रसाद चौधरी (सभी कोलकाता) आदि। चौधरीजी कोलकाता से प्रकाशित राजस्थानी साप्ताहिक 'मरूदूत' में व्यंग्य लेख तथा सांध्य दैनिक सेवा संसार में प्रतिदिन, सुण म्हाणी, कविता स्तंभ लिखते थे। प्रो. शिवकुमार के राजस्थानी व्यंग्य- कुंभकरणी नींद, थारा भाषण म्हे भोत सुण्या, अफसर अठे बिकाऊ, वह पसंद नी आई है, टाटा में त्रिवेणी धारा, डा. मनोहरलाल गोयल की पुस्तकों को आधार बनाकर लिखे गए हैं जो काफी चर्चित रहे। डा. मनोहरलाल गोयल रांची से प्रकाशित प्रभात खबर में १९९१ से लेकर २००३ तक (तेरह वर्षों तक) प्रति सप्ताह लिखते रहे हैं। यह स्तंभ प्रभात खबर के पटना, रांची, जमशेदपुर, धनबाद और कोलकाता से प्रकाशित पांचों संस्करणों में छपता रहा है।

राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति परिषद विगत दो दशक से राजस्थानी भाषा के प्रचार प्रसार और साहित्य के उन्नयन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आयी है। कई राजस्थानी भाषा की पुस्तकों का प्रकाशन किया है। भाषाई एकता के उद्देश्य से हिन्दी, भोजपुर और राजस्थानी भाषा में एक त्रिभाषी वार्षिकी का प्रकाशन करती रही है। विशाल आयोजन कर कई राजस्थानी साहित्यकारों, भाषा प्रेमियों को सम्मानित किया है। दर्जनों हिन्दी समाचार पत्रों में राजस्थानी भाषा का कालम प्रकाशित करवाया है। परिषद द्वारा सम्मानित बंधु है- श्री रतन शाह, स्व. रामगोपाल अग्रवाल, सीताराम जगतरामका, स्व. शंकर ताम्बी आदि।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, स्मारिकाओं में राजस्थानी भाषा की रचनाएं छापने का चलन बढ़ा है। कुछ राजस्थानी भाषा की पत्रिकाएं भी इस क्षेत्र से निकली हैं। साप्ताहिक मरूदूत कोलकाता से, मासिक नैणसी (सम्पादक डा. अम्बू शर्मा) कोलकाता से तथा छमाही आप्पां राजस्थाणी (सम्पादक पं. योगेन्द्र शर्मा), भागलपुर से पाक्षिक लाडेसर (स. रतन जोशी), कोलकाता से साप्ताहिक 'किरण', खड़गपुर से और त्रिवेणी धारा का राजस्थानी खंड मरुधारा प्रकाशित होती रही है। इनसे यह प्रमाणित होता है कि पूर्वी भारत में बसे राजस्थानियों में अपनी भाषा के प्रति ललक है और यह इस क्षेत्र में लोकप्रिय भाषा है। राउरकेला से प्रकाशित राजस्थान परिषद की पत्रिका 'अमर संकल्प' और साहित्यकार श्रवण पारिक का भी राजस्थानी भाषा के प्रति योगदान है।

कन्हैयालाल सेठिया- राजस्थानी भाषा में स्थापित और अति लोकप्रिय नाम। धरती

धोरा री गीत ने इनकी ख्याति घर-घर में पहुंचायी। साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त। 'सबद' पुस्तक पर राजस्थानी बीकानेरी अकादमी का सर्वोच्च सूर्यमल मिश्रण शिखर पुरस्कार भी प्राप्त। सन् १९८४ में साहित्य मनीषी का सम्मान और उपलब्धि प्राप्त। आपकी रचनाओं से राजस्थानी भाषा और राजस्थानियों में नई चेतना जागृत हुई। प्रमुख राजस्थानी पुस्तके हैं- पातल और पीथल, रमणिये रा सोरठा। मीझार, गलगचिया, कूंकूं, मायड़ रौ हलौ, दीढ, सतवाणी। निवास स्थान- कोलकाता।

कोलकाता निवासी भगवती प्रसाद चौधरी का नाम राजस्थानी भाषा के चर्चित कवि, साहित्यकार और स्तंभकार के रूप में जाना जाता है। चौधरी जी को बीकानेरी अकादमी का पुरस्कार भी मिला था।

डा. सुनीति कुमार चाटुर्या- राजस्थानी के कवि या साहित्यकार नहीं थे। लेकिन बंगाली होते हुए भी ये राजस्थानी भाषा के प्रबल हिमायती थे। इनके प्रयास से ही राजस्थानी भाषा को दिल्ली की केन्द्रीय साहित्य अकादमी की साहित्यिक भाषा के रूप में मान्यता मिली थी और अकादमी द्वारा मान्य बाइस भाषाओं में राजस्थानी को स्थान मिला था। बंगाल और राजस्थान के बीच निकटता और आपसी समझदारी का कारण कर्नल टॉड की पुस्तक- 'राजस्थान' बना। इस पुस्तक से बंगाली साहित्यकार विशेष प्रभावित हुए हैं। राजस्थानी भाषा के लिए डा. चाटुर्या का योगदान अनुकरणीय और वन्दनीय है।

रतन शाह- कोलकाता। राजस्थानी भाषा के प्रबल पक्षधर और इस दिशा में कार्यरत। राजस्थानी प्रचारिणी सभा का संचालन करते हैं। राजस्थानी भाषा की पाक्षिक पत्रिका 'लाडेसर' का सम्पादन प्रकाशन कर चुके हैं।

अम्बू शर्मा- कोलकाता से प्रकाशित राजस्थानी पत्रिका नैणसी के सम्पादक/ प्रकाशक। पूरा नाम- अम्बिका चरण महमिया। राजस्थानी कवि लेखक। अनेक राजस्थानी पुस्तकें प्रकाशित। राजस्थानी रामायण की रचना और प्रकाशन एक प्रमुख काम। 'हनुमान सरावगी- रांची। राजस्थानी भाषा के पक्षधर। अखिल भारतीय राजस्थानी भाषा संघर्ष समिति के प्रमुख।

प्रो. शिवकुमार शर्मा- कोलकाता। लेखक, स्तंभकार। बंगला साहित्य में राजस्थान (दो भाग) का लेखन प्रकाशन। यह शोध ग्रंथ आपकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

राय बहादुर रामदेव चोखानी। राजस्थानी भाषा को समर्पित रहे। राजस्थान रिसर्च सोसाइटी ने आपकी अध्यक्षता में महत्वपूर्ण शोध कार्य किए और अनेकों पुस्तकों की खोज एवं प्रकाशन किया।

शंकरलाल हरलालका- राजस्थानी पत्रिका 'मरूदूत' का सम्पादन / प्रकाशन।

घनश्याम आचार्य- राजस्थानी गीतों के रचनाकार।

जी.एल. अग्रवाल- गुवाहाटी से प्रकाशित दैनिक पूर्वांचल प्रहरी के सम्पादक, जिन्होंने मातृभाषा को सुदूर पूर्व में सम्मान दिया।

रतनलाल जोशी- राजस्थानी समाज पत्रिका के सम्पादक।

सीताराम जगतरामका- खड़गपुर। इन्होंने वर्षों राजस्थानी साप्ताहिक 'किरण' का प्रकाशन/ सम्पादन किया।

परमेश्वर गोयल- पूर्णिया (गुलाबबाग), बिहार के एक मात्र सफल राजस्थानी मंचीय कवि/ गद्य पद्य में काफी रचनाएं प्रकाशित/ राजस्थानी में कई पुस्तकें भी। उपनाम- काका बिहारी।

राधेश्याम खेतान- राजस्थानी में कविता पुस्तक 'कांचली' प्रकाशित। रामनिवास अग्रवाल- रायरंगपुर, श्याम केसरा- कटक, नथमल केडिया और नौरतन भंडारी- कोलकाता, भामचंद अग्रवाल 'बसंत- जमशेदपुर, मंजू मेहारिया- बोकारो, नरेश बंका- रांची, जयकुमार रूसवा- कोलकाता आदि का योगदान भी मातृभाषा राजस्थानी के प्रति है।

लगभग ६-७ दशक पूर्व दिनाजपुर (बंगाल) में हुए विशाल राजस्थानी सम्मेलन ने यह आगाज दे दिया था कि राजस्थानी भाषा के प्रचार प्रसार और विकास में पूर्वी भारत का विशेष योगदान रहेगा।

इस लेखक ने भी दो दशकों से भी अधिक समय से राजस्थानी भाषा के प्रचार प्रसार में हर संभव योगदान किया है।

आत्मचिंतन

जो जाति मरना जानती है, वही जाति जिंदा रह सकती है, का उद्घोष हमारे प्राचीन धर्म ग्रंथों में वर्णित है। इतिहास में हमारे सामने एक नहीं, अनेकों उदाहरण मिल जाएंगे कि अपनी जाति या जातीय स्वाभिमान के लिए जिस किसी समाज या जाति ने संघर्ष किया, जीत उन्हीं की हुई। उदाहरण चाहे राम रावण के युद्ध का हो या महाभारत अथवा हमारे स्वाधीनता आन्दोलन का। चीन, फ्रांस और रूस की खूनी क्रांति भी स्व अस्तित्व और जातीय सम्मान को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए ही छेड़ी गयी थी जिसमें अंतत: जीत हासिल होकर ही रही। महाराणा प्रताप ने भी तो अपने स्वाभिमान के लिए कितने कष्ट उठाए, इतिहास के पन्ने उसके गवाह है। दोस्तों, यह सब कहने के पीछे मेरा तात्पर्य है कि आज हमारा मारवाड़ी समाज भी संकट में है। आप शायद सुनकर आश्चर्य में पड़ गए होंगे। आज मारवाड़ी समाज के सामने उसके अस्तित्व, सम्मान और रोजगार के साथ-साथ दिखावे आडम्बर आदि समस्याएं है, जिनसे समाज को लड़ना है। जब हम रोजगार की बात करतेहैं, तो कहा एक समय था कि देश के दस शीर्ष उद्योगपतियों में आधे हमारे समाज के लोग ही होते थे, लेकिन आज यह आलम है कि मुश्किल से एकाध नाम ही स पंक्ति में आता है। हमें अपने व्यापार के तौर तरीकों में परिवर्तन करनाहोगा। आज के कंप्यूटर युग में इस कछुआ चाल को त्यागना होगा और मेहनत भी अधिक करनी होगी। कुछ सालों से समाज की प्रगति की रक्षा इसलिए नीचे की ओर चली जा रही है कि हम पहले की अपेक्षा कम मेहनती और अधिके ऐशो आराम तलब हो गए और यही कारण है कि हम प्रगति की दौड़ में पीछे छूटते जा रहे हैं। हमारा फालतू का दिखावा और आडम्बर भी हमारे पतन का कारण है। यह न केवल समाज की अस्मिता और सम्मान पर चोट पहुंचा रहा है बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ी को भी खोखला कर देगा। आवश्यकता है अभी से चेतने की। इस दिखावे ने जहां इतर समाज में हमें घृणा और शक की नजरों से देखा जा रहा है। आज आवश्यकता है इन सब समस्याओं के प्रति संघर्ष करने की, लड़ने की, तभी हम उपरोक्त वर्णित बुराइयों और समस्याओं से छुटकारा पा एक सुनहरा समाज बढ़ने में सक्षम होंगे।

- डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल, अध्यक्ष
बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

जाहि विधि 'रहे' राम, ताहि विधि रहिए

✍ जुगलकिशोर जैथलिया

आप संभवत: शीर्षक पढ़कर चौंक रहे होंगे, क्योंकि हमारे समाज में तो यही उक्ति प्रचलित है- 'जाहि बिधि राखे राम, ताहि बिधि रहिए'। इस उक्ति ने हो सकता है प्रयत्नों से हारे किसी व्यक्ति या समाज को जीने का सहारा दिया हो, पर यह हमारे तेजोभंग का भी कम कारण नहीं बनी है। इस उक्ति में परिस्थितियों से थककर, मनको समझाकर संघर्ष से विरत होने का सहारा तो ढूंढा जा सकता है पर परिस्थितियों को चुनौती देकर योग्य परिवर्तन होने तक सतत संघर्ष में रत का आह्वान कहां है? प्रभु श्री राम के जीवन का संदेश तो थककर बैठने या आत्ममुग्ध होकर संतोष कर लेने का नहीं रहा है, वह तो दुष्टों का विनाश कर सज्जन शक्ति एवं शाश्वत सनातन धर्म की पुनर्प्रतिष्ठा होने तक संघर्षरत रहने का रहा है। अत: मेरा अन्तर्मन बार-बार यह सोचता है कि आज मानवीय जीवन मूल्यों में एवं धर्माचरण में प्रतिदिन आती हुई गिरावट से देश एवं समाज को उबारने हेतु देशवासियों को पुन: श्रीराम के चरित्र को अपने जीवन में उतारने का आह्वान देना पड़ेगा और वह आह्वान होगा- 'जाहि बिधि रहे राम, ताहि बिधि रहिए।'।

इसका अर्थ यह है कि राम जैसे रहे, वैसे जीवन यापन करने का संकल्प जाग्रत करना होगा यानि सोद्देश्य जीवन, मर्यादापूर्ण जीवन, मूल्याधिष्ठित जीवन एवं उसके लिए आजीवन कष्ट सहते रहने का सहज अभ्यास। तभी इस देश में पुन: राम राज्य लाने का स्वप्न साकार हो सकेगा। जब कैकेयी ने राम को राज तिलक की जगह वनवास देने का वरदान दशरथ से मांग लिया तो राम कैकेयी से कहते हैं- 'नाहमर्थपरो देवि- लोकामावस्तुमुत्सहे' यानि हे माता! मैं अर्थ का नहीं लोक का आराधक हूं। तुलसीदास जी कहते है कि राम ने वन में राक्षसों द्वारा ऋषियों को दिए जाने वाले कष्टों को देखकर वन के सामान्य सुखों को भी त्याग दिया एवं हाथ उठाकर 'निसिचरहीन करहुं महीं'... का दृढ़ संकल्प लिया। उस संकल्प की पूर्ति के लिए ही वे स्थान स्थान पर राक्षसों का सफाया कर मुनियों को अभयदान देते रहे एवं इसी की चरम परिणिति कुलसहित रावण की मृत्यु में हुई। कुछ लोग अज्ञानवश कह देते हैं कि सीता का हरण हुआ अत: राम ने रावण को मारा। वस्तुत: ऐसा नहीं है, सीताहरण न भी हुआ होता तो भी इस भूभाग को निशाचारहीन करने हेतु अन्तत: रावण से निर्णायक युद्ध अनिवार्य था क्योंकि उसी ने सारे देश में असुरों का मकड़जाल बिछा रखा था।

वैसे सीता उद्धार भी राम के लिए केवल अपनी पत्नी का उद्धार नहीं था, यह तो आसुरी शक्ति से प्रपीड़ित स्त्री जाति को उद्धार था क्योंकि लंका में रावण सहित सभी राक्षसों ने पूरी पृथ्वी भर से सुन्दर स्त्रियों को जोर जबरदस्ती पकड़ कर अपनी भोग्या बनाने की परम्परा ही स्थापित कर रखी थी। राक्षसी राज्य के अन्त से ही इस पर विराम लगा।

राम चाहते तो वानरराज सुग्रीव या विभीषण की सहायता के बिना भी रावण का संहार कर सकते थे। खरदूषण को अकेले ही सेना सहित मारकर उन्होंने यह कर दिखाया था। खरदूषण के बारे में तो स्वयं रावण ने कहा है- 'खरदूषण मोहि सम बलवन्ता, तिनहिं को मारहि बिनु भगवन्ता।' (अरण्य- २२/२) परंतु राम इसे व्यक्तिगत नहीं, सामूहिक रूप देना चाहते थे अत: बानरराज सुग्रीव, हनुमान, अंगद एवं विभीषण सभी को इसकी बड़ाई दी।

कुछ लोग तुलसीदास पर ब्राह्मणों के साथ पक्षपाती होने का आरोप गढ़ते हैं, यदि ऐसा होता तो तुलसी राम का चरित्र ही नहीं उठाते। रावण ब्राह्मण तो था ही, पंडित था, ऋषि था एवं भक्त भी था। परशुराम का भी ऐसा ही उदाहरण है। दोनों का गर्व भंग राम ने (जो क्षत्रिय थे) किया। पथभ्रष्ट ब्रह्मतेज पर क्षात्रतेज का प्राबल्य प्रकट हुआ। इसका एक विपरीत उदाहरण भी है वशिष्ठ एवं विश्वमित्र के बीच संघर्ष का। इसमें क्षात्र तेज पर ब्रह्मतेज की विजयी हुई। सारांश यह है कि जो शक्ति लोक कल्याण में सार्थक होती है वही शाश्वत और सफल होती है। सूत्र है तेज का सात्विक प्रयोग। इसे भली प्रकार समझने की आवश्यकता है। वैसी ही बात नारियों के प्रति प्रभु के दृष्टिकोण की है। राम ने परित्यक्ता अहिल्या का उद्धार किया, शबरी की कुटिया पर जाकर उसका मान बढ़ाया पर ताड़का का वध करने में तनिक भी संकोच नहीं किया। सूर्पणखा जो कामातुर होकर कभी लक्ष्मण को तो कभी राम को अपना पति बनाना चाहती थी, को नाक-कान विहीन करने में लक्ष्मण को रोका नहीं। यहां भी बात लोककल्याण की ही है।

कुछ लोग राम को ईश्वर नहीं, मानव ही मानना चाहते हैं। ऐसे लोगों के सामने भी यह तो स्पष्ट ही है कि राम के मानवीय गुण देवत्व की दिव्यता से भी आगे बढ़ जाते हैं। राम के अलौकिक गुणों पर थोड़ा दृष्टिपात करें तो सहज ही यह समझ में आयेगा कि वे लोकोत्तर पुत्र, लोकोत्तर बन्धु, लोकोत्तर शिष्य, लोकोत्तर पति एवं लोकोत्तर राजा तो थे ही पर शत्रु के रूप में भी वह लोकोत्तर थे। मृत्यु के उपरान्त रावण एवं उनके परिवार के लोगों के साथ जो व्यवहार राम ने किया, वह अकल्पनीय है। इसी कारण आदि कवि बाल्मीकि से प्रारंभ हुआ उनका चरित्र गुण-गान आज भी सबके लिए उतना ही प्रेरक बना हुआ है। इसमें न देश की सीमा है, न समय की और न भाषा की। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही कहा है- 'राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है, कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है।' परंतु युग के संकटों से चुनौती लेने के लिए केवल स्तुतिगान पर्याप्त नहीं है। राम के नाम का महत्व निश्चय ही है पर राम का काज उससे भी बढ़कर है। हम राम के कार्य को समझें, समय की तुला पर उसे तोलें एवं हनुमान जी की तरह यह संकल्प धारण करें एवं अन्य मित्रों से कराएं। 'राम काज किन्हें मोहि कहां विश्राम'। तुलसी ने राम का सहारा लेकर समाज को जगाया, हम भी आज की चुनौतियों का उनके दिव्य गुणों को अपनाकर, उनके जैसे कष्ट सहने की शक्ति धारण कर आगे बढ़े तो कोई

कठिनाई नहीं होगी।

सामान्यत: हम सभी अपने सुख-साधना हेतु राम की अर्चना करते है, लोककल्याण हेतु नहीं। ऐसे स्वार्थी लोगों को उलाहना देते हुए महाकवि गुलाब खंडेलवाल ने लिखा है-

जिनका नाम लिए दु:ख भागे
मिला उन्हें तो जीवन भर दु:ख ही दु:ख आगे-आगे।

छूटा अवध साथ प्रियजन का, शोक अथह था पिता मरण का,
देख कष्ट मुनियों के मन का, वन में सुख भी त्यागे।

गूंजी ध्वनि जब कीर्तिगान की, फिर चिर दु:ख दे गई जानकी
मांग उन्हीं सी शक्ति प्राण की, मन तू सुख क्या मांगे?
मिला उन्हें तो जीवन भर दु:ख ही दु:ख आगे-आगे।

अर्थात लोकहित साधक को प्रभु राम जैसी कष्ट सहने की शक्ति की प्रार्थना करनी चाहिए, सुख की प्रार्थना नहीं। हमारे धर्माचार्य, धर्मोपदेशक समाजसेवी सभी को चाहिए कि पहले स्वयं राम के गुणों को अपने जीवन में उतारें एवं तब लोगों में उनका बीजारोपण करें। आज के स्वार्थ केन्द्रित, अर्थ केन्द्रित, भोगवादी एवं व्यक्तिवादी जीवन से उत्पन्न संघर्ष से मुक्ति पाने का दूसरा कोई सहज विकल्प नहीं है। राम-रसायन ही समाज एवं राष्ट्र के शरीर में पुन: अपेक्षित चैतन्य भर सकता है। अत: हम केवल सहने नहीं राम की तरह रहने का संकल्प लें। दशहरा एवं दीपावली अभी-अभी बीते हैं। ये दोनों ही पर्व प्रभु श्रीराम के जीवन प्रसंगों से जुड़े है अत: यह अवसर ऐसे चिन्तन के लिए विशेष महत्व का है।

मृग-तृष्णा

- राधेश्याम शर्मा 'राधे'

अर्थहीन की ले अर्थी, पागल सा मानव दौड़ रहा
अन्तहीन की चाह लिए, सुख चैन से रिश्ता तोड़ रहा

भ्रमित हृदय के भंवर जाल में, उलझा कर सुंदर काया
अशान्त बनाकर जीवन को, अंतरमन को है झुलसाया

क्षणभंगुर इस जीवन की, खातिर कितना अभिशाप लिए
क्यूं जीता है जीवन मानव, मन में इतना संताप लिये

पल का भी तो पता नहीं, कब प्राण पपिहा उड़ जाए
सरे राह चलते-चलते, कब धड़कन दिल की रूक जाए

क्या साथ ले गया है कोई, क्या साथ लिए कोई आया
है किसके साथ गया वैभव, किसने चांदी-सोना खाया

दो ग्रास अन्न का खाकर ही, हर प्राणी जग में जीता है
फिर प्यास जगा मृग तृष्णा की, क्यूं जहर आदमी पीता है

मुश्किल से मानव देह मिली, कुछ पूर्व जन्म के कर्मों से
राधे यश अपयश की दौलत ही, साथ गई है बंदों के

अहं और अभिमान त्याग, देश, जाति हित काम करो
झूठ फरेब, धोखेबाजी से, मत धन संचय का काम करो

किसकी खातिर कुकुर्म कमा, मानव मानवता छोड़ रहा
अर्थहीन की ले अर्थी, पागल सा मानव दौड़ रहा।

सुन्दर सी वधू चाहिए

- दयानन्द स्वरूप

जो प्रोफेशनली शिक्षित हो
जो सर्विस करती हो
जो गोरी लम्बी सुन्दरी हो
जो शादी में खूब धन-धान्य लाये
जो धनी घराने की पुत्री हो
जो कार चलाना जानती हो
कार लेकर आए
जो मृदुल भाषिणी हो
प्रिय दर्शिनी हो
जो बिना भाई वाली हो
एकमात्र सन्तान
जो अपने माता-पिता की
हो अकेली वारिश
मुझे ऐसी ही वधू चाहिए
जिसके मुंह न हो गर्म जुबान
हर कष्ट दुख-दर्द सहनेवाली हो
मेरी बहुरानी हर तीज त्यौहार पर
आए गाड़ी भर-भर सामान
ऐसी वधु चाहिए।

व्यंग्य

हमारी नयी संस्कृति

✍ बालकृष्ण गोयनका, उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

देश आजाद हुआ, अंग्रेज भारत छोड़ कर चले गये परंतु अपनी संस्कृति यहां छोड़ गये। हम अपनी प्राचीन संस्कृति को छोड़ कर उनकी संस्कृति को गले लगा लिया। विशेष करके शहरों में रहने वाले एवं पढ़े लिखे लोग।

युवा पुत्र या बालकों का जन्मदिन मनाते हैं (Happy Birth Day) केक आयेगा उसके ऊपर मोमबत्ती जला कर जिसका जन्मदिन है वह उसे बुझायेगाफिर Happy Birthday To you कह कर खुशियां मनायेंगे केक के टुकड़े काट कर सबको खिलायेंगे।

केक हमारा भोजन नहीं है हम जो शाकाहारी है केक में मिले अंडे खाने पड़ते हैं। हम दीपक को सूर्य का अंश मान कर शीश नवाते हैं। हर शुभ कार्य, पूजा-पाठ में दीप प्रज्वलित करते हैं विदेशी संस्कृति को अपना कर दीप बुझाने लगे हैं। अंग्रेजों के आने के पहले जन्मदिन पर पूजा, कहीं हवन, कहीं ब्राह्मण भोजन कराते थे।

हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति की गरिमा को भूला कर, हमने लार्ड मेकाले यूरोपीय शिक्षा- संस्कृति को अपना कर आज पिता को Daddy या Pappa कहते हैं Daddy का क्या अर्थ होता है सब जानते हैं- 'पप्पा' का अर्थ बहुत छोटा बालक। हमारे यहां पिताजी या बापु कहने की प्रथा थी। अपनी मां को Mummy बड़े चाव से कहते हैं। पिता के भाई को 'अंकल' कहते हैं। हमारे यहां चाचाजी कहते थे। हमारे यहां चाचा, मौसा, फूफा, मामा, ताऊजी या ताया कहते हैं। अंग्रेजी में 'अंकल' के सिवाय दूसरा शब्द ही नहीं, सभी को 'अंकल' ही कहेंगे। इसी तरह एक ही शब्द है 'आन्टी' जबकि हमारे यहां चाची, मौसी, बुआ, मामी ताईजी आदि हर सम्बन्ध के लिए अलग-अलग नामों का उच्चारण है।

कभी किसी परिचित से मिलते हैं तो आज कहेंगे 'हल्लो हल्लो', जब वह बिदा हो तो 'बाय बाय' जिसका कोई अर्थ नहीं, हम पहले मिलते थे हाथ जोड़कर नमस्ते, नमस्कार या जयरामजी की कहते थे। बिदा होते समय फिर मिलेंगे या अलविदा कहते थे। बहिन को दीदी या बाई या बहिना, यहां सबके लिए 'सिस्टर' शब्द है। बहिन के पति को 'जीजा' कहते हैं, अंग्रेजी में कोई शब्द ही नहीं है। हमारे यहां अपने मित्र, निकट संबंधी से मिलते हैं तो हाथ जोड़कर नम्रता से प्रणाम, नमस्कार, नमस्ते, अपने पूर्वजों से मिलते समय सिर नीचा करके पांव छूयंगे। अंग्रेजी सभ्यता में इसके लिए कोई स्थान नहीं है। सुबह हो तो Good Morning, दोपहर को Good Afternoon, सायंकाल को Good Evening, रात को Good Night. धन्यवाद की जगह Thank You, कोई गलती महसूस हुई तो 'क्षमा' मांगते थे अब 'Sorry' शब्द प्रचलित हो गया। कोई कठिनाई सामने आई तो पहले 'हे राम' या 'हे भगवान' मुस्लिम हो तो या अल्लाह कहते थे लेकिन अब लोग कहते हैं My God। पत्नी 'प्रिया' से Darling हो गई। शादी के बाद की 'सुहाग रात' को Honey Moon कहते हैं। नयी अंग्रेजी सभ्यता के अनुसार पति-पत्नी विदेश या देश में ही कहीं 'हनी मून' मनाने जाते हैं।

विदेशों में पश्चिम सभ्यता के अनुसार भारत में भी हर शहर में Disco Dance शुरू हो गया जिसमें पति पत्नी जाते हैं और पति किसी भी स्त्री के साथ नृत्य करता है। इसी तरह पत्नी किसी भी पुरुष के साथ नृत्य का आनन्द लेती है। अब हम विदेशी संस्कृति अपना कर शाकाहारी से जिसे अब Vegetarian कहने लगे हैं Non Vegetarian हो गये हैं। पार्टियों में Non-Veg के साथ 'शराब' आ गई। अब तो यहां तक हो गया कि अपने को एडवान्स कहने वालों के घर में ही Bar खुल गये। अपने मित्रों, पति-पत्नी जिसे अब Couple कहते हैं एकत्र होकर शराब के प्याले पर प्याले गले में उतारते हैं फिर नशे में नाचते हैं। महिलाओं को शराब पीने के लिए मजबूर करना, उसके प्रति सामान्य मर्यादा का निरादर करना है।

भारतीय परिधान हमारा धोती कुर्त्ता या पजामा कमीज की जगह कोट पैन्ट आ गई गले में 'टाई' लग गई याने गले में फांसी लगा रखी हो। लड़कियां साड़ी की जगह जींस पहनने लगी हैं।

आपस की बातचीत में आधे से अधिके अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग होता है। पढ़े लिखे लोग आपस में बातचीत में अंग्रेजी का ही प्रयोग करते हैं। किसी भी संस्था के सार्वजनिक सभा में जिसे Meeting का नाम देते हैं, सभी सदस्य हिन्दी जानने समझने वाले होते हुए भी अपने विचार अपना वक्तव्य अंग्रेजी में बोलने में अधिक सुविधा महसूस करते हैं। वास्तविकता यह हो गई कि आज हिन्दी भाषा मध्यम वर्गीय परिवारों तक ही सीमित भाषा हो गई। महानगरों एवं अभिजात्य वर्ग में अब इसे ग्रामी भाषा समझा जाता है।

चीन, जापान, बर्मा (म्यांमार) थाईलैंड में वे आपस में अपनी भाषा में ही बात करने में गर्व करते हैं। उनकी बातचीत में कोई अंग्रेजी शब्द का उच्चारण नहीं होता। हमारी मातृभाषा या राष्ट्र भाषा हिन्दी ही हमें अधिक गौरव और स्वाभिमान दे सकती है। शहरों में पढ़े लिखे लोग अंग्रेजी भाषा में रूचि लते रहेंगे तो एक दिन ऐसा आयेगा कि अपनी भाषा सिमट कर अंधकार के गर्त में चली जा सकती है। इसलिए अपनी भाषा को बचाना अनिवार्य है, क्योंकि दूसरी भाषा में हम कितने ही निपुण हो जाएं, वे हमारी सभ्यता और सांस्कृतिक की रक्षा नहीं कर सकती। हमारी मातृभाषा ही हमें अधिक गौरव और स्वाभिमान दे सकती है।

हमारी नृत्यकला कत्थक, कचिपूड़ी, ओड़िसी, मणिपुर को हिकारत की नजर से देखा जा रहा है और उसकी जगह ब्रेक, टिवस्ट, कैबरे, डिस्को, रमा सभा से चमत्कृत हो, उन्हें अपना लिया। हमारे शास्त्रीय संगीत की कमनियता विदेशी संगत की चीख चिल्लाहट का शिकार हो गयी।

माता-पिता अपने बच्चों को Convent School में भर्ती करने में अपना गौरव समझते हैं वहां लड़कियों को भी विदेशी अंग्रेजों के समान की Dress Blouse Skirt पहनना आवश्यक रहता है। कहीं-कहीं पर तो लड़कियों को टाई भी लगानी पड़ती है।

इसलिए मानना पड़ता है अंग्रेज चले गए, परंतु अपनी भाषा अंग्रेजी और अपनी संस्कृति छोड़ गय जिसे हम बहुत प्रेम से अपना

लिया। अंग्रेजी साम्राज्य जहां-जहां गया वहां अपनी भाषा को लेकर गया। अपनी भाषा को उन्होंने इतना सम्मान दिया कि उनके उपनिवेश में रहने वाला हर व्यक्ति अंग्रेजी पढ़ने और सीखने के पीछे दीवाने हो गये। उन्हें लगाने लगा कि अंग्रेजी प्रगति और सम्मान दिलाने वाली कुंजी है।

विदेशी सोच, विदेशी भावना, विदेशी तौर-तरीके, उनकी संस्कृति और उनकी भाषा का प्रयोग करने में हम अपने आपको अधिक सभ्य, जिसे अब बोलचाल की भाषा में Advance समझने लगे हैं। हम गहरायी से चिंतन मनन करें- अपनी भाषा अपनी संस्कृति को सम्मान देवें।

व्यापारी वर्ग अपने व्यापार का नव वर्ष, नई पुस्तकों का पूजन कहीं दिवाली कहीं राम नवमी याने श्रीराम का जन्म दिन से अब बदल कर अंग्रेजों में पचलित महात्मा इसा के जन्मदिन की तारीखों पर आधारित पश्चिम सभ्यता में प्रचलित मास, साल और दिन पर आधारित एक अप्रैल को नया साल मान कर एक अप्रैल को व्यापारिक पुस्तकों का पूजन एवं उसकी शुरूआत की जाती है।

भारत वर्ष का सर्वमान्य संवत विक्रम संवत है। विक्रम संवत के अनुसार नववर्ष का आरंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। इस दिन सभी हर्षोल्लास के साथ यज्ञादि धर्मानुष्ठान करते हुए प्रत्येक घरों में उत्सव का वातावरण बना रहता है। दक्षिण भारत में आज भी इस नूतन वर्ष को 'उगादि' के नाम से मनाया जाता है। कुछ प्रदेशों में इसे 'गुडी पडवा' के नाम से मनाते हैं। कहते हैं यह विक्रमी संवतसर, सम्राट मालवाधिपति विक्रमादित्य ने शकों पर विजय प्राप्त की थी। आज यह विक्रमी संवत अंधेरे में चला गया, ईश्वी संवत १ जनवरी ही New Year Day प्रसिद्ध हो गया। पहली जनवरी को बड़ा उत्सव मनाते हैं। आपस में मिलते हैं तो Happy New Year की बधाई देते, लेते हैं।

अच्छे व्यवहार के लिए पहले धन्यवाद देते थे, अब उसकी जगह Thank You ने ले लिया है। कोई गलती हो जाए तो क्षमा याचना की जगह Sorry आ गया।

कोई भी देश, विदेश भाषा न तो उन्नति ही कर सकता है और ना ही राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति। हिन्दी प्रेम की भाषा है, राष्ट्रीय एकता की भाषा है।

नया साल आया

- जय कुमार रूसवा

सौम्य, सुखद, कोमल अनुभव सी
नयी नवेली अल्हड़ भोर
लेकरअपने अन्तर्मन में
नयी उमंगें, नयी हिलोर
उतार कर तारों वाली चूनर
अभिसारिका सी सजी संवरी
सूरज ने इन मधुर क्षणों में
संदल से प्राची की मांग भरी
तो फूलों ने पुलकित होकर
धरती का आंगन महकाया
पवन बजाने लगा बांसुरी
मौसम ने यह गीत सुनाया
नया साल आया
नया साल आया
अम्बर की अंजुरी से
आहिस्ता-आहिस्ता छन कर
सुनहली किरणें चमकीं
धरती का ताज बन कर
धीरे से आंख बन कर
धीरे से आंख खोली
जब झील के कंवल ने
हिमखण्ड भी खुशी से
लगा स्वत: ही गलने
झरनों का वेग मचला
सौ-सौ किलोल करने
नागराज भी नहा कर
लगने लगा संवरने
झूमी प्रकृति देवी भी
लेकर के मोद मन में
सुनलो सुनाई देगा
यह राग इस भुवन में
कण कण में है समाया
नया साल आया
नया साल आया
तटबंध में बंधी है
पर मन को खोल लहरें
अंगड़ाई ले रही है
सरिता की लोल लहरें
तरुवर की साखें चेती
चेता है बूटा-बूटा
पत्तों में पल्लवों में
उन्माद है अनूठा
पंखुड़ियां अपनी खोली
कलियों ने हौले-हौले
भंवरों के तितलियों के
उपवन में झुणड डोले
कलरव पखेरूओं का
अमृत की धार सा है
मोहक सिंगार सा है
प्यारा ये प्यार सा है
जो नियति ने लुटाया
और साथ में बताया
नया साल आया
नया साल आया।

'स्थापना दिवस' नहीं 'संकल्प दिवस' मनाएं

✍ ओमप्रकाश खण्डेलवाल
महामंत्री, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, गुवाहाटी

किसी भी सार्वजनिक व सामाजिक संगठन की जिस तिथि को स्थापना हुई हैं, उक्त तिथि को परंपरागत रूप से बतौर 'स्थापना दिवस' के मनाये जाने की सांगठनिक परंपरा रही है और यह किसी भी दृष्टि से गलत नहीं है, बल्कि प्रासंगिक भी है। स्थापना दिवस के बहाने हम उक्त संस्था की साल भर की गतिविधियों की चर्चा करते हैं। समाज बंधु एक समूह में एकत्रित होकर दो-चार लच्छेदार शब्दों में भाषण झाड़ देते हैं और माला, गमछे पहनकर एकाध फोटो खिंचवाकर घर को लौट आते हैं, अब तक का अधिकांश मेरा यही अनुभव रहा है।

'स्थापना दिवस' से तात्पर्य केवल हमें उक्त संस्था की स्थापना की बातें ही नहीं, बल्कि हकीकत में यदि हम संस्था के बारे में जब चिंतन-मनन करते हैं तो हमें उन बातों पर भी ध्यान आकर्षित करना चाहिए कि जिस समय संस्था का गठन किया गया था, उस समय इसके क्या उद्देश्य थे और क्या आज के संदर्भ में वे सामयिक अर्थात प्रासंगिक है या नहीं, यदि नीहं, तो उनमें क्या बदलाव और परिवर्तन करने चाहिए, यह निहायत ही जरूरी हैं क्योंकि बदलते हुए दौर में जब समाज के आचार-विचार और रहन-सहन में परिवर्तन और बदलाव आ जाता है, तो उसका प्रभाव कमोबेश सामाजिक संगठनों पर भी पड़ना स्वाभाविक है। अत: इस पर चिंतन-मनन करना अति आवश्यक है और केवल चिंतन-मनन करना ही नहीं, हमें अतीत की अच्छाईयों को आत्मसात करते हुए कड़वे अनुभव के तौर पर की गई भूलों को भी स्मरण कर सीख लेने की आवश्यकता है और भविष्य में उन भूलों को न दोहराए, ऐसा संकल्प और चिंतन होना चाहिए।

'स्थापना दिवस' के अवसर पर हमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति के भीतर एक 'संकल्प' लेने की प्रेरणा जागृत करनी चाहिए। यह प्रेरणा स्थानीय स्तर की समस्याओं के संदर्भ में भी हो सकती हैं, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय स्तर पर आधारित समस्याओं को लेकर भी हो सकती हैं और इन समस्याओं के निराकरण के संदर्भ में साल भर का समय निर्धारित होना चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि जब आने वाले एक साल पश्चात, जब हम पुन: स्थापना दिवस का आयोजन करें, तब साल भर पहले लिए 'संकल्प' को लेकर मंथन करना चाहिए कि हमने पिछले साल अपने संकल्प में कितनी प्रगति की और कितनी सफलता प्राप्त की और जिन मुद्दों पर हम सफलता प्राप्त नहीं कर पाये, उनके पीछे आनेवाली बाधायें कौन-सी थी। इस प्रकार का चिंतनमनन हमें करना चाहिए और मेरे विचारों में हम स्थापना दिवस न मनाकर उसे यदि 'संकल्प दिवस' के रूप में पालन करते हैं तो और भी बेहतर रहता है। हमारी अपनी कमजोरियां और त्रुटियों का सर्वप्रथम हमें स्वयं आत्मवलोकन करना चाहिए, साथ ही स्थानीय स्तर पर अथवा अन्य किसी प्रख्यात साहित्यकार-बुद्धिजीवि और समालोचक अथवा समाज शास्त्र के विज्ञ इत्तर समाज के व्यक्तियों को आमंत्रित कर अपने समाज और आचार-विचार के बारे में उनसे बेबाक राय मांगकर उनसे यह गुजारिश करनी चाहिए कि वे न केवल हमें हमारी अच्छाइयों, बल्कि कमी और त्रुटियों की ओर भी इंगित करें और हमें उनके द्वारा बताई गई कमियों और बुराईयों को अपने में चिंतन-मंथन कर दूर करने का संकल्प लेना चाहिए, तभी हमारी 'स्थापना दिवस' मनाने की सार्थकता पूरी होगी अन्यथा हम केवल 'लकीर के फकीर' ही बनकर रह जाएंगे।

यदि स्थापना दिवस हमें तथा आनेवाली पीढ़ी के लिए कोई प्रेरणादायक संदेश छोड़ने में सफल नहीं रहती हैं तो इसका तात्पर्य यह है कि हमारे प्रयासों और चिंतन में जरूर कोई न कोई खामी है। पुन: हमें अपने उन बिंदुओं पर चर्चा कर उसे प्रचारित-प्रसारित करने की आवश्यकता है।

तो आईए! हम आज इस स्थापना दिवस पर वचन ले कि हम इसे स्थापना दिवस के नहीं, 'संकल्प दिवस' के रूप में मनाएंगे, तभी शायद हमारी सार्थकता पूरी होगी। जब तक आनेवाली पीढ़ी के लिए कोई प्रेरणादायक संदेश नहीं छोड़ते हैं, तो हमारा यह स्थापना दिवस कोई मायने नहीं रखता, ऐसा मेरा चिंतन और विचार है। आवश्यकता है इस पर विचार कर क्रियान्वयन करने की।

देश-विदेश में निवास करने वाले समस्त समाज बंधुओं को इस अवसर पर पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनायें प्रदान करते हुए एक खुशहाल समाज का स्वप्न देखने की आकांक्षा के साथ एक बार पुनश्य: हार्दिक धन्यवाद।

जय समाज! जय हिन्द!

Wishing You A Joyous and A Prosperous New Year

salasar

FASHION MEGA STORE

6/18 W.E.A. Karol Bagh,
Ajmal Khan Road
New Delhi- 110005
Ph : (011) 51040998-999
/25738262

J1/162B, Rajouri Garden
New Delhi- 110027
Ph : (011) 51070994

A79, Lajpat Nagar, Phase-II
New Delhi- 110023
Ph : (011) 51029994/8

"Ravi Bhawan", G.E. Road
Jai Stumbh Chowk, Raipur- 492001
Ph : (077) 5035130/32

K.L.MAHIPAL

Managing Director

9339002382

Sunrise Steels & Alloy Ltd. (Steel Plant),
Tamna (Purulia)
Kay Bee Industrial Alloys (P) Ltd.
Industrial Alloys India (P) Ltd.
Industrial Alloys
8, Bentinck Street, Taher Mansion,
Kolkata- 700 001

Ph. : 22105740/3032, 2243 9059,
Fax : (033) 2243 0907

Mobile : 31102382 (G.H.) 2240-6127

Resi : *'KRISHAN KUNJ'* P-198,
Bl. A, Laketown, Kolkata- 700089

Phone : 25344142/3219/3091 2604/5
E-mail : kaybeeca@vsnl.com.

Manufacturer, Stockist, Dealer in all types of Ferro Alloys, Minerals, Electrodes, Refractories & Virgin Metals

Branch Office

314, Ashirwad
Ahmedabad Street,
Mumbai- 400 009
Phone : (0) 2372-9499,
(R) 2506-4131
Fax : (022) 23751733,
(G) 02522 270938

□□□

Shed No. 3 D, Industrial Estate
Bhanpuri
Bhanpuri,
Raipur - 493221 (C.G.)
Fax : 5081332
Phone : 0771-5091697,
(M) 0771-3104848

WORKS

Tamna, Tata Road,
P.O. Simulia Tamna
Dist. Purulia (W.B.) Ph. : 03252-280027
T.N. Mukherjee Road, Mukhla
P.O. Uttarpara
Dist. Hooghly (W.B.)
Ph.: (033) 2663-6137/72

FOR THE FIRST TIME!
USE.
DON'T
BUY!
Ask Quipo, the equipment bank
In road, rail and waterways, telecom and power sectors...Quipo, the infrastructure equipment service provider, opens up immense growth possibilities.
Quipo offers on rent state-of-the-art construction equipment. Ensures quality and adds value to construction, critical to the success of your business.
With its unique capabilities, infrastructure, network and range of services, Quipo runs like your very own equipment pool while easing pressures on your precious capital funds.
Quipo
To find out more about Quipo's unique services visit us at www.quipoworld.com or write to us at helpdesk@quipoworld.com for an immediate response.
Indian Infrastructure Equipment Limited

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

पदाधिकारी (२००४-०६)

सभापति

श्री मोहनलाल तुलस्यान

महामंत्री

श्री भानीराम सुरेका,

कोषाध्यक्ष

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया

उपसभापति

श्री सीताराम शर्मा, डॉ. जयप्रकाश शंकरलाल मुँदड़ा (विधायक)
श्री ओंकारमल अग्रवाल, श्री नन्दलाल रुंगटा
श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल, श्री बालकृष्ण गोयनका

सयुक्त महामंत्री

श्री रामअवतार पोद्दार
श्री राज के पुरोहित

कार्यकारिणी समिति सदस्य

श्री इंदरचंद संचेती
श्री राजेश खेतान
श्री गौरीशंकर कायां
श्री हरिप्रसाद बुधिया
श्री द्वारका प्रसाद डाबरीवाल
श्री प्रह्लादराय अग्रवाल
श्री हरिप्रसाद अग्रवाल
श्री आत्माराम सोंथलिया
श्री बालकृष्ण माहेश्वरी
श्री रामगोपाल बागला
श्री सुभाषचंद्र अग्रवाल
श्री सूर्यकरण सारस्वा
श्री बाबूलाल धनानिया
श्री शिवशंकर खेमका
श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका, महाराष्ट्र
श्री सतीश देवड़ा
श्री अरुण कुमार गुप्ता
श्री प्रेमचंद सुरेलिया
श्री जुगलकिशोर जैथलिया
श्री बंशीलाल बाहेती
श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल (बिहार)
श्री राजकुमार सरावगी
श्री सत्यनारायण शर्मा (छत्तीसगढ़)
श्री सांवरमल अग्रवाल
श्री गिरधारीलाल जगतरामका
श्री सत्यनारायण सिंघानिया (उत्तर प्रदेश)
श्री बनवारीलाल सोती
श्री सुभाष मुरारका
श्री ओमप्रकाश पोद्दार
श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल
श्री दिलीप गांधी (महाराष्ट्र)
श्री रामदयाल मस्करा (बिहार)
श्री मौजीराम जैन (उड़ीसा)
श्री मंगलचंद टांटिया (मध्य प्रदेश)
डॉ० रामविलास साबू (आंध्र प्रदेश)
श्रीमती प्रेमलता खण्डेलवाल (पूर्वोत्तर)
श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया (देवघर)
श्री रमेश मरोलिया (उत्तर प्रदेश)
श्री राधेश्याम रेणवा
श्री बी. एन. धानुका

(पदेन)

पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री

श्री हरिशंकर सिंहानिया (पूर्व अध्यक्ष)
श्री हनुमान सरावगी (पूर्व अध्यक्ष)
श्री नन्दकिशोर जालान (पूर्व अध्यक्ष)
श्री दीपचंद नाहटा (पूर्व महामंत्री)
श्री रतन शाह (पूर्व महामंत्री)
श्री सीताराम शर्मा (पूर्व महामंत्री)

प्रांतीय अध्यक्ष एवं मंत्री

डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल (अध्यक्ष, बिहार)
श्री रामअवतार पोद्दार (मंत्री, बिहार)
श्री सोमप्रकाश गोयनका (अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश)
श्री गोपाल सूतवाला (मंत्री, उत्तर पदेश)
श्री ओंकारमल अग्रवाल (अध्यक्ष, पूर्वोत्तर)
श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल (मंत्री, पूर्वोत्तर)
श्री विश्वनाथ मारोठिया (अध्यक्ष, उत्कल)
श्री गोपालकृष्ण जाखोटिया(मंत्री, उत्कल)
श्री रमेशकुमार बंग (अध्यक्ष, आन्ध्रप्रदेश)
अभी अघोषित है (मंत्री, आन्ध्र प्रदेश)
श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी (अध्यक्ष, मध्यपदेश)
श्री रमेश कुमार गर्ग (मंत्री, मध्यप्रदेश)
श्री रमेशचंद्र गोपीकिशन बंग (अध्यक्ष, महाराष्ट्र)
श्री पोपटलाल ओस्तवाल (मंत्री, महराष्ट्र)
श्री लोकनाथ डोकानिया(अध्यक्ष, पश्चिमबंग)
श्री गोपाल अग्रवाल(मंत्री, पश्चिम बंग)
श्री बासुदेव बुधिया अध्यक्ष, झारखण्ड)
श्री विनयकुमार सरावगी (मंत्री, झारखण्ड)
श्री कैलाशमल दुग्गड़(अध्यक्ष, तमिलनाडु)
श्री विजय गोयल(महामंत्री, तमिलनाडु)

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के तीन विशिष्ट अवसरों पर

भारत की तीन महान विभूतियों ने मारवाड़ी समाज को अलंकृत किया

रजत जयंती समारोह *(अध्यक्ष : स्व. सेठ गोविंद दास मालपानी)*

२३-२७ दिसम्बर १९६१, डॉ. विधान चंद्र राय

मेरा संबध इस नगरी और मारवाड़ी समाज के साथ साठ वर्ष पुराना है। मैंने बहुत समीप से मारवाड़ी समाज की गतिविधियों का अध्ययन किया है। मैं 'मारवाड़ी बंधु' शब्द का प्रयोग करने में बड़ा गर्व अनुभव करता हूं। मारवाड़ी समाज ने देश की जो सेवा की है, उसमें सबसे अधिक महत्व उस उत्पादन का है, जिससे देश की आवश्यकताओं की पूर्ति हुई। आवश्यक पदार्थ का उत्पादन ही मारवाड़ी समाज की देश को सबसे बड़ी देन है। जातीय व सामाजिक संगठन देश की एकता की दृष्टि से किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाना हम सबका प्रथम कर्त्तव्य है। मुझे आश्चर्य यह देखकर होता है कि इस समाज में बहुत बड़े इंजीनियर नहीं हैं, फिर भी एक भावना है, जिससे प्रेरित होकर यह उत्पादन के काम में निरंतर लगा रहता है। इसकी इस भावना का प्रभाव बंगालियों पर पड़ रहा है और बंगाली भी उत्पादन के क्षेत्र में निरंतर अग्रसर हो रहे हैं। मारवाड़ी समाज ने देश-सेवा, धर्म, शिक्षा, समाज-सेवा आदि के क्षेत्रों में सराहनीय कार्य किया है।

बाढ़, सूखा तथा अन्य संकट उपस्थित होने पर मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी जो काम किया करती है वह किसी से छिपा नहीं है। मैं एक बार फिर कहना चाहता हूं कि जातीय और सामाजिक सम्मेलनों का लक्ष्य राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाना होना चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि आप के सम्मेलन के सम्मुख यह लक्ष्य निरंतर बना हुआ है और बना रहेगा। यह मारवाड़ी जाति की जिम्मेदारी है और उसके प्रयत्न व्यक्तिगत तथा जातिगत अभ्युत्थान के लिए हो। देश मारवाड़ी समाज के प्रति कृतज्ञ है क्योंकि इसने देश के औद्योगिक विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया है। इस समाज में दो महान गुण है- प्रथमत: यह समाज देश के सभी समाजों में अत्यंत साहसी समाज है और दूसरा यह कि यह बहुत दयालु है। जहां कहीं भी कोई संकट आता है, वहां मारवाड़ी सहायता के लिए दौड़ पड़ते हैं।

स्वर्ण जयंती समारोह *(अध्यक्ष : नंदकिशोर जालान)*

७ फरवरी १९८६, ज्ञानी जैल सिंह

एक बार गुरुनानक देव एक गांव में गये। उनके साथ एक बालक था- भक्त। ठहरने के लिए गांव में किसी ने उनलोगों को जगह नहीं दी और न तो उनकी भूख मिटाने के लिए भोजन ही दिया। तब नानक देव ने कहा- 'मरदाना, अरदास करो। भगवान से प्रार्थना करो कि यह गांव बसता रहे। हमेशा के लिए बसता रहे। हमेशा के लिए बसता रहे। इस पर मरदाना ने अर्ज की- 'महाराज, यह कैसी उलटी बात है? पिछले गांव वालों ने स्वागत सत्कार किया और आपने कहा कि भगवान करे इस गांव के लोग यहां से बिखर जाएं और जहां हमारी दुर्गति हुई, उसे आप बसते रहने का आशीर्वाद दे रहे हैं?' 'महाराज कहने लगे- 'अच्छे लोग जहां जाएंगे, भलाई फैलाएंगे और जो बुरे लोग हैं, यही रह जायें तो अच्छा है। मारवाड़ियों ने सोसाइटी को बहुत कुछ सिखलाया है। आपकी यह संस्था इलाके की बात नहीं करती और न जातिवाद की। सामाजिक सुधार के लिए आप लोग बैठते हैं और उसमें राजनीति को नहीं आने देते हैं। मारवाड़ी कोई-कोई शादी में बहुत ज्यादा खर्च करते हैं और एक दिन में इतनी बिजली फूंक देते हैं जितने में सौ घर वर्षों बिजली जला सकते हैं। देखा-देखी और लोग भी करते हैं। इससे सामाजिक खराबियां फैलती हैं। साधारण आदमी के बेटे- बेटियों का हौसला टूटता है और गरीब

With the best Compliments of :

THE HOOGHLY MILLS COMPANY LIMITED

MANUFACTURERS & EXPORTERS

10, Dr. Rajendra Prasad Sarani
(Clive Row), 3rd Floor,
Kolkata- 700 001, India

Phone : 2242-6064, 9790, 9801, 9842
Fax : 2242-6614, 4306
Gram : "Hutchie" Kolkata
E-mail : hooghly@giasciol.vsnl.net.in
Webpage : http:ll www.cirrusweb.com/hooghly
Regd. Office : 76, GARDEN REACH ROAD
KOLKATA- 700 043

आदमी को बेईमानी करने का ख्याल आता है। अमीर आदमी समझता है कि उसकी बड़ी शान हुई, लेकिन वह गलती करता है। इसी तरह दहेज की प्रथा ने हमारे देश को बुरी तरह गिरा दिया है। बेटी वाला देना चाहता है तो वह दिखावा न करें। देश में गरीबों की गिनती ज्यादा है, अमीर की कम। गरीब बच्चों के दिल पर क्या बीतती है, इसका उन्हें पता नहीं। मैं तो राय दूंगा कि आप सामाजिक तौर पर बंधन लगा दीजिए। आपकी दौलत किसी दूसरे काम में लगे। आप जो एक शादी में खर्च बचायें, उससे पांच-छः अनाथ बच्चों की परवरिश कर सकते हैं। अपनी बेटी को देना है फिर दिखावा मत कीजिए। आप इस मामले पर गहराई से विचार करेंगे और इस बीमारी को दूर करने की कोशिश करेंगे। दिल्ली में तो दहेज के चलते एक-दो लड़कियां प्रायः अपनी जान की आहुति दे डालती हैं। आज जहां भी जाओ, वहीं राजनीति की चर्चा हो रही है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक सबके ऊपर सियासत चढ़ी हुई है। सामाजिक सुधार करने वाले राजनीतिज्ञों से कम कुर्बानी करने वाले नहीं होते। राजा राममोहन राय और दूसरे कई महापुरुष रहे हैं, जिनका नाम सदियों तक जिंदा रहेगा जिन्होंने सुधार किया, सती-प्रथा को बंद किया। देश की आजादी की लड़ाई लड़ते हुए सामाजिक सुधार किये, कोढ़ियों की सेवा की। इतनी बड़ी लड़ाई लड़ते हुए भी वे इस बात को नहीं भूलते थे।

हीरक जयंती समारोह *(अध्यक्ष : नंदकिशोर जालान)*

१ मार्च १९९६, डॉ. शंकरदयाल शर्मा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी समाज के हीरक जयंती समारोह में शामिल होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। मैं इस अवसर पर सम्मेलन को अपनी बधाई देना चाहूंगा कि वह हमारे देश के सामाजिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक विकास में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाता रहा है।

अपनी गतिशीलता, संघर्ष करने की क्षमता, कार्य के प्रति निष्ठा तथा ईमानदारी के बल पर मारवाड़ियों ने पूरे देश में न केवल स्वयं को स्थापित किया, बल्कि वहां के लोगों से आदर भी प्राप्त किया। १९वीं शताब्दी तक मारवाड़ी देश के उन दुर्गम क्षेत्रों तक पहुंच गये थे, जहां अन्यथा कोई जाना तक पसंद नहीं करता था। वे वहां जाकर धन कमाकर लौटे नहीं, बल्कि वहां उन्होंने अपना स्थायी घर बनाया, बल्कि उसे ही अपना घर समझा। इस प्रकार वहां के लोगों से मिलजुल कर उस क्षेत्र के आर्थिक विकास में योगदान करने के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में भी अपनी भूमिका निभाई। उस समय अनेक राज्यों के शासक उन्हें अपने यहां के आर्थिक विकास के लिए आमंत्रित करते थे। हैदराबाद के निजाम ने तो उन्हें हर संभव सहायता देने का वचन तक भी दिया था।

हमारे देश के स्वतंत्रता आंदोलन में मारवाड़ियों का बहुमुखी योगदान रहा है। बिड़ला जी और जमुनालाल बजाज जी उस समय हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन के आर्थिक स्तंभ थे। जमुनालाल बजाज के निधन पर बापू ने कहा था- 'मेरे लिए तो वे मेरी कामधेनु थे।' बापू ने उन्हें अपना पांचवा पुत्र माना था। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय अनेक मारवाड़ी युवकों ने क्रांतिकारियों की मदद की थी। जेल की यात्रा करने में मारवाड़ी महिलाएं भी पीछे नहीं रही।

२७ अगस्त १९३० को वायसराय के प्रतिनिधि कर्निंघम को लिखे गए बंगाल के प्रमुख अधिकारी श्री एस. गजनवी के पत्र के अनुसार- 'यदि महात्मा गांधी के आंदोलन से मारवाड़ी व्यापारियों को अलग कर दिया जाए तो ९० प्रतिशत आन्दोलन अपने आप समाप्त हो सकता है।' प्रमाणित करता है कि मारवाड़ियों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में कितना महत्वपूर्ण योगदान किया था।

मारवाड़ी देश के जिस क्षेत्र में भी गये वहां उन्होंने स्कूल खोले, धर्मशालाएं, मंदिर बनवाये तथा कुएं और बावड़ियां भी बनवाये। वर्तमान में दान का स्वरूप परिवर्तित हो गया है। अब वे तकनीकी शिक्षा, चिकित्सा, शोध-केन्द्रों, कला एवं संस्कृति के विकास तथा आपात-सेवाओं के लिए दान दे रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि इस समुदाय के लोग जहां भी हैं, जिस रूप में भी हैं, अपने आचरण और व्यवहार के द्वारा देश की समन्वयात्मक संस्कृति का जीता-जागता उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

स्थायी समिति सदस्य

श्री राजेश पोद्दार, श्री गौरीशंकर सिंघानिया, श्री जयगोविन्द इंदोरिया, श्री कैलाश टिबड़ेवाला, श्री डूंगरमल सुरेका, श्री नथमल बंका, श्री राजाराम शर्मा, श्री शम्भु चौधरी, श्री नरेन्द्र तुलस्यान, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, श्री श्रीभगवान खेमका, श्री विश्वनाथ गुप्ता, श्री बसन्त कुमार नाहटा, श्री नारायण जैन, श्री शांतिलाल जैन, श्री सुशील ओझा, श्री मुकुन्द राठी, श्री प्रदीप ढेड़िया, श्री बासुदेव यादुका, श्री पुरनमल तुलस्यान, श्री मनीष डोकानिया ।

० सम्मेलन के पदाधिकारी इस समिति के पदाधिकारी हैं ।

उप–समितियाँ (२००४–२००६)

० अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व महामंत्री निम्न सभी उपसमितियों में पदेन सदस्य रहेंगे ।

संगठन व सदस्यता बनाने हेतु उपसमिति :

संयोजक : श्री सुभाष मुरारका, सदस्य: श्री विश्वनाथ गुप्ता, श्री रामगोपाल बागला, श्री डुंगरमल सुरेका, डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल (अध्यक्ष, बिहार), श्री रामअवतार पोद्दार (मंत्री, बिहार), श्री सोमप्रकाश गोयनका (अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश), श्री गोपाल सूतवाला (मंत्री, उत्तर पदेश), श्री ओंकारमल अग्रवाल (अध्यक्ष, पूर्वोत्तर), श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल (मंत्री,पूर्वोत्तर), श्री विश्वनाथ मारोठिया (अध्यक्ष, उत्कल), श्री गोपाल कृष्ण जाखोटिया (मंत्री, उत्कल), श्री रमेश कुमार बंग (अध्यक्ष, आन्ध्र प्रदेश), अघोषित (मंत्री, आन्ध्र प्रदेश), श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी (अध्यक्ष,मध्य पदेश), श्री रमेश कुमार गर्ग (मंत्री, मध्य प्रदेश), श्री रमेशचंद्र गोपीकिशन बंग (अध्यक्ष, महाराष्ट्र), श्री पोपटलाल ओस्तवाल (मंत्री, महाराष्ट्र), श्री लोकनाथ डोकानिया (अध्यक्ष, पश्चिम बंग), श्री गोपाल अग्रवाल (मंत्री, पश्चिम बंग), श्री बासुदेव प्रसाद बुधिया (अध्यक्ष, झारखण्ड), श्री विनय कुमार सरावगी (मंत्री, झारखण्ड), श्री .कैलाशमल दुग्गड़ (अध्यक्ष,तमिलनाडु), श्री विजय गोयल (महामंत्री, तमिलनाडु) ।

राजस्थान धरोहर संरक्षण उपसमिति :

संयोजक : श्री नन्दलाल रुंगटा, (चाईबासा)

डायरेक्टरी प्रकाशन उपसमिति :

संयोजक : श्री प्रदीप धोदिया, सदस्य : श्री रामगोपाल बागला, श्री गोपाल अग्रवाल ।

प्रचार प्रसार एवं मीडिया उपसमिति

संयोजक : श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल, सदस्य : श्री नारायण जैन, श्री नरेन्द्र तुलस्यान ।

कला संस्कृति उपसमिति

संयोजक : पूरनमल सिंघवी

सम्मेलन के विगत अधिवेशन और पदाधिकारी

वर्ष	स्थान	सभापति	प्रधानमंत्री
१९३५	कलकत्ता	स्व. रायबहादुर श्री रामदेव चोखानी कलकत्ता	स्व. श्री भूरामल अग्रवाल
१९३८	कलकत्ता	स्व. श्री पद्मपत सिंघानिया कानपुर	स्व. श्री ईश्वरदास जालान
१९४०	कानपुर	स्व. श्री बद्रीदास गोयनका कलकत्ता	स्व. श्री रामेश्वरलाल नोपानी
१९४१	भागलपुर	स्व. श्री रामदेव पोद्दार बंबई	स्व. श्री रामेश्वरलाल नोपानी
१९४३	दिल्ली	स्व. श्री रामगोपाल मोहता बीकानेर	स्व. श्री बजरंगलाल लाठ
१९४७	बंबई	स्व. श्री बृजलाल बियानी अकोला	स्व. श्री रामेश्वरलाल केजड़ीवाल (४९ तक) श्री नंदकिशोर जालान (१९५०-५३)
१९५४	कलकत्ता	स्व. सेठ श्री गोविंददास मालपानी जबलपुर	श्री नंदकिशोर जालान
१९६२	कलकत्ता	स्व. श्री गजाधर सोमानी बंबई	स्व. रघुनाथ प्रसाद खेतान
१९६६	पूना	स्व. श्री रामेश्वरलाल टांटिया कलकत्ता	स्व. श्री रामकृष्ण सरावगी (१९७० तक) श्री दीपचंद नाहटा ((१९७१ से १९७३)
१९७४	रांची	स्व. श्री भंवरमल सिंघी कलकत्ता	श्री नंदकिशोर जालान
१९७६	हैदराबाद	स्व. श्री भंवरमल सिंघी कलकत्ता	श्री नंदकिशोर जालान
१९७९	बंबई	स्व. ऑ. मेजर श्री राम प्रसाद पोद्दार बंबई	स्व. श्री बजरंगलाल जाजू
१९८२	जमशेदपुर	श्री नंदकिशोर जालान कलकत्ता	स्व. श्री बजरंगलाल जाजू श्री रतन शाह (संयुक्त)
१९८६	कानपुर	श्री हरिशंकर सिंघानिया दिल्ली	श्री रतन शाह
१९८९	रांची	स्व. श्री रामकृष्ण सरावगी	स्व. श्री दुलीचंद अग्रवाल
१९९३	दिल्ली	श्री नंदकिशोर जालान	श्री दीपचंद नाहटा
१९९७	हैदराबाद	श्री नंदकिशोर जालान	श्री सीताराम शर्मा
२००१	कानपुर	श्री मोहनलाल तुलस्यान	श्री सीताराम शर्मा
२००४	मुम्बई	श्री मोहनलाल तुलस्यान	श्री भानीराम सुरेका

With best compliments of :

PARK CHAMBERS LIMITED

3/1 LOUDON STREET
Kolkata- 700 071

Phone : 2247-1222

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

प्रांतीय अध्यक्ष एवं मंत्रीगण

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन,पटना
अध्यक्ष, **डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल**
मंत्री, **श्री रामअवतार पोद्दार**

उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, कानपुर
अध्यक्ष, **श्री सोमप्रकाश गोयनका**
मंत्री, **श्री गोपाल सूतवाला**

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, गुवाहाटी
अध्यक्ष, **श्री ओंकारमल अग्रवाल**
मंत्री, **श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल**

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, राउरकेला
अध्यक्ष, **श्री विश्वनाथ मारोठिया**
मंत्री, **श्री गोपाल कृष्ण जाखोटिया**

आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, हैदराबाद
अध्यक्ष, **श्री रमेश कुमार बंग**

मध्य प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, जबलपुर
अध्यक्ष, **श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी**
मंत्री, **श्री रमेश कुमार गर्ग**

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, मुम्बई
अध्यक्ष, **श्री रमेशचंद्र गोपी किशन बंग** (एम.एल.ए)
मंत्री, **श्री पोपटलाल ओस्तवाल**

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, कोलकाता
अध्यक्ष, **श्री लोकनाथ डोकानिया**
मंत्री, **श्री गोपाल अग्रवाल**

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन, रांची
अध्यक्ष, **श्री बासुदेव बुधिया**
मंत्री, **श्री विनय कुमार सरावगी**

तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, चेन्नई
अध्यक्ष, **श्री कैलाशमल दुगड़**
मंत्री, **श्री विजय गोयल**

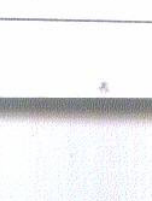

चित्र क्रम : (बायें से) सर्वश्री सोमप्रकाश गोयनका, गोपाल सूतवाला, ओंकारमल अग्रवाल, ओमप्रकाश खंडेलवाल, विश्वनाथ मारोठिया, गोपाल कृष्ण जाखोटिया, रमेश कुमार बंग, (दायें से) मुकुन्द दास माहेश्वरी, रमेश कुमार गर्ग, रमेश चन्द्र बंग, पोपट लाल ओस्तवाल, लोकनाथ डोकानिया, गोपाल अग्रवाल, वासुदेव प्रसाद बुधिया एवं विनय कुमार सरावगी।

सिलचर में मारवाड़ी समाज पर हुए हमले का पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी युवा मंच एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा कड़ा विरोध

प्रवासी मारवाड़ियों की सुरक्षा एवं क्षतिपूर्ति की मांग

९ नवम्बर २००४। असम के सिलचर शहर में एक कपड़ा व्यवसायी के कर्मचारी की मृत्यु के बाद स्थानीय मारवाड़ी समाज को भयंकर हिंसा एवं आगजनी का सामना करना पड़ा। प्राप्त सूचनानुसार १२५ से १५० दुकानें जलाकर राख कर दी गयीं एवं दर्जनों गाड़ियों को फूंक डाला गया। शहर में तनाव की स्थिति बनी विशेषकर मारवाड़ी वर्ग के बीच भय एवं दहशत का माहौल बना। ६-७ नवम्बर को स्थिति इतनी गंभीर एवं संवेदनशील बनी कि प्रशासन को शहर में कर्फ्यू लगाना पड़ा एवं उपद्रवियों को देखते ही गोली मारने का आदेश भी जारी करना पड़ा।

६ नवम्बर को हुई उक्त घटना से स्थानीय मारवाड़ी समाज एवं उनमें व्याप्त भय एवं असुरक्षा की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत, राजस्थान के पूर्व एवं वर्तमान मुख्यमंत्री क्रमश: श्री अशोक गहलोत एवं श्रीमती वसुंधरा राजे, सर्वश्री रामनिवास मिर्धा, बुलाकीदास कल्ला, शिवराज पाटिल, शीशराम ओला आदि केन्द्रीय मंत्रियों एवं विपक्ष के नेता से फैक्स एवं पत्र द्वारा अनुरोध किया कि वे इस मामले में हस्तक्षेप करते हुए केन्द्र एवं राज्य सरकार से स्थिति को नियंत्रित करने तथा मारवाड़ी समाज को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए सभी आवश्यक कदम अविलम्ब उठावें। पत्र में यह भी कहा गया है कि इस अप्रत्याशित घटना एवं स्थानीय सरकारी जिलाधिकारियों को अकर्मण्यता से आपसी विश्वास को भारी ठेस पहुंचा है। विश्वास का माहौल पैदा करने के लिए आवश्यक है कि दोषी उपद्रवियों को गिरफ्तार कर कठोरतम सजा की व्यवस्था हो एवं आम व्यापारी को जो आगजनी में भारी नुकसान हुआ है उसके हर्जाने की राज्य सरकार घोषणा करें।

पत्र एवं त्वरित कार्रवाई करते हुए राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री एवं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव श्री अशोक गहलोत ने असम के मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई से फोन पर बात कर सिलचर में मारवाड़ी समाज पर हुए हमले पर चिन्ता व्यक्त की एवं स्थिति की जानकारी ली। श्री गहलोत ने असम सरकार से प्रवासी मारवाड़ियों की जान माल की पूर्ण सुरक्षा की व्यवस्था करने का अनुरोध किया तथा दोषी व्यक्तियों को तुरंत गिरफ्तार करने को कहा जिससे भय एवं आतंक का वातावरण समाप्त हो सके। श्री गहलोत ने सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा को जोधपुर से फोन पर उक्त जानकारी दी। उन्होंने असम में रह रहे मारवाड़ी समाज को पूर्ण सुरक्षा का भरोसा जताया है।

सम्मेलन के अनुरोध पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा ने केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शिवराज पाटिल से बातकर उनसे पूर्ण जानकारी प्राप्त की एवं आवश्यक केन्द्रीय बलों की तैनाती के लिए अनुरोध किया। श्री मिर्धा ने कांग्रेस अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी को भी इस मामले की जानकारी दी। पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका एवं सचिव श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल ने पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी युवा मंच के पदाधिकारियों सर्वश्री नवलकिशोर मोर (अध्यक्ष), मधुसूदन सिकरिया (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष) एवं अनल कुमार जैना (महासचिव) सहित असम के मुख्यमंत्री तरुण गोगोई तथा असम सरकार के गृहराज्य मंत्री, प्रधान सचिव, गृहमंत्रालय के कमिश्नर एवं बराक घाटी के कमिश्नर आदि सरकार के आला अधिकारियों को तनावपूर्ण परिस्थिति में सिलचर में रह रहे मारवाड़ी बंधुओं की सुरक्षा के लिए शीघ्र ही ठोस कदम उठाने का ज्ञापन दिया। ज्ञापन में सिलचर में हुई घटना की जांच हाईकोर्ट के न्यायाधीश से कराने की मांग की गयी एवं जांच के दायरे में प्रशासन एवं पुलिस द्वारा की गयी लापरवाही को भी शामिल करने का अनुरोध किया गया है। ज्ञापन में कछार जिला प्रशासन एवं वहां की पुलिस द्वारा ड्यूटी में लापरवाही बरतने का अरोप लगाते हुए वहां के उपायुक्त, पुलिस अधीक्षक एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक को तत्काल नौकरी से निलंबित करनी की मांग की गयी है। जब रोम जल रहा था तब सम्राट निरो बासुरी बजा रहा था, जब सिलचर जल रहा था जिले के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी जिलाधिकारी के साथ एक घरेलू समारोह में व्यस्त थे। व्यापारियों, स्थानीय दुकानदारों एवं समाचार पत्रों का कहना है कि यदि प्रशासन पर चेत जाता तो घटना को रोका जा सकता था और स्थिति नियंत्रण में लायी जा सकती थी। सिलचर में यह अपने ढंग की पहली घटना है। इस शहर में अधिकांश बंगाली है और १ हजार मारवाड़ियों के घर हैं। १९८० में यहां साम्प्रदायिक दंगा हुआ था। उसके आसपास आमरा बांगला संगठन ने भी बाहरी लोगों के नाम पर मारवाड़ियों का विरोध किया था।

23019080
23019606 } ऐक्स. : 456
23012692

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

अशोक गहलोत
महासचिव

24 अकबर रोड,
नई दिल्ली–110011

क्रमांक जी./
दिनांक 15–11–2004

प्रिय श्री तरूण गोगई जी,

श्री सीताराम शर्मा उपाध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय मारवाडी सम्मेलन, कलकत्ता का पत्र दिनांक 9–11–2004 मूलरूप मे आपके पास प्रेषित है, जिसमे उन्होने असम के सिलचर शहर मे गत दिनों हुई हिसा एव आगजनी का उल्लेख करते हुए मारवाडी वर्ग को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने हेतु अनुरोध किया है। पत्र मे उन्होने जिन व्यापारियो को आगजनी मे नुकसान हुआ है उनको मुआवजा दिलाने बाबत भी निवेदन किया है।

आपसे अनुरोध है कि इस सबध मे आवश्यक जाच कर समुचित कार्यवाही करवाने का कष्ट करे जिससे पीडित पक्ष को न्याय एवं राहत मिल सके।

शुभकामनाओ सहित,

आपका,

(अशोक गहलोत)

श्री तरूण गोगई,
मुख्यमत्री, असम सरकार
दिसपुर

प्रतिलिपि सूचनार्थ:– श्री सीताराम शर्मा,
152–बी, महात्मा गाधी रोड,
कोलकाता–700007

(अशोक गहलोत)

निवास : नं0 15–17 साउथ एवन्यू, नई दिल्ली–110011

बराक घाटी में मारवाड़ियों द्वारा किए गए सेवा उत्थानमूलक कार्य

बराक घाटी में गरीब निरक्षर बच्चों के लिए आज ४०० एकल विद्यालय चल रहे हैं, जिसका पूरा संचालन यहां का यही मारवाड़ी समाज कर रहा है।

बराक घाटी के पिछड़े क्षेत्रों के शिक्षित व समर्पित युवक-युवतियों को रामायण व भागवत् के प्रशिक्षण के लिए अयोध्या, मथुरा भेजा जाता है जहां से प्रशिक्षण लेकर वे यहां आते हैं और गांव-गांव में रामायण और गीता का प्रचार करते हैं। स्थानीय समाज की उन्नति व बराक घाटी की सुख-शांति के लिए प्रतिवर्ष २-३ बड़े-बड़े धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन मारवाड़ी समाज ही करता है।

शिक्षा और संस्कार के साथ ही स्वास्थ्य की उन्नति के लिए इन्हीं मारवाड़ी समाज द्वारा आरोग्य योजना, गौशाला आदि प्रारंभ किए गए। अग्रवाल सेवा समिति द्वारा कैंसर चिकित्सालय के पास एक विशाल धर्मशाला की योजना भी विचाराधीन है।

सिलचर के सभी सामाजिक संस्थानों में मारवाड़ी समाज का योगदान रहा है चाहे वह रोटरी क्लब हो या लायंस क्लब या भारत विकास परिषद। सिलचर का कोई भी धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठान इनके सहयोग से अछूता नहीं रहता। कोई भी छोटा-बड़ा उत्सव हो सेवा भावना के लिए यहां का आदर्श भक्त मंडल, जैन समिति, अग्रवाल सेवा समिति, महेश्वरी महासभा, तेरापंथ युवक परिषद, मित्र मंडल आदि जुट जाते हैं।

पूरे राष्ट्र में प्रवासी मारवाड़ियों की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रांतीय शाखा पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन सिलचर में बाढ़ की विभीषिका में राहत सामग्री लेकर जान पर खेलकर नाव से सुदूर गांवों में बीहड़ स्थानों में गये। स्थानीय समाचार पत्र **'प्रेरणा भारती'** के सम्पादक का कहना है- **'मैंने आज तक किसी भी मारवाड़ी को किसी अन्य भाषा भाषी के साथ मारपीट करने की घटना नहीं सुनी है- इस पर हत्या करने की बात तो और भी हास्यास्पद लगती है।'**

सिलचर व आसपास के हिन्दी भाषियों ने दिवाली नहीं मनायी

६ नवम्बर की घटना के विरोध में १० नवम्बर को हिन्दी भाषी प्रतिष्ठानों में बंद का पालन किया गया। पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन व बराक घाटी हिन्दी भाषी समन्वय समिति की संयुक्त बैठक में इस बार दिवाली नहीं मनाने का निर्णय लिया गया। हिन्दी भाषी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों व घरों में सजावट नहीं की गयी, बच्चों ने पटाखे भी नहीं फोड़े।

उल्लेखनीय है कि ५ नवम्बर को रात्रि सिलचर के एक कपड़ा व्यवसायी के यहां नियुक्त एक कर्मचारी की कतिपय संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मृत्यु ने सिलचर शहर को अचानक किसी बर्बर लुटेरों के शहर में तब्दील कर दिया। मारवाड़ियों एवं अन्य हिन्दी भाषियों के व्यावसायिक प्रतिष्ठानों एवं आवासों के ऊपर तोड़-फोड़ लूटपाट एवं आगजनी जैसी घृणित कार्य से चारों ओर जंगलराज छा गया, जिसने सिलचर के इतिहास को कलंकित किया ही, राष्ट्रीय एकता पर भी सवालिया निशान लगाया है।

उक्त कलंकित घटना के विरोध में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रांतीय इकाई पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन सहित पूर्वोत्तर हिन्दुस्तानी सम्मेलन आदि अनेकों अन्यान्य संस्थाओं ने भी एक स्वर में अपनी-अपनी आवाज बुलंद की है।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन
गुवाहाटी
वार्षिक प्रतिवेदन : २००४

१. प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं पंचम कार्यकारिणी समिति की बैठक २२ फरवरी को गुवाहाटी में सम्मेलनाध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें आगामी अधिवेशन, संविधान संशोधन एवं अर्थ संग्रह आदि प्रमुख विषयों पर विचार-विमर्श किया गया एवं तदस्तर डा. श्याम सुन्दर हरलालका के संयोजकत्व में संविधान संशोधन उपसमिति, श्री बिमल नाहटा के संयोजकत्व में जनगणना एवं निर्देशिका प्रकाशन उपसमिति के अलावा श्री श्याम सुन्दर लोहिया के नेतृत्व में अर्थ संग्रह समिति का गठन किया गया।

सम्मेलन की लखीमपुर शाखा द्वारा एक 'निर्देशिका' का प्रकाशन किया गया।

मुम्बई अधिवेशन में महामंत्र श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल ने सपत्नीक भाग लिया, जो महिला सम्मेलन की अध्यक्ष एवं अ.भा. महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा भी है।

५. असम में जातीय हिंसा में मृतक हिन्दी भाषियों की मृत्यु पर सम्मेलन की ओर से शोक संवेदना प्रकट की गई। गेलापुखारी में सम्मेलन प्रतिनिधि मंडल ने दौरा किया।

युवा मांच के प्रांतीय अधिवेशन में सम्मेलनाध्यक्ष ने भाग लिया।

सम्मेलन की कई शाखाओं ने 'होली प्रीति सम्मेलन' का आयोजन किया, सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी शामिल है।

सम्मेलन की नगांव का श्री बजरंगलालजी नाहटा की अध्यक्षता में पुर्नगठन, उल्लेखनीय है कि श्री नाहटा प्रांतीय कोषाध्यक्ष का दायित्व भी सम्भाल रहे हैं।

सम्मेलन समाचार का नियमित प्रकाशन।

कई माह में चाबुआ में अपहृत तथा बाद में अबोध शिशु सोनू अग्रवाल की अपहरणकारियों द्वारा की गई हत्या की तीव्र निन्दा एवं प्रशासन से कड़ी कार्यवाही का आहवान।

लोकसभा चुनाव में समान के नव-निर्वाचित संसद सदस्यों को बधाई एवं शुभकामना भेजी गई।

सम्मेलन समाचार के 'हीरालाल पटवारी विशेषांक' का प्रकाशन।

राज्य में आई बाढ प्रकोप में अधिकांश शाखाओं द्वारा बाढ राहत कार्य में योगदान, जिनमें गुवाहाटी, सिलचर, जोरहाट, राहा, लखीमपुर आदि को सराहनीय कार्य रहे।

इंडिया टूडे के १९ जुलाई के अंक में छत्तीसगढ़ मंत्रीमंडल को लेकर मारवाड़ी समाज पर की गई टिप्पणी का पूर्वोत्तर सम्मेलन की ओर से प्रतिवाद।

समय-समय पर स्थानीय समाचार पत्रों द्वारा मारवाड़ी समाज पर असंसदीय भाषा अथवा ओच्छी टिप्पणी व्यक्त करने पर सम्मेलन द्वारा पुरजोर शब्दों में विरोध प्रकट किया गया। गत दिनों स्थानीय दैनिक 'प्रतिदिन' एवं 'नूतन दिन' में प्रकाशित लेखा प्रकाशन पर कड़ा प्रतिवाद किया गया। साथ ही सम्मेलन पदाधिकारियों का गुवाहाटी से प्रकाशित प्रमुख दैनिक पत्रों के सम्पादकों से मिला और उपरोक्त संदर्भ में अपना विरोध प्रकट करते हुए ज्ञापन प्रदान किया।

सम्मेलनाध्यक्ष के नेतृत्व में हाल ही में पदाधिकारियों का एक दल, जिसमें उपाध्यक्ष श्री विजय कुमार मंगलूणिया, महामंत्री श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल के अलावा प्रांतीय कोषाध्यक्ष ने जोरहाट शाखा का दौरा किया और सम्मेलन के भावी द्वादश अधिवेशन के आयोजन के बारे में शाखा पदाधिकारियों से चर्चा की।

१५ अगस्त, स्वाधीनता दिवस के अवसर असम के उग्रवादी संगठन 'अल्फा' द्वारा किये गये बम विस्फोट में धोमाजी में १५ छात्र-छात्राओं और नागरिकों की मृत्यु हो गई एवं कई घायल हो गये, सम्मेलन द्वारा इस घटना की कड़े शब्दों में निंदा की गई एवं शोक संवेदना प्रकट किया गया।

गुवाहाटी, सिलचर और जोरहाट तथा लखीमपुर शाखा द्वारा गत दिनों कई चिकित्सा शिविरों का आयोजन तथा स्वाधीनता दिवस के अवसर पर कैदियों के बीच फल-मिठाई आदि का वितरण।

गत फरवरी माह में हो जाई में अनुष्ठित असम की प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था 'असम साहित्य सभा' के विशेष अधिवेशन के अवसर पर गठित कार्यसमिति में सम्मेलनाध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल, कार्याध्यक्ष चुने गये और साहित्य सभा अध्यक्ष के सम्मान में निकाली गई शोभा यात्रा। जिसमें ५० हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया, में रथ पर सवार असम में आप एकमात्र मारवाड़ी है, जिन्हें साहित्य सभा के इस पद दायित्व का अवसर मिला।

हाल ही में असम के मुख्यमंत्री द्वारा व्यवसाई समाज के बारे में की गई अशोभनीय टिप्पणी के संदर्भ में सम्मेलन द्वारा कड़ा प्रतिवाद करते हुए उन्हें ज्ञापन दिया गया।

गत दिनों उपराष्ट्रपति महामहिम श्री भैरोसिंहजी शेखावत के गुवाहाटी आगमन पर सम्मेलन की ओर से उनका सम्मान किया गया।

सम्मेलन की राहा तथा देरगांव शाखा का पुर्नगठन।

गत ६ नवम्बर की असम के सिलचर शहर में समाज के एक व्यसायिक प्रतिष्ठान में कार्य कर रहे एक स्थानीय युवक की मृत्यु पर कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा बवाल मचाये जाने आहैर उग्र भीड़ द्वारा हिंसात्मक रूप अख्तियार करने की वजह से समाज की करीबन १५० दुकानें जला दी गई व करोड़ों का सामान लूटा और जलाया गया, जिस पर प्रांतीय पदाधिकारियों द्वारा क्षण-प्रतिक्षण की जानकारी सिलचर से ली गई और तत्काल उच्च स्तरीय प्रशासनिक कार्यवाही की गर्स। राज्य के मुख्यमंत्री तरुण गोगोई को एक ज्ञापन दिया गया।

७ नवम्बर को गुवाहाटी में अनुष्ठित प्रांतीय कार्यकारिणी समिति की बैठक में सिलचर की घटना की कड़े शब्दों में निन्दा की गई तथा दीपावली पर किये जाने वाले प्रीति सम्मेलन को सादगी से बनाये जाने का निर्णय लिया गया, जिसमें शाखा से अनुरोध किया

गया था कि इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन न करें।

जोरहाट शाखा द्वारा प्रांतीय सम्मेलन का 'द्वादस अधिवेशन' आयोजन करने का औपचारिक निमंत्रण मुख्यालय को प्राप्त हुआ, जिसकी आपचारिक स्वीकृति मुख्यालय द्वारा दी गई, हालांकि यह अधिवेशन फरवरी माह में होना तय है, परंतु तिथि अभी तय नहीं हुई है, शीघ्र ही होने की संभावना है।

दीपावली तथा छठ पूजा पर सर्व साधारण को बधाई संदेश दिये गये तथा मतदाता सूची में समाज बंधुओं से नाम दर्ज कराये जाने के विषय में प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई।

१५ नवम्बर को स्थानीय श्री नन्दराम पुरोहित की नव-विवाहित सुपुत्री भारतीय जोश की नौखा, राजस्थान में संदिग्ध मृत्यु पर सम्मेलन की ओर से कड़ा प्रतिरोध किया गया तथा शोक संतप्त परिवार को संवेदना प्रकट करने हेतु सम्मेलन महामंत्री श्री ओम प्रकाश जी खण्डेलवाल तथा कार्यालय सचिव ओंकार पारीक, पुरोहित परिवार से मिलकर सम्मेलन की ओर से संवेदनाएं प्रकट की। मुख्यालय की ओर से महिला समिति तथा शिवसागर शाख से इस संबंध से विस्तृत जानकारी चाही, क्योंकि मृतका का विवाह शिवसागर में गत १ मई, २००४ को सम्पन्न हुआ था और ससुराल पक्ष का कारोबार भी वहीं पर है।

हाल ही में २९ नवम्बर को राजस्थान के पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास मंत्रालय के मंत्री श्री कालूलाल गुर्जर के गुवाहाटी पर आयोजित 'नागरिक अभिनंदन' समारोह में सम्मेलन महामंत्री श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल द्वारा मंत्री महोदय का अभिनंदन किया गया एवं सभा को सम्बोधित किया गया।

शिलांग शाखा का सम्मेलनाध्यक्ष तथा अन्य पदाधिकारियों का भ्रमण व शिलांग स्थिति 'शिक्षा कोष छात्रावास' तथा अन्यान्य सामाजिक मुद्दों पर स्थानीय समाज बंधुओं से विस्तृत चर्चा की गई। उल्लेखनीय है कि शिलांग में आपसी मन-मुटाव की वजह से स्थानीय स्तर पर मारवाड़ी समाज की ऐसी कोई भी संस्था नहीं है, जिसको लेकर दो गुट आपस में मामला मुकदमा में व्यस्त है।

गत ४ अक्टूबर को डिमापुर रेलवे स्टेशन पर उग्रवादियों द्वारा बम विस्फोट किया गया एवं असम के तेजपुर में विश्वनाथ चारोली के समीप एक अल्फा द्वारा की गई गोलीकांड में अग्रवाल परिवार के छह लोग मौत के घाट उतार दिये गये व असम के बंगाईगांव, अभयापुरी, डिफु, धुबड़ी, ढालीगांव, जागीरोड व रूनीखाना आदि कई स्थानों पर किये गये बम विस्फोट की सम्मेलन द्वारा कड़े शब्दों में तीव्र निन्दा व अग्रवाल परिवार के घायल व्यक्तियों से सम्मेलन पदाधिकारियों का एक दल गौहाटी मेडिकल कालेज में मिला, तदन्तर विश्वनाथ चाराली जाकर, उनके परिजनों से मिलकर सांत्वना दी और हर प्रकार से सहायता करने का आश्वासन दिया।

गत दिनों राज्य में आई भयावह बाढ़ में सम्मेलन की नगवां, राहा, शिवसागर, जोरहाट, सिलचर, गुवाहाटी, लखीमपुर आदि प्रमुख शाखाओं ने बढ़ चढ़कर प्रभावित क्षेत्रों में राहत सामग्रियां वितरण की और कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव तथा औषधियां आदि भी प्रदान की गई।

गत सितम्बर माह में कोलकाता में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक में सम्मेलनाध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने भाग लिया।

JAI BHARAT COMMERCIAL CORPORATION

23/24, Radha Bazar Street
3rd Floor, Kolkata- 700 001

Phones : 2242-5889, 2242-7995

Fax : 2242-9813

E-mail : jbccsonthalia@yahoo.com

Manufacturers & Suppliers of :-

C.I./M.S./E.R.W/G.I./PVC./Rubber Pipes (Tubes), D.I. Fittings, Pipes Fittings, A.C. Pressure Pipes, C.I.D.Joints, M.S. Rounds, Tor Steel, Rubber Gasket and Rings and Pig Lead etc.

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
महत्वपूर्ण कार्यक्रम एवं गतिविधियां
२००४-२००५

शाखा भ्रमण : बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष डा. रमेश केजड़ीवाल जी के नेतृत्व में प्रमंडलीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम बाजोरिया, श्री जयदेव प्र. नेमानी, एवं श्री बैजनाथ प्र. बंका, प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री रामजी लाल भरतिया द्वारा बिहार के आठ प्रमंडलों में सात प्रमंडलों का दौरा लगभग संपन्न किया जा चुका है। जिसमें पटना प्रमंडल, मगध प्रमंडल, तिरहुत प्रमंडल, सारण प्रमंडल, दरभंगा प्रमंडल, मुंगेर प्रमंडल, पूर्णिया प्रमंडल का दौरा किया जा चुका है। अभी शेष एक प्रमंडल भागलपुर का दौरा दिसम्बर ७-१२-०४ से १३-१२-०४ तक निर्धारित है। जिसमें प्रांतीय पदाधिकारीगण भाग लेंगे। अभी हाल में मुंगेर प्रमंडल एवं मगध प्रमंडल की सत्रह शाखाओं का दौरा प्रांतीय अध्यक्ष के दिशा निर्देशन पर प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री राम जी भरतिया, प्रांतीय संगठन संयोजक श्री जयदेव प्र. नेमानी, श्री बैजनाथ प्र. बंका, मुंगेर प्रमंडल के प्रमंडली उपाध्यक्ष श्री जगदीश प्र. अग्रवाल, लक्खीसराय के शाखाध्यक्ष श्री राम गोपाल डोलिया एवं कर्मचारियों ने किया। पदाधिकारियों ने सामाजिक कुरुतियों एवं आपसी भाईचारा में अभिवृद्धि के लिए शाखाओं में समीक्षा बैठक की। जिसमें शिक्षा, चिकित्सा व्यायामशाला, मृतकभोज के त्याग तथा वैवाहिक कुरीतियां दूर करने के मुदों पर गहन विचार विमर्श किया गया। सर्वसम्मति से यह भी निर्णय हुआ कि मारवाड़ी समाज के जो भी आश्रय विहीन वृद्ध होंगे तथा शाखाध्यक्ष द्वारा अनुशंसा किये जाने पर उनकी परवरिश के लिए नियमित आर्थिक सहायता प्रांतीय कार्यालय द्वारा भेजी जायेगी।

परिचय पत्र : प्रांतीय अध्यक्ष डा. रमेश केजड़ीवाल के दिशा निर्देशन पर बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सभी आजीवन एवं वंशानुगत सदस्यों का परिचय पत्र तैयार किया जा रहा है। अभी तक लगभग ७० परिचय पत्र बनाकर अजीवन एवं वंशानुगत सदस्यों को भेजे जा चुके हैं।

अन्य गतिविधियां : दिनांक २.४-०४ को प्रांतीय अध्यक्ष के निवास पर अपराधियों द्वारा कुमारी प्रियंका की जघन्य हत्या की घटना के विरोध में एक बैठक बुलाई गई, जिसमें स्थानीय पुलिस एवं जिला प्रशासन उनके कर्त्तव्य का निर्वाह न करने पर विरोध प्रकट किया गया एवं उनसे यह आग्रह किया गया कि अविलम्ब अपराधियों को प्रशासन गिरफ्तार करें। दिन प्रतिदिन राज्य में जो यह घटना घट रही है इस पर रोक लगे एवं समाज के लोगों को समुचित सुरक्षा मिले।

सदस्यता अभियान : सत्र २००३-२००५ के प्रांतीय अध्यक्ष के नेतृत्व में सदस्यता अभियान के अंतर्गत अभी तक ९३ वंशानुगत सदस्य एवं १२३ आजीवन सदस्य तथा २४२५ साधारण सदस्य बनाये गये।

बाढ़ग्रस्त पीड़ितों के लिए सहायता कार्य : दिनांक १७-०७-०४ को प्राकृतिक आपदा को देखते हुए प्रांतीय अध्यक्ष ने अपने निवास स्थान पर आपात बैठक बुलाई। जिसमें प्रांतीय अध्यक्ष डा. केजड़ीवाल ने ग्यारह हजार रुपये की सहायतार्थ राशि अनुदान के रूप दिये। राशि से बाढ़ राहत सामग्री चूड़ा, चीनी, नमक मिर्च आदि का वितरण दिनांक २९०-७-०४ से २५-७-०४ तक किया गया।

पटना सिटी शाखा द्वारा बाढ़ सहायता कार्य : शाखा सचिव श्री गोविन्द कानोड़िया द्वारा ५० क्विंटल चूड़ा रोसड़ा के लिए दिया।

भाग्यशाली दान पत्र योजना : भाग्यशाली दान पत्र योजना के अंतर्गत ५,८१,०००.०० रुपये एकत्रित किये गये। इस योजना को प्रांतीय अध्यक्ष डा. रमेश केजड़ीवाल ने सम्मेलन की गिरती हुई अर्थव्यवस्था को देखते हुए किया। योजनो को कार्यान्वित करने के लिए एक भाग्यशाली दान पत्र योजना समिति का गठन किया गया। २५-१२-०३ को भाग्यशाली दान पत्र योजना का ड्रा सम्मेलन कक्ष पटना में निकाला गया। इसमें महत्वपूर्ण भूमिका श्री जयदेव प्र. नेमानी, श्री राम जी भरतिया, श्री कमल नोपानी, श्री राम लाल खेतान, श्री किशोरी लाल अग्रवाल, श्री नन्द किशोर जगनानी, श्री रामौतार पोद्दार, श्री बद्री प्र. भीमसेरिया, श्री बादल चन्द्र अग्रवाल ने निभायी।

गोपी कृष्ण मोर के अपहरण का विरोध: गोपी कृष्ण मोर के अपहरण के विरोध में उत्तर बिहार वाणिज्य परिषद एवं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन नगर शाखा द्वारा दिनांक ७.८.०४ को सामूहिक रूप से समाहर्ता कार्यालय के समक्ष दो घंटे का धरना दिया गया। जिसके अंतर्गत प्रांतीय अध्यक्ष डा. केजड़ीवाल ने अपहरण, हत्या इत्यादि का कड़ा विरोध किया। उन्होंने व्यापारियों को एकजुट होने का आह्वान किया। गोपी कृष्ण मोर के नहीं मिलने पर एक दिन के सिले सारे पेट्रोल पम्प बंद करने का आह्वान किया।

सम्मेलन संवाद पत्रिका : सम्मेलन संवाद पत्रिका हर माह में प्रकाशित की जा रही है। पत्रिका में हर माह होने वाले सामाजिक कार्यक्रमों, दौरा एवं अन्य कार्यक्रमों को नियमित रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

शाखा गतिविधि

पटना शाखा : पटना शाखा द्वारा होली मिलन समारोह में हास्यकवि सम्मेलन किया गया। आयोजन के मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री श्री लालू प्र. यादव जी थे।

बेगूसराय शाखा : अग्रसेन जयंती युवा मंच के साथ मनाई गयी। मुख्य अतिथि प्रांतीय अध्यक्ष डा. रमेश केजड़ीवाल थे।

छपरा शाखा : विश्व मूक बधिर दिवस के अवसर पर बि.प्रा. मा. सम्मेलन, छपरा शाखा द्वारा सारण मूक बधिर विद्यालय में पठन पाठन सामग्री का वितरण किया गया। शाखा के सह मंत्री श्री श्याम बिहारी अग्रवाल ने मूक बधिर विद्यालय में अलमीरा का योगदान दिया। १४ अक्टूबर २००४ को अग्रसेन जयंती छपरा शाखा द्वारा धूमधाम से मनाया गया है। मुख्य अतिथि दिलीप अग्रवाल और विशिष्ट अतिथि सुरेश कु. कानोड़िया श्री श्याम लाल चौधरी, मोहनलाल चांदगोठिया ने महाराजा अग्रसेन जी की जीवनी पर प्रकाश डाला।

लक्खीसराय शाखा : भादो अमावश्या के अवसर पर दादी जी का वार्षिकोत्सव काफी धूमधाम से मनाया गय। दिनांक १७ सितम्बर ०४ को आकर्षक श्रृंगार एवं ज्योति पूजन सुप्रसिद्ध कलाकारों द्वारा भजनों की अमृत वर्षा एवं थली पूजन एवं प्रसाद वितरण तथा श्री दादी जी का मंगल पाठ किया गया।

कटिहार शाखा : स्थापना दिवस के अवसर पर स्वास्थ जांच शिविर कार्यक्रम किया गया। जिसमें ६४० व्यक्तियों की स्वास्थ परीक्षण एवं मुफ्त दवा वितरण किया गया। समारोह का उद्घाटन विधान पार्षद श्री मोहनलाल अग्रवाल ने किया। शाखा द्वारा जगणना कार्यक्रम भी किया गया जिसमें वार्ड नं. २५ में ७३ परिवार तथा ४३५ समाज की जनसंख्या है।

मुजफ्फरपुर शाखा : जनवरी २००४ में स्थापना दिवस के अवसर पर प्रादेशिक अध्यक्ष डा. रमेश केजड़ीवाल की अध्यक्षता में उनके निवास पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

तिरहुत प्रमंडलीय चकिया अधिवेशन संपन्न : महात्मा गांधी की कर्मभूमि चम्पारण की धरती पर दिनांक ९-११-०३ को बारा चकिया शाखा के आतिथ्य में तिरहुत प्रमंडल का एक दिवसीय प्रमंडलीय अधिवेशन श्री सीताराम बाजोरिया उपाध्यक्ष तिरहुत प्रमंडल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रादेशिक अध्यक्ष डा. केजड़ीवाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि बारा चकिया की सामाजिक संस्थाओं के अवलोकन से यह महसूस हो रहा है कि यहां पर हमारे समाज के व्यक्तियों में सामाजिक कार्य करने की ललक है। श्री राणी सती मंदिर का निर्माण, श्री सत्यनारायण मंदिर का जीर्णोद्धार करने की प्रक्रिया में लगे सभी व्यक्तियों का मैं हार्दिक अभिनंदन करता हूं। अधिवेशन के संरक्षक श्री सुभाष कुमार रूंगटा, श्री जगदीश प्र. तुलस्यान, स्वागताध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार अग्रवाल जी के प्रति डा. केजड़ीवाल ने आभार प्रकट किया।

मुम्बई अधिवेशन : मुम्बई अधिवेशन में बिहार के विभिन्न शाखाओं से लगभग २१ प्रतिनिधि डा. रमेश केजड़ीवाल के नेतृत्व में मुम्बई अधिवेशन में भाग लिये। जिसके संयोजक श्री जयदेव प्र. नेमानी थे।

प्रवासी बिहारी मारवाड़ी प्रकोष्ठ का गठन : बिहार प्रादेशिक सम्मेलन के तहत बंगलोर महानगर में प्रवासी बिहार मारवाड़ी प्रकोष्ठ की कार्यकारिणी का गठन मुंजफ्फरपुर के पूर्व निवासी श्री राजेश मोदी के संयोजकत्व में हुआ। जिसमें २०० साधारण सदस्य बनाएं गए।

इस उपरोक्त विवरणों के अतिरिक्त विभिन्न शाखाओं ने कई अन्य कार्यक्रम किये, जिसे सम्मेलन संवाद में एवं समाज में लगातार प्रकाशित किया जा रहा है।

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

महत्वपूर्ण कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की संक्षिप्त रपट

१. मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन का होली मिलन रंगपंचमी के शुभ अवसर पर दिनांक ११ मार्च ०४ को सम्मपन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर जबलपर मारवाड़ी सम्मेलन के पदाकिारियों एवं सदस्यों को भी आमंत्रित किया गया। गुलाल का टीका एक दूसरे को लगाकर सभी गले मिले। हास्य प्रस्तुतियों, व्यंजन-माधुर्य के साथ होली का हुरदंगनामा बड़ा मजेदार रहा, उपस्थितों ने भरपूर आनन्द उठाया।

२. परम्परानुसार मारवाड़ी महिला समाज का होली मिलन समारोह रंगपंचमी के दूसरे दिन दिनांक १२.३.०४ को आयोजित किया गया। गुलाल केटीकों का आदान प्रदान, स्वादिष्ट भोजन और मनोरंजक चुटकुले इस मिलन समारोह के विशेष आकर्षण रहे।

३. होली का आनन्द वृद्धाश्रम तकपहुंचे। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी प्रान्तीय महामंत्री श्री रमेश गर्ग, म.प्र. पश्चक्षेत्रीय माहेश्वरी संगठन के सचिव श्री नवनीत जी अनेक मित्रों सहित रंग गुलाल और मिठाइयां लेकर दिनांक १४ मार्च, ०४ को नगर स्थित वृद्धाश्रम पहुंचे। वृद्धाश्रम में रहने वाले सभी वृद्धों को गुलाल लगाया, रंग के पैकेट और मिठाइयां वितरित की।

४. नि:शुल्क नेत्र शिविर का आयोजन- ग्रामीण क्षेत्रों के नेत्र रोगियों की सहायतार्थ जबलपर नगर से लगभग ४५ किलोमीटर दूर ग्रामकंडी में दिनांक ५ मई ०४ को एक नेत्र शिविर म.प्र. मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से आयोजित किया गया। जिला अस्पताल के नेत्र विशेषज्ञों ने ६० ग्रामीण जनों की आंखों के आपरेशन किए। इन नेत्र रोगियों को दवाइयां और चश्मे वितरित किये गये। भोजन एवं आवास व्यवस्था भी नि:शुल्क की गई।

५. दिनांक २८ मई ०४ को मारवाड़ी समाज जबलपुर के सदस्यों द्वारा महेश भवन गोपाल बाग में महेश नवमी का आयोजन धूमधाम से किया गया।

६. **जिला अस्पताल में फलों का वितरण :** सम्मेलन के सदस्यों ने दिनांक १५ जुलाई ०४ को शिव चतुदर्शी के अवसर पर जिला अस्पताल जाकर रोगियों को फलों का वितरण किया, उनके स्वास्थ्य के संबंध में जानकारी ली।

७. **विचारगोष्ठी :** दिनांक १२-९-०४ को दीवान बहादुर वल्लभदास महल, हनुमानताल, जबलपुर में दहेज समस्या पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी ने इस समस्या पर विस्तार से प्रकाश डाला और आग्रह किया कि मारवाड़ी समाज दहेज स्त्री अभिशाप से स्वयं मुक्त हो तथा अन्य समाजों के लिए प्रेरणा बनें।

८. **दीपावली मिलन :** दिनांक १५-११-०४ को सम्मेलन का दीपावली मिलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के सदस्य आपस में गले मिले, एक दूसरे की शुभाकमानाएं दी तथा सुखद भविष्य के लिए मंगलकामनाएं दी।

९. प्रदेश की राजधानी भोपाल में श्री राधावल्लभ सारडा को प्रादेशिक महामंत्री का पद प्रदान कर भोपाल इकाई को सक्रिय और शक्तिशाली बनाने का प्रयास किया गया।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

सम्मेलन कल आज और कल एवं इसकी प्रासंगिकता

✍ विश्वनाथ मारोठिया

सम्मेलन की स्थापना हुए ७० वर्ष होने को आए। स्थापना के समय के कुछ ही व्यक्ति जिन्होंने इस पुण्य कार्य में सहयोग किया होगा आज हमारे बीच बचे हो सकते हैं एवं जो बालक रहे होंगे आज पितामह के रूप में अपने जीवन की अन्तिम पारी खेल रहे हैं। मेरे जैसा व्यक्ति जिसका उस समय जन्म भी नहीं हुआ था वह भी अन्तिम पारी की तरफ अग्रसर हो रहा है।

सम्मेलन ने अपने जन्म काल से अभी तक काफी समाजिक उत्थान के कार्य किए हैं। सम्मेलन की उपलब्धियों को शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। सम्मेलन से जुड़े लोगों का समस्त देश में एक अलग पहचान, मान एवं मर्यादा हुआ करती थी जिस तरह भारत में स्वतंत्रता सैनानियों की मान मर्यादा एवं इज्जत होती थी वैसी ही, उससे किसी माने में कम मान मर्यादा सम्मेलन के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं की नहीं हुआ करती थी। सम्मेलन के व्यक्ति किसी भी नगर या ग्राम में पहुंचने पर उनका अभूतपूर्व स्वागत सम्मान होता था तथा लोगों की काफी अच्छी उपस्थिति हो जाती थी। सम्मेलन के पदाधिकारियों का उस समय सम्मेलन के नियमों के प्रति पूर्ण समर्पण रहता था। उनकी कथनी एवं करनी में फर्क नहीं होता था। कार्यकर्त्ता भी उनका अनुसरण करते थे एवं इसमें गौरव अनुभव करते थे।

किन्तु आज वे पहली वाली बातें नहीं आज सम्मेलन के समक्ष कार्यक्रमों की कमी है। सम्मेलन से शक्त लोगों को जोड़ने के लिए काफी मशक्त करनी पड़ती है। सम्मेन के सांस्कृतिक एवं अन्य सामाजिक कार्यक्रमों में उपस्थिति हेतु काफी प्रयास करने पर भी पूर्व की बात नजर नहीं आती। अधिवेशनों में भी जहां अधिवेशन होते हैं वहां की उपस्थिति ही रहती है अखिल भारतवर्षीय उपस्थिति का अनुपात उतना उत्साहवर्द्धक नहीं होता। हमें इसका कारण में जाना होगा तथा सम्मेलन की पुरानी प्रतिष्ठा को प्राप्त करना होगा। इसके लिए सभी लोगों को प्रयास करना है खास कर पदाधिकारियों को जिनके कंधों पर नेतृत्व का भार है।

आज मारवाड़ी समाज में विजातीय (दूसरे समाज) बच्चों के सात प्रेम विवाह काफी बढ़ गया है। इसका कारण अपने समाज के लड़के लड़कियों का इतर समाज के लड़के लड़कियों के साथ पढ़ना लिखना, मिलना जुलना साथ ही परिवार वालों का ऐसे संबंधों को न चाहते हुए भी स्वीकृति प्रदान करना ऐसे संबंधों की वृद्धि में सहायक है। मैं यह नहीं कहता कि ऐसे संबंधों को नकार देना चाहिए। मना करने से अन्य विपरीत परिणाम निकले हैं तथा निकल सकते हैं। हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को एक सोच देना होगा कि यदि वे प्रेम विवाह के बंधन में बंधना ही चाहते हैं तो अगर बच्चे मारवाड़ी समाज के हो तो ज्यादा अच्छा एवं सफल जीवन व्यतीत हो सकता है। आज आवश्यकता है कि मारवाड़ी समाज की अन्य जातियों में आपस में विवाह संबंध आरंभ हो। यथा वैश्य वृत्तिवाले अग्रवाल, महेश्वरी, ओसवाल, खण्डेलवार वर्ग में आपस में सम्बन्ध हो तो हर वर्ग को ज्यादा पसंद एवं चुनाव करने के लिए लड़के-लड़कियां प्राप्त होने। उसी प्रकार ब्राह्मण समाज में भी गौड़, पारीक, खण्डेलवाल दायमा पुष्करणा आपस में संबंध करे तो ज्यादा अच्छा होगा। मेरी समझ से सम्मेलन को यह भावना समाज को देनी चाहिए। साथ ही आज समाज के इमक्ष राजेगार आमदनी एक बड़ी समस्या है। युवकों को इसका मार्ग दर्शन मिलने से समाज की प्रगति एवं सम्मेलन का वर्चस्व सारे भारत में बढ़ेगा। सम्मेलन पदाधिकारियों को भ्रमण कर जन सम्पर्क बढ़ानाहोगा तभी हम अपनी प्रतिष्ठा पुन: स्थापित कर सकेंगे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

कार्यकारिणी समिति की बैठक के निर्णय

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति की बैठक २३ नवम्बर २००४ को सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने गत बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनायी जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

सिलचर की घटना पर चिन्ता व्यक्त की गयी एवं इसकी पुनरावृत्ति न हो इस पर गंभीरता से विचार किया गया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री एवं अन्यान्य केन्द्रीय व राज्यमंत्रियों से सम्पर्क कर उन्हें दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने, स्थानीय मारवाड़ी समाज को सुरक्षा प्रदान करने एवं उन्हें अविलम्ब क्षतिपूर्ति करने का अनुरोध किया गया है। श्री शर्मा ने व्यक्तिगत रूप से पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा एवं राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत से इस सम्बन्ध में बातचीत की।

सर्वसम्मति से निम्न उपसमितियों का गठन किया गया एवं उसके संयोजक बनाये गए-

संगठन व सदस्यता बनाने हेतु उपसमिति : संयोजक : श्री सुभाष मुरारका, राजस्थान धरोहर संरक्षण उपसमिति : संयोजक : श्री नन्दलाल रूंगटा (चाईबास), डायरेक्टरी प्रकाशन उपसमिति : संयोजक : श्री प्रदीप धेढ़िया, प्रचार प्रसार एवं मीडिया उपसमिति : संयोजक : श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल, कला संस्कृति उपसमिति : संयोजक : पी.एम. सिंघवी।

महामंत्री श्री सुरेका ने स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर प्रकाशित हो रहे समाज विकास विशेषांक के लिए लेख व विज्ञापन सहयोग का अनुरोध किया।

उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने पिछले कई दशकों से सम्मेलनों से जुड़े एवं समाज में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले दो वयोवृद्ध समाजसेवियों का नाम, पता एवं विस्तृत परिचय की जानकारी सदस्यों से चाही ताकि स्थापना दिवस के अवसर पर सम्मेलन द्वारा उन्हें सम्मानित किया जा सके।

कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने अखिल भारतीय स्तर पर कार्यालय द्वारा विवाह योग्य लड़के-लड़कियों का बायो डाटा उपलब्ध करने की व्यवस्था का सुझाव दिया।

सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान ने बिहार एवं झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के सम्पत्ति के बंटवारे के लिए एक उपसमिति का गठन किया जिसके अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा को मनोनीत किया गया। दोनों प्रांतों से दो सदस्यों के मनोनयन का दायित्व वहां के अध्यक्ष को दिया गया।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

दुर्गापुर : महाराजा अग्रसेन जयन्ती सम्पन्न

१५ अक्टूबर २००४! सम्मेलन की दुर्गापुर शाखा द्वारा पूज्य श्री अग्रसेन महाराज की जन्म जयन्ती बड़े धूमधाम से मनायी गयी- जहां भारी संख्या में जनगण का समावेश हुआ और उन्हें प्रसाद वितरण किया गया। पितृपक्ष के अवसर पर यहां की महिलाओं ने १० अक्टूबर को नरनारायण सेवा कर करीब ५५० लोगों को प्रसाद वितरण किया।

शाखा द्वारा बच्चों तथा युवा-युवतियों को शिक्षा के क्षेत्र में उत्साहित करने हेतु प्रतिभाशाली छात्रों एवं छात्राओं को प्रशंसा पत्र एवं रजत पदक प्रदान किए जाते हैं। कम्प्यूटर के ज्ञान को विकसित करने के लिए समाज के छात्रों को कम्प्यूटर एवं योग्य फेकल्टी द्वारा यह शिक्षा दी जा रही है जिसमें डाटा प्रो वाले श्री विमल पटवारी का योगदान सराहनीय है। सम्मेलन द्वारा प्रस्तावित हाउसिंग सोसायटी का काम भी अग्रसर है।

कोलकाता : दीपावली प्रीति सम्मेलन सम्पन्न

१३.११.२००४! कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन तथा पश्चिम बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त तत्वावधान में श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय सभागार में ६०वां दीपावली प्रीति सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ शाका उपाध्यक्ष श्री गोविन्द शर्मा द्वारा सरस्वती वन्दना से किया गया। श्री रमेश गोयनका ने अपने स्वागत गीत एवं दीपावली प्रीति गीत के द्वारा आपसी प्रेम की भावना का संदेश दिया। मारवाड़ी समाज के परम्परागत प्रीति सम्मेलन पर अध्यक्षता करते हुए

प्रख्यात समाज सेवी श्री गोपीराम बड़ोपोलिया ने मारवाड़ी समाज के गौरवपूर्ण इतिहास का उल्लेख करते हुए कहा कि ''राजस्थान से लोटा डोरी लेकर निकले हमारे पूर्वज जहां भी गए अपनी मेहनत, ईमानदारी से उस क्षेत्र को प्लावित, पुष्पित किया। कलकत्ता मारवाड़ियों का दूसरा घर है। यहां अनेकों संस्थाएं हमारे समाज द्वारा संचालित है। मारवाड़ी समाज की खास विशेषता है कि वह अपने साथ-साथ दूसरे समाज के लिए भी चिन्ता करता है। कुरीतियों को मिटाने में सम्मेलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। लड़कियों की शिक्षा के पहल के लिए सम्मेलन ने जो कार्य किया है वह सराहनीय है। आज हमारे समाज में धन प्रदर्शन की होड़ लगी है। इस कुरीति को आत्म चिन्तन द्वारा दूर करना होगा। उन्होंने सामाजिक कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि अब एक बार फिर समय आ गया है कि दहेज के विरोध में आडम्बर, दिखावा आदि सामाजिक कुरीतियों का विरोध कर रचनात्मक कार्यों, स्कूल, अस्पताल, धर्मशाला में अपना सहयोग प्रदान करें।

बुराई रूपी रावण को अच्छाई रूपी राम के द्वारा नाश करना होगा। तभी प्रीति सम्मेलन की सार्थकता होगी।

इसके पूर्व कोलकाता मारवाड़ी सम्मेलन के चेयरमैन श्री अनिल शर्मा ने संक्षेप में श्री बड़ोपोलिया का जीवन परिचय दिया।

समारोह में मारवाड़ी समाज के विशिष्ट व्यक्तियों ने अंश ग्रहण किया जिनमें मुख्य थे सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, महामंत्री भानीराम सुरेका, रतन शाह, लोकनाथ डोकानिया, गोपाल अग्रवाल, दिनेश बजाज, सांवरमल अग्रवाल, दुर्गा प्रसाद नाथानी, अरूण मल्लावत, आत्माराम तोदी आदि।

कार्यक्रम का सफल संचालन शाखाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश पोद्दार ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन पूर्व शाखाध्यक्ष श्री सांवरमल भीमसरिया ने किया।

उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कानपुर : पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य (२००४-२००६)

१. श्री सोम प्रकाश गोयनका - अध्यक्ष, २. श्री विश्वनाथ पारीक- उपाध्यक्ष, ३. श्री प्रमोद अग्रवाल गोल्डी- उपाध्यक्ष, ४. श्री गोपाल सूतवाला- महामंत्री, ५. श्री राजेश केसरा- मंत्री, ६. श्री सुशील गोयनका- मंत्री, ७. श्री राजकुमार नेवटिया- कोषाध्यक्ष, ८. श्री मदनगोपाल तापड़िया- प्रचारमंत्री, ९. श्री ए.पी. गुप्ता- कार्यकारिणी, १०. श्री सत्यनारायण सिंहानिया- कार्यकारिणी, ११. श्री किशन जोशी- कार्यकारिणी, १२. श्री अनिल शर्मा- कार्यकारिणी, १३. श्री काशी सोनी- कार्यकारिणी, १४. श्री रमेश गोयनका कार्यकारिणी, १५. श्री मयंक मौली बजाज- कार्यकारिणी, १६. श्री विजय पाण्डे- कार्यकारिणी, १७. श्री प्रदीप अग्रवाल- कार्यकारिणी, १८. श्री आशीष अग्रवाल- कार्यकारिणी, १९. श्री किशोर अग्रवाल- कार्यकारिणी, २०. श्री नवीन अग्रवाल- कार्यकारिणी, २१. श्री अनिल कुमार अग्रवाल कार्यकारिणी, २२. श्री नन्दकिशोर हमीरवासिया कार्यकारिणी, २३. श्री फूलचन्द अग्रवाल- कार्यकारिणी, २४. श्री रमेश चन्द्र अग्रवाल- कार्यकारिणी, २५. श्री विष्णु कुमार अग्रवाल- कार्यकारिणी, २६. श्री देव प्रकाश बरासिया- कार्यकारिणी, २७. श्री गोपाल कृष्ण कानोडिया- कार्यकारिणी, २८. श्री आदित्य बरासिया कार्यकारिणी, २९. श्री सुभाष खेडिया- कार्यकारिणी, ३०. श्रीमती मधु गोयनका- कार्यकारिणी, ३१. श्रीमती पुष्पा बगड़िया कार्यकारिणी।

अक्टूबर अंक में प्रकाशित कानपुर शाखा की २००४-२००६ की नई कार्यकारिणी व पदाधिकारियों की सूची में दो नाम अप्रकाशित रह गये थे जिन्हें यहां प्रकाशित किया जा रहा है- श्री सुनील मुरारका- मंत्री, श्री सुबोध रुंगटा संयुक्त मंत्री।

संस्था के सुसंचालन हेतु बनायी गयी उपसमितियां

कानपुर शाखा के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण सिंहानिया एवं महामंत्री श्री अनिल परसरामपुरिया ने एक अपील जारी करते हुए सदस्य भाई-बहनों से तन-मन-धन से सहयोग देने का आह्वान किया है ताकि वर्तमान सत्र २००४-०५ में संकल्पित उद्देश्यों की पूर्ति की जा सके। उन्होंने अपील में समस्त सदस्य भाई-बहनों से व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित करने, उनके मूल्यवान सुझावों एवं समाज के महती उपयोगिता सिद्ध करने वाली सूचनाओं को संकलित करके सम्मेलन की उपयोगिता को सिद्ध करने, समाज में छिपी हुई प्रतिभाओं को उजागर करने आदि हेतु निम्न उपसमितियों का गठन किया एवं उनके संयोजक मनोनीत किये-

विवाह एवं स्वावलम्बन सहायता समिति- श्री बासुदेव सर्राफ, शिक्षा एवं उपचार सहायता समिति- श्री मनोज टीबड़ेवाल, सदस्यता फार्म जांच समिति - श्री विश्वनाथ पारीक, स्थायी परियोजना समिति - श्री कीर्ति सर्राफ, स्मारिका प्रकाशन समिति- श्री बालकृष्ण शर्मा, प्रशासनिक एवं तात्कालिक कार्य समिति- श्री नरेन्द्र कुमार भगत, स्वास्थ्य शिविर आयोजन समिति- श्री कमेश गर्ग, मारवाड़ी भाषा, साहित्य, कला, एवं संस्कृति प्रोत्साहन समिति श्री भजनलाल शर्मा, जनसंपर्क समिति- महामंत्री, महिला कार्यक्रम समिति- श्रीमती रेनू भोजनगरवाला एवं श्रीमती बिन्दा भुकानिया।

एक महत्वपूर्ण सूचना के तहत कानपुर शाखा ने अपने सभी सदस्यों को परिचय-पत्र जारी करने हेतु उनसे दो पासपोर्ट साईज फोटो संस्था के महामंत्री श्री अनिल परसरामपुरिया ५५/०९ काहू कोठी, कानपुर २०८००१ को भेजने का निवेदन किया है।

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

रांची : राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत

१५ अक्टूबर ०४, ''देश में मारवाड़ी समाज की संख्या लगभग १० करोड़ है। इस जनसंख्या के अनुसार ५० सदस्य लोकसभा में होने चाहिए। हमारे पास संख्या बल है, लेकिन, उसका प्रदर्शन सही ढंग से नहीं हो पा रहा है। सभी को समान रूप से आरक्षण मिलना चाहिए हमारे समाज में भी पिछड़े लोगों की संख्या काफी है देश भक्ति की भावना लोगों में स्वत: जागनी चाहिए मारवाड़ी समाज सिर्फ अपने ही हित की बात नहीं करता बल्कि पूरे देश की हित का बात करता है।'' समाज के बन्धुओं से राष्ट्र तथा समाज के नवनिर्माण तथा नवसृजित राज्य झारखण्ड के विकास योगदान देने का आह्वान करते हुए उक्त बातें सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहन लाल तुलस्यान ने झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वावधान में आयोजित एक गोष्ठी में कही।

इसके पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष श्री बासुदेव बुधिया ने श्री तुलस्यान का स्वागत करते हुए उपस्थित सदस्यों से उनका परिचय कराया। सम्मेलन से जुड़े मारवाड़ी सहायक समिति के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ नारसरिया, श्री धर्मचन्द बजाज तथा श्री प्रेम कटारुका ने भी अपने विचार गोष्ठी में रखे। गोष्ठी की अध्यक्षता प्रान्तीय अध्यक्ष श्री बुधिया ने की तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रमण्डलीय उपाध्यक्ष श्री गोर्वधन गारोदिया ने किया। गोष्ठी में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों सहित बड़ी संख्या में समाज बन्धुगण उपस्थित थे जिनमें प्रमुख थे सर्वश्री भाग चन्द पोद्दार, विश्वनाथ नारसरिया, सुरेश चन्द्र अग्रवाल, महावीर जैन सोगानी, धर्म चन्द्र जैन, पवन जैन, पवन शर्मा, चण्डी प्रसाद डालमिया, विष्णु लोहिया, ओमप्रकाश अग्रवाल, ओमप्रकाश प्रणव, रतन लाल बंका आदि।

श्री तुलस्यान के रांची पहुंचने पर प्रान्तीय अध्यक्ष बुधिया के नेतृत्व में समाज-बन्धुओं ने उनका स्वागत किया। अपने रांची प्रवास के क्रम में श्री तुलस्यान ने प्रान्तीय कार्यालय में जाकर सम्मेलन के कार्यकलापों की जानकारी ली।

प्रान्तीय अध्यक्ष का चुनाव ६ मार्च २००५ को रांची में

२१ नवम्बर २००४। प्रान्तीय महामंत्री श्री विनय सरावगी एवं निर्वाचन समिति संयोजक श्री रतनलाल बंका के सूचनानुसार प्रान्तीय समिति की कार्यकारिणी की बैठक में लिए गए निर्णय पर नये सत्र के चुनाव हेतु आवश्यक कार्यवाही के तौर पर निर्वाचन समिति का गठन किया गया एवं रविवार ६ मार्च २००५ को रांची में प्रान्तीय अध्यक्ष के चुनाव किए जाने की घोषणा की गयी। कार्यक्रम निम्नानुसार है-

निर्वाचक मण्डल की अन्तिम सूची का प्रकाशन : ३१ दिसम्बर, २००४ को, नामांकन पत्र का दाखिला, ३१ जनवरी २००५, नामांकन पत्रों की जांच, ७ फरवरी २००५, नामांकन पत्र वापसी १८ फरवरी २००५, उम्मीदवारों की अन्तिम सूची का प्रकाशन २१ फरवरी २००५, मतदान (आवश्यक होने पर) ६ मार्च २००५, चुनाव परिणाम ६ मार्च २००५।

आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

हैदराबाद : रमेशकुमार बंग आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित

४ नवम्बर। आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री रमेशकुमार बंग को आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का अध्यक्ष बनाया गया। सम्मेलन के निवर्तमान कार्यसमिति की नए अध्यक्ष के चुनाव हेतु बैठक मारवाड़ी सम्मेलन नगर शाखा के अध्यक्ष श्री प्रस्तावित श्री रमेश कुमार बंग सर्वसम्मति से श्री रामकिशन गुप्ता ने श्री बंग को बधाई देते हुए दिया। श्री रमेश कुमार बंग ने आभार प्रकट करते विचार-विमर्श कर शीघ्र ही प्रान्तीय अधिवेशन ने उपस्थित सदस्यों को आश्वस्त किया कि के सहयोग और मार्गदर्शन से सुदृढ़ बनाने के हर

आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के राठौड़ का आशा व्यक्त की है कि श्री रमे कुमार सोच और पहचान मिलेगी। बैठक में सम्मेलन के निवर्तमान प्रादेशिक अध्यक्ष रामकिशन गुप्ता, डा. आर.एम. साबू, प्रेमसिंह राठौड़, चैनसुख काबरा, रामनारायण काबरा, पुरुषोत्तम दास मानधना, चैनराम पंवार, जयप्रकाश लड्ढा, शंकरलाल बंग, जगदीश प्रसाद मायछ, नरेशन्द्र विजयवर्गीय, राम सिंह चौहान, गिरधारीलाल डागा, प्रेमचन्द शर्मा, बाबूलाल पवार एवं मोहनलाल शर्मा उपस्थित थे।

अध्यक्ष रामकिशन गुप्ता के अनुसार की प्रादेशिक आयोजित की गयी। हैदराबाद सिकन्दराबाद मुरली नारायण बंग द्वारा प्रादेशिक अध्यक्ष हेतु प्रादेशिक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। निर्वतमान अध्यक्ष प्रादेशिक सम्मेलन आयोजित करने का सुझाव हुए कहा कि सभी शाखा सभाओं एवं सदस्यों से आयोजित करने का प्रयास किया जायेगा। श्री बंग प्रान्तीय सम्मेलन के सांगठनिक ढांचे को आप सभी संभव प्रयास किये जायेंगे।

परामर्शदाता डॉ. रामविलास साबू एवं श्री प्रेम सिंह बंग के नेतृत्व में प्रान्तीय सम्मेलन को नई दिशा,

तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

चेन्नई : नये प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाशमल दुगड़

श्री बालकृष्ण गोयनका द्वारा प्राप्त सूचना अनुसार तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नये अध्यक्ष श्री कैलाशमल दुगड़ निर्वाचित हुए हैं। प्रांतीय महामंत्री के रूप में श्री विजय गोयल मनोनीत किये गये।

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

इचलकरंजी : दीपावली प्रीति मिलन एवं समाज जोड़ों कार्यक्रम

१५ नवम्बर। इचलकरंजी शाखा द्वारा दापावली के अवसर पर समाज संगठन के उद्देश्य से सभी राजस्थानी समाज के भाइयों एवं बहनों का सपरिवार स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस रंगारंग समारोह में समाज के कई प्रबुद्ध गणमान्य उपस्थित थे।

नेपाल राष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन

काठमाण्डु : विश्व मारवाड़ी सम्मेलन २००५ शीघ्र आयोजित होंगे

आगामी विश्व मारवाड़ी सम्मेलन २००५ का आयोजन नेपाल की राजधानी काठमाण्डु में शीघ्र ही आयोजित होने जा रहा है जिसमें भारतवर्ष के हर कोने से मारवाड़ी समाज-बंधुओं के भाग लेने की सम्भावना है। यह जानकारी संयोजक श्री शंकरलाल केडिया ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान को एक फैक्स संदेश में दी। श्री केडिया ने यह भी जानकारी दी है कि अधिवेशन में भाग लेने के इच्छुक समाज बंधुओं को काठमाण्डु में तीन दिन के आवास एवं भोजन की व्यवस्था की गई है। प्रतिनिधि शुल्क ५००० रुपये तय किया गया है।

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

जूनागढ़ : 'पुअ जिऊंतिया' सम्पन्न

६ अक्टूबर २००४ जूनागढ़, कालाहांडी जिला संस्कृति परिषद एवं चमेली देवी महाविद्यालय के मिलित सहयोग से उड़ीसा का प्रसिद्ध त्यौहार 'पुअ जिऊंतिया' जोर-शोर से मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्रीयुक्त विक्रम केसरी देव ने 'पुअ जिऊंतिया' एवं नारी शिक्षा इत्यादि विषय पर चर्चा की लंकेश्वरी उच्च बालिका विद्यालय एवं चमेली देवी महिला महाविद्यालय की प्रगति के लिए पांच-पांच लाख रुपये एम.पी. फण्ड से देने की घोषणा की। जिला सांस्कृतिक परिषद के सम्पादक श्री सुक्रु स्वाई सभापति श्री जयन्त वह विशिष्ट कथाकार श्रीमती देवहुति कर ने समारोह में उड़ीसा की प्राचीनतम संस्कृति को बचाए रखने की चेष्टाओं पर बल दिया तथा पुअ जिऊंतिया पर्व मनाने के कारणों को बताया। समारोह के सभापति श्री माणिकचंद अग्रवाल ने अतिथियों का परिचय दिया श्रीमती प्रियमंजरी पण्डा ने स्वागत भाषण दिया। समारोह में अनेकानेक प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण किया गया।

जूनागढ़ : अग्रसेन जयन्ती समारोह सम्पन्न

१४.४.०४ मारवाड़ी युवा मंच व मारवाड़ी महिला समिति द्वारा अग्रसेन जयन्ती समारोह मनाया गया। महिला समिति सभापति श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत किये। युवा मंच सम्पादक श्री श्याम सुन्दर शर्मा एवं महिला समिति सम्पादिका श्रीमती कोमल अग्रवाल रिपोर्ट पढ़कर सुनाये। मुख्य वक्ता श्री टेकचन्द जैन सम्मानित अतिथि श्री मौजीराम जैन (पूर्व उप सभापति अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन) ने महाराजा अग्रसेन का वर्णन किया। मुख्य अतिथि विधायक श्री हिमान्शु शेखर मेहेर ने मारवाड़ी युवा मंच को एक शव वाहक गाड़ी देने की घोषणा की। पूर्व नगर पाल लायन माणिक चंद अग्रवाल ने सभी की अध्यक्षता की। विभिन्न प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरण किया गया। युवा मंच सभापति श्री मुकेश कुमार अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कानपुर शाखा : स्नेह मिलन समारोह आयोजित

२४ अक्टूबर २००४। महिला समिति की कानपुर शाखा द्वारा 'स्नेह मिलन' तथा 'सम्मान समारोह' आयोजित किया गया। महिला समिति द्वारा अपनी पत्नी को चूड़ियां पहनाना, क्विज, मारवाड़ी भाषा प्रतियोगिता आदि अनेक मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, जिसका ६०० सदस्य परिवारों ने लुफ्त उठाया। समिति की संयोजिका श्रीमती रेनू भोजनगरवाला तथा श्रीमती बिन्दा भुकानिया ने आगे अनेक रचनात्मक, मनोरंजक एवं समाज सेवा के कार्यक्रम की घोषणा की।

कानपुर शाखा के 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम में मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत करती महिला समिति की सदस्या। बाएं से दाएं- श्रीमती शशि अग्रवाल, डा. कमल मुसद्दी (माइक पर), श्रीमती रेनू भोजनगरवाला, श्रीमती अलका नेवटिया एवं श्रीमती बिन्दा भुकानिया।

समारोह में प्रतिष्ठित उद्योगपति व समाजसेवी श्री बालकृष्ण श्रिया, डाक्टर बी.एन. अग्रवाल, श्री पुरुषोत्तमदास तापनीवाल एवं श्री मुरलीधर बाजोदिया को संस्था की तरफ से मारवाड़ी गौरव से सम्मानित किया गया।

संस्था के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण सिंहानिया ने स्वागत भाषण में समाज के सभी परिवारों से एकजुटता का आहवान किया और समाज के जरूरतमंद परिवारों के लिए तन-मन-धन से समर्पित होने का अनुरोध किया। संस्था के महामंत्री अनिल परसरामपुरिया ने संस्था द्वारा कार्यों की रूपरेखा बताई।

श्रीमती अलका नेवटिया, श्रीमती पूनम पारीक, श्रीमती शशी अग्रवाल के प्रयास सराहनीय रहे। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष श्री श्याम गोयनका, प्रदेश महामंत्री श्री श्रीगोपाल सूतवाला एवं विधायक श्री सलिल विश्नोई की उपस्थिति विशेष उत्साहवर्धक रही। संस्था के पदाधिकारी में सर्वश्री सुशील तुलस्यान, सत्येन्द्र महेश्वरी, सुनील मुरारका, सुबोध रुंगटा, महेश भगत एवं कार्यकारिणी के सर्वश्री रमेश रुंगटा, विश्वनाथ पारीक, बल्देव जाखोदिया, हरीकृष्ण चौधरी, श्री राम अग्रवाल, बासुदेव सर्राफ, किर्ती सर्राफ, सुनील केडिया, मनोज टीबड़ेवाल, नरेन्द्र भगत, बालकृष्ण शर्मा, भजनलाल शर्मा, पंकज बंका, कमलेश गर्ग, अनूप सिंगतिया सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

कोलकाता : कृत्रिम पाँव प्रत्यारोपण शिविर आयोजित

१०.१०.२००४। कलकत्ता मारवाड़ी महिला सम्मेलन की ओर से स्थानीय महावीर सेवा सदन में ३१ व्यक्तियों को कृत्रिम पांव प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन किया गया था। जिसमें पुरुष, बच्चे, महिलाएं शामिल थीं। इसमें सम्मेलन की ओर से ३१००० रु. का अनुदान दिया गया। श्रीमती पुष्पा [illegible]- अध्यक्षा, सूर्यकांत मिश्रा- स्वास्थ्य मंत्री प. बं., मीना पुरोहित- मेयर कोलकाता, रतन शाह- अध्यक्ष प. बं. हिन्दीभाषी समाज, सरदार मल [illegible]रिया शिक्षाविद् श्रीमती बिमला [illegible]कानिया- राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री [illegible]नाथ डोकानिया- अध्यक्ष प. बंगाल प्रा. मा. सम्मेलन, श्रीमती रेणु अग्रवाल मंत्री, सुशीला चेनानी- कोषाध्यक्ष तथा अन्य [illegible] ने भाग लिया।

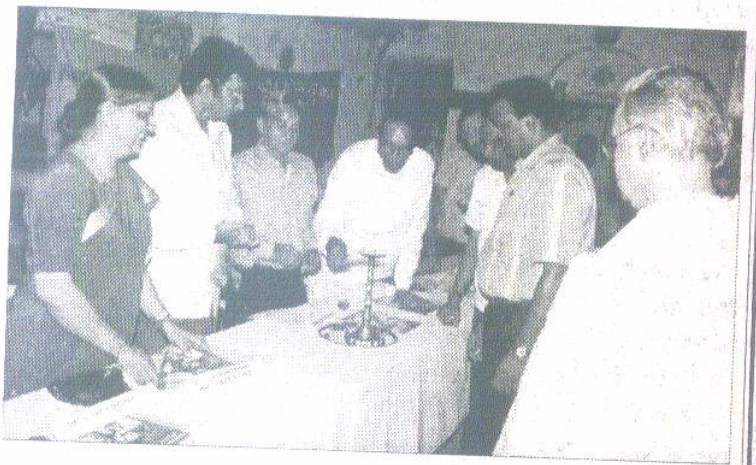

श्री श्रीगोपाल सूतवाला एवं विधायक श्री सलिल विश्नोई की उपस्थिति विशेष उत्साहवर्धक रही। संस्था के पदाधिकारी में सर्वश्री सुशील तुलस्यान, सत्येन्द्र महेश्वरी, सुनील मुरारका, सुबोध रुंगटा, महेश भगत एवं कार्यकारिणी के सर्वश्री रमेश रुंगटा, विश्वनाथ पारीक, बल्देव जाखोदिया, हरीकृष्ण चौधरी, श्री राम अग्रवाल, बासुदेव सर्राफ, किर्ती सर्राफ, सुनील केडिया, मनोज टीबड़ेवाल, नरेन्द्र भगत, बालकृष्ण शर्मा, भजनलाल शर्मा, पंकज बंका, कमलेश गर्ग, अनूप सिगतिया सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जूनागढ़ : दीपावली मिलन समारोह आयोजित

१५ नवम्बर। दीपावली के शुभ अवसर पर जूनागढ़ मारवाड़ी महिला समिति द्वारा दीपावली मिलन समारोह धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर एक साधारण सभा का आयोजन हुआ जिसमें सम्माननीय अतिथि के रूप में जूनागढ़ एन.ए.सी. की अध्यक्षा श्रीमती सीतादेवी माझी उपस्थित थीं। समारोह का मुख्य आकर्षण था श्री श्यामसुन्दर एवं कस्तुरीबाई जो अपने बलबूते पर ३० अनाथ बच्चों का भरण पोषण कर रहे हैं। यशोदा अनाथ आश्रम नाम के इस छोटे से आश्रम को सरकार की ओर से कभी कोई सहायता नहीं मिली। आर्थिक रूप से विपन्न यह दम्पत्ति १९ साल से अनाथ बच्चों को कहीं से भी लाकर उनका पालन पोषण करते आ रहे हैं। जूनागढ़ महिला समिति द्वारा इन अनाथ बच्चों को कपड़े, ऊनी वस्त्र, खिलौने, फल, मिठाइयां, चाकलेट दैनिक जरूरतों का सामान वितरित किया गया। महिला समिति के सदस्यों ने चन्दा एकत्रित करके १०००/- रुपये की धन राशि इस अनाथआश्रम को प्रदान की। जूनागढ़ मारवाड़ी युवा मंच के द्वारा ५००/- रुपये की धन राशि इस अनाथाश्रम को प्रदान की। जूनागढ़ मारवाड़ी युवा मंच के द्वारा ५००/- रुपये की धनराशि प्रदान की गयी। इस अवसर पर अध्यक्ष श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल, सचिव श्रीमती कोमल अग्रवाल एवं कोषाध्यक्ष श्रीमती कांतादेवी बंसल ने समस्त व्यक्तियों को अपनी ओर से दीपावली की ढेरों बधाइयां दी।

पटना : नौवां वार्षिक मेला सम्पन्न

७ अक्टूबर। बिहार महिला उद्योग संघ पटना द्वारा ७ से ११ अक्टूबर तक डेढ़ लाख स्क्वायर फुट में लगभग ३०० स्टालों से युक्त एक मेले का आयोजन किया गया जिसका मूल उद्देश्य था लघु कुटीर एवं घरेलू उद्योगों के माध्यम से महिलाओं को स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना एवं उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता दिलाना।

मेले का उद्घाटन महामहिम राज्यपाल एम राजा जोयस ने अपनी पत्नी श्रीमती बिमला जोएस के साथ किया। मुख्य अतिथि थे बिहार के उद्योग कमिश्नर श्री अशोक कुमार। मानवीय राज्यपाल ने कहा कि इस प्रकार के मेलों से महिलाओं की क्षमता कार्यकुशला का सही आकलन किया जा सकता है वे अपने समय को अर्थ में परिणित कर राष्ट्र की आर्थिक उन्नति में काफी हद तक सहायक हो सकती है।

उद्योग कमिश्नर ने संघ के साथ बैठकर फुड टेकनोजोजी अपग्रेशन पैकेजिंग आदि महत्वपूर्ण विषयों पर सेमीनार का आश्वासन दिया ताकि फुड आइटम में वैल्यू एडीसन के माध्यम से मूल्यों में वृद्धि हो सके।

दिनांक ८ अक्टूबर को एक सेमिनार का आयोजन किया गया जिसका विषय था 'विकास में महिलाओं की भागीदारी- एक समीक्षा सेमिनार का उद्घाटन केन्द्रीय मानव संसाधन राज्यमंत्री श्रीमती कांति सिंह ने किया। मुख्य वक्ता थी- बिहार की पूर्व मंत्री सांसद श्रीमती गायत्री देवी। श्रीमती कांति सिंह ने कहा कि एन.जी.ओ. को जो अनुदान दिया जाता है उनकी मानीटरिंग की जाएगी। ताकि उस अनुदान का पूरा उपयोग हो एवं जनता लाभान्वित हो सके। उन्होंने बताया कि बिहारी महिलाओं के लाभ के लिए मेक्सीड का सेन्टर एवं राष्ट्रीय महिला कोष की आफिस पटना में होगी। श्रीमती गायत्री देवी ने मेलों का आयोजन बिहार के बाहर किए जाने की मांग की ताकि बिहार का सच्चा स्वरूप उजागर हो एवं इसकी कलाएं हैण्डी क्राप्ट की जानकारी अन्य राज्यों को मालूम हो जिससे विस्तृत बाजार मिले। ११ अक्टूबर को समापन समारोह का आयोजन किया गया। बिहार की विज्ञान एवं प्रावैधिक मंत्री श्री चन्द्रिका राय ने उद्यमियों को डायरेक्टरी का विमोचन किया। मेले में दो सौ उद्यमियों ने विभिन्न प्रकार के हैण्डी क्राफ्ट हाथ की भांति भांति की कढ़ाई में सुजनी, काथा, कप्लीक फलकारी सिंधी हजारों साल पुराना टिकुली, वर्क आइटम हाथ तथा मशीन के बने सूती उनी वस्त्र सलवार कुर्ता, बच्चों के ड्रेस, साड़ियां, आर्टिफिसियल ज्वेलरी, लेदर आइटम, मिथिला पेंटिंग, फैब्रिक पेंटिंग आदि। बम्बई से सोल फुड में आंवला के सोलह आइटम, घर के बने पापड़, अचार बड़ी, चिप्स मसाला, सत्तू बेसन, जाम, जेली, मधु, निमकी, ठेकुआ, मिक्चर आदि विभिन्न उत्पादों के साथ लिटी चोखा, घुघनी कचरी आदि ३५ फूड स्टाल भी थे। बच्चों के लिए भी विभिन्न खेलकूद जादूगरी के बीस स्टाल थे। मेले में पूर्व मध्य रेलवे के चौदह स्टाल थे जिसमें जरूरत के टेक्नीकल एवं नन टेक्नीकल आइटम प्रदर्शित थे। भारतीय स्टेट बैंक पंजाब नेशनल बैंक, कैनरा बैंक, सेंट्रल बैंक, बैंक आफ बड़ौदा, पटना वीमेन्स कालेज, जे.डी. वीमेन्स, अधीर कामिनी शिक्षण संस्थान आदि की उत्साहवर्द्धक भागीदारी थी।

लगभग तीस हजार लोगों ने मेले का भ्रमण किया।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

खेतराजपुर : चिकित्सा शिविर आयोजित

१९.९.२००४, मारवाड़ी युवा मंच, खेतराजपुर द्वारा एक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। उड़ीसा के वाणिज्य एवं परिवहन मंत्री श्री जयनारायण मिश्र, सांसद श्री सुरेन्द्र लाठ, मारवाड़ी सम्मेलन के सम्बलपुर अध्यक्ष श्री दिनेश अग्रवाल द्वारा उद्घाटि

यह शिविर ११ दिनों तक चला, इसमें प्राकृतिक चिकित्सा, योग, एक्यूप्रेशर, एक्युपंचर, गोमूत्र चिकित्सा हाड़ वैद्य पद्धति द्वार सैकड़ों लोगों की चिकित्सा की गई। युवा मंच के अनिल ओझा, गणेश पालीवाल, सुरेश अग्रवाल, पराग अग्रवाल, संतोष अग्रवाल, किशन भालोटिया, दिनेश शर्मा ने सक्रिय योगदान किया। इसके पश्चात एक स्थायी योग शिविर की स्थापना की गई।

मोतीपुर : मंच की सभी शाखाओं में लगेंगे कम्प्यूटर

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री जगदीश चन्द्र मिश्र ने मोतीपुर में आयोजित एक समारोह को सम्बोधित करते हुए घोषणा की कि प्रदेश के तमाम शाखाओं में कम्प्यूटर की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। प्रदेश में एक शैक्षणिक केन्द्र खोला जाएगा जहां लोगों को शिक्षा दी जाएगी। प्रदेश की १० शाकाओं के कार्यकर्त्ता छत्तीसगढ़ भेजे जाएंगे जो वहां की संस्कृति का अध्ययन करेंगे। इसी प्रकार वहां के भी १० शाखाओं के सदस्य बिहार आएंगे। इससे हमारी आत्मीयता बढ़ेगी। मंच के सदस्यों के सहयोग से समाज के निर्धन लोगों को सेवा पहुंचाने में हमलोग सफल रहे हैं। हिन्दुस्तान भर के ४३५ शाखाओं में मोतीपुर शाखा का नाम सबसे ऊपर है। शाखा कार्यकर्ताओं ने प्रान्तीय अध्यक्ष श्री मिश्रा, प्रमण्डलीय उपाध्यक्ष श्री अरूण पोद्दार एवं महामंत्री श्री अरूण कुमार बाजोरिया का नागरिक अभिनन्दन किया। मोतीपुर शाखा अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रान्तीय सहायक सचिव चौधरी संजय अग्रवाल, प्रोफेसर विजय नाथानी, प्रेमचन्द नाथानी आदि ने भी समारोह को सम्बोधित किया।

खेतराजपुर : भाग्यशाली दान-पत्र योजना एवं सम्मान समारोह आयोजित

१०.११.०४, युवामंच की खेतराजपुर शाखा द्वारा धनतेरस के अवसर पर एक भाग्यशाली दानपत्र योजना एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में विशिष्ट समाज सेवी एवं पार्षद श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल को सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि थे सांसद श्री सुरेन्द्र लाठ एवं सम्मानित अतिथि थे सम्मेलन शाखाध्यक्ष श्री दिनेश अग्रवाल। युवा मंच के अध्यक्ष श्री अनिल ओझा एवं सचिव श्री संतोष अग्रवाल सहित अनेकों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

बधाई / सम्मान

कोलकाता : श्री गीतेश शर्मा सम्मानित

पत्रकार श्री गीतेश शर्मा जो कि विगत तीन दशकों से भारत-वियतनाम के बीच मैत्री संबंधों के प्रसार के क्षेत्र में सक्रिय हैं को वियतनाम सरकार के विदेश विभाग के तहत चुनियन आफ फ्रेंडशीप आर्गनाइजेंशस, हनाई, की ओर से शान्ति व मैत्री पदक से सम्मानित किया गया है। हाल ही में उनकी पुस्तक 'इण्डो- वियतनाम रिलेशंस फर्स्ट टु ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी' प्रकाशित हुई है। हो-ची-मिन्ह सिटी की वियतनाम-भारत मैत्री समिति ने भी उनके मैत्री प्रयासों के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया है।

श्री गीतेश शर्मा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति के सदस्य भी हैं। सम्मेलन परिवार की ओर से श्री शर्मा को हार्दिक बधाई।

कोलकाता : इंदिरा विष्णुकांत शास्त्री मातृशक्ति सम्मान २००४ पद्मश्री पदमा सचदेव को

२८ नवम्बर। कोलकाता की विशिष्ट साहित्यिक सांस्कृति सामाजिक संस्था श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रवर्तित 'इंदिरा विष्णुकांत शास्त्री मातृशक्ति सम्मान' का तृतीय अलंकरण डोगरी एवं हिन्दी की सुप्रतिष्ठित साहित्यकार पद्मश्री पद्मा सचदेव (दिल्ली) को एक विशेष समारोह में प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें मान-पत्र शॉल श्रीफल तता २१ हजार रुपये की राशि प्रदान की गई।

१९४० ई. में जम्मू में जन्मी श्रीमती पद्मा सचदेव ने बचपन में ही अपने पिता प. जयदेव शर्मा की प्रेरणा से संस्कृत के श्लोकों का कुशलतापूर्वक पाठ करना सीखा। डोगरी एवं हिन्दी की अपनी विपुल रचनाओं के माध्यम से उन्होंने भारतीय नारी की तेजस्विता एवं सामर्थ्य को प्रमाणित किया है। साहित्य की लगभग प्रत्येक विधा से साधिकार लिखने वाली बहुभाषाविद पद्माजी ने अंग्रेजी, मराठी, उर्दू उड़िया एवं कोरियल साहित्य की अनेक उत्कृष्ट रचनाओं का डोगरी एवं हिन्दी में अनुवाद किया है। २००० ई. में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री उपाधि से अलंकृत श्रीमती पद्मा सचदेव को साहित्य अकादमी पुरस्कृत हिन्दी अकादमी पुरस्कार तथा हिन्दी रत्न आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

इस अवसर पर पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित डा. ऊषा द्विवेदी की पुस्तक 'निराला का कथा साहित्य : वस्तु एवं शिल्प' का लोकार्पण किया गया। स्वागत भाषण पुस्तकालय के अध्यक्ष डा. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने दिया एवं कार्यक्रम का संचालन किया। पुस्तकालय की साहित्य मंत्री डा. उषा द्विवेदी ने। धन्यवाद ज्ञापन श्री जुगल किशोर जैथलिया ने किया। समारोह में प्रख्यात कथा लेखिका श्रीमती ममता कालिया के साथ-साथ उपस्थित थे सर्वश्री महावीर बजाज (मंत्री), अरुण प्रकाश मल्लावत, अरुण सोनी, नन्द कुमार लड्ढा आदि।

कोलकाता : श्री नरेन्द्र तुलस्यान 'टाप आफ द टेबल' सम्मान से सम्मानित

१ नवम्बर २००४। कोलकाता महानगर के प्रतिष्ठित तुलस्यान परिवार द्वारा संचालित तुलस्यान इन्स्योरेंस एजेंसी के निदेशक श्री नरेन्द्र तुलस्यान को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित 'टॉप आफ द टेबल' सम्मान से नवाजा गया। इस अवसर पर श्री तुलस्यान ने कहा कि हर व्यक्ति के लिए बीमा की अनिवार्यता है। भारत जैसे गरीब व विकासशील देश में इसे एक संस्कार के रूप में अपनाये जाने की जरूरत है। बीमा ही एक ऐसा साधन है जो सुखी, समृद्ध व सुरक्षित भविष्य की गारण्टी प्रदान कर सकता है। कोटक महिन्द्रा बैंक के रिस्क मैनेजमेंट के समूह प्रमुख श्री शेखर साठे व विक्रय वृद्धि के उपाध्यक्ष श्री अरूण पाटिल ने श्री नरेन्द्र तुलस्यान की सफलता को बीमा क्षेत्र की उल्लेखनीय प्रगति बताया। इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं तुलस्यान इन्स्योरेंस एजेंनी के अध्यक्ष व नरेन्द्र तुलस्यान के पिता श्री मोहनलाल तुलस्यान ने कहा कि जीवन स्तर में गुणात्मक परिवर्तन के मद्देनजर बीमा उद्योग में भी नई अवधारणाओं को लाने की जरूरत है। बीमा की सुविधा साठोत्तर उम्र तक जीने वाले पराश्रित न होने पाएं। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से श्री नरेन्द्र तुलस्यान को इस सम्मान पर हार्दिक बधाई।

कोलकाता : आचार्य विष्णुकांत शास्त्री का सम्मान

१२ दिसम्बर। आचार्य विष्णुकांत शास्त्री को ७५ वर्ष पूर्ति पर श्री बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय द्वारा आचार्य विष्णुकांत शास्त्री अमृत महोत्सव अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया जसमें प्रधान अतिथि के रूप में उपस्थित थे कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी। विशिष्ट अतिथि थे जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. कल्याणमल लोढ़ा। समारोह की अध्यक्षता डॉ. प्रताप चन्द्र चन्दर ने की एवं कार्यक्रम का संचालन किया डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने। इस अवसर पर श्री त्रिपाठी द्वारा संपादित आचार्य विष्णुकांत शास्त्री अमृत महोत्सव अभिनन्दन ग्रंथ का लोकार्पण राज्यपाल श्री टी.एन. चतुर्वेदी द्वारा किया गया। समारोह में न्यायमूर्ति श्री पुलक बसु, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री तथागत राय, पूर्व अध्यक्ष श्री असीम घोष, शान्तिलाल जैन, श्रीमती सुनीता झंवर, अभिमन्यु भुवालका, परमानन्द चूड़ीवाल, ममता कालिया, जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. प्रतिभा अग्रवाल, डॉ. श्रीनिवास शर्मा, निर्भर मलिक आदि उपस्थित थे।

जूनागढ़ : ९२ प्रतिशत अंक के साथ प्रथम

जूनागढ़ (कालाहाण्डी) निवासी लाल साहेब अग्रवाल एवं रुक्मिणी अग्रवाल की सुपुत्री कुमारी लक्ष्मी अग्रवाल ने हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा में ९२ प्रतिशत अंक के साथ समग्र जिल्ला में प्रथम स्थान प्राप्त की है। कुमारी लक्ष्मी अग्रवाल को इस सफलता पर बधाई एवं उज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

श्रद्धांजलि / शोक सभा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के आजीवन सदस्य श्रीयुत् सूर्यकान्त पोद्दार के पिता श्री परमेश्वर प्रसाद फोगला का दिनांक ६.११.२००४ को गोरखपुर में परलोकवास हो गया। आप गीता प्रेस के आदि सम्पादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार के जामाता एवं हनुमान प्रसाद पोद्दार स्मारक समिति के महामंत्री थे। स्वर्गीय आत्मा की शान्ति व सद्गति हेतु व उनके शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करने हेतु सम्मेलन ईश्वर से प्रार्थना करता है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य, कर्मठ कार्यकर्ता, टैक्स कन्सल्टैंट श्री ओम प्रकाश अग्रवाल की माता श्री श्रीमती तारा देवी अग्रवाल का बैकुण्ठवास दिनांक १९.१०.२००४ को कटिहार में ७३ वर्ष की अवस्था में हो गया। स्व. तारा देवी धार्मिक प्रवृत्ति की मृदुभाषिरी महिला थी। वह अपने पीछे हरा-भरा परिवार छोड़ गई हैं। मृतात्मा की शान्ति एवं सद्गति हेतु तथा अनेक शोक-संतप्त परिवार को इस दुःख को झेलने की शक्ति प्रदान करने हेतु सम्मेलन ईश्वर से प्रार्थना करता है।

Precision player

Patton is a multi-product company, a Government of India recognised Export House, Star Exporter, a recipient of National Award for Excellence in Exports from The President and The Prime Minister of India.

The passion for quality. That's what wins our products the approval from Underwriters Laboratories Inc.(UL), USA, Canadian Standards Association(CSA) ISO 9001 from RWTUV, Germany and ISO 14001 form KMAQA, Korea.

The will to win sets Patton apart as an organisation of unusual strengths-excelling in Industrial Fasteners, Pipe Fittings, Builders' Hardware, Electrical Stampings, Pressed Steel and Plastic Water Storage Tanks, Material Handling Containers, Pallets, Drums, Insulated Boxes, Jerry Cans, Lamp Shades and Rigid PVC Pipes.

Patton. We deliver excellence... the way the world demands it.

PATTON

Endeavour Enterprise Excellence

3C, Camac Street Calcutta 700 016
Ph : +91 33 2229 4369/4148
Fax : +91 33 2217 2189, 2226 5448
Email : patton@pattonindia.com
Visit us at : www.pattonindia.com

India's Only ISO 9002 & 14001 Certified Manufacturer & Exporter of Rotomoulded, Blowmoulded & Extruded Products

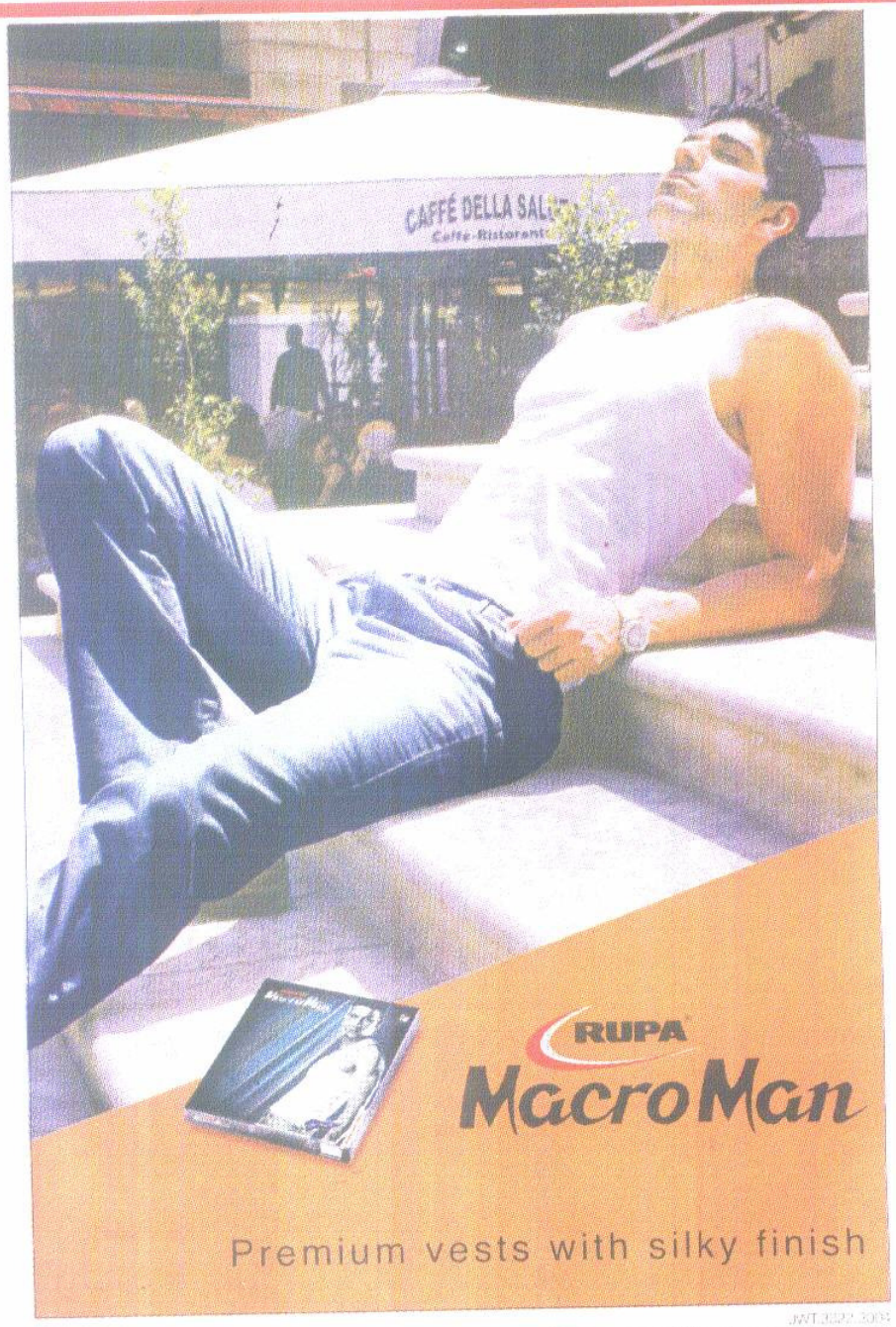

REGISTERED Postal Registration No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2004-06 SAMAJ VIKAS - DECEMBER 2004 RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,